

NAAC

National Assessment
and Accreditation Council



Loknayak Bapuji Aney Mahila Mahavidyalaya, Yavatmal

NAAC Accredited with Grade B

Academic Year: 2021-22

Criterion 3

Research, Innovations and
Extension

3.2.3



Handwritten signature

cha 3.2.2

2

© डॉ.संतोषकुमार गाजले

❖ **Publisher :**

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ **Printed by :**

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126
www.vidyawarta.com

❖ **Page design & Cover :**
Kulkarni, Parli-Vajinath

❖ **Edition: Jan. 2021**

ISBN 978-93-85882-65-4

❖ **Price : 200/-**



All Rights Reserved, No part of this publication may be reproduced, or transmitted, in any form or by any means, electronic mechanical, recording, scanning or otherwise, without the prior written permission of the copyright owner. Responsibility for the facts stated, opinions expressed. Conclusions reached and plagiarism, if any, in this volume is entirely that of the Author. The Publisher bears no responsibility for them. What so ever. Disputes, if any shall be decided by the court at Beed (Maharashtra, India)

Scanned by TenScanner



काशने

INDEX

- 01) लोकनायक बापूजी अणे यांचे सामाजिक कार्यातील योगदानाचे पुनरावलोकन
डॉ. दुर्गा कुटे, यवतमाळ ||08
- 02) The Invincible Lion Of Revolution - Rash Bihari Bose
Assistant Professor Santosh Bhaskarao Gore, Yavatmal ||17
- 03) Newton of Library Science: Dr.S.R.Ranganathan
Dr. Rajshri Vivek Dharmadhikari, Yavatmal ||39
- 04) Gandhism in Raja Rao's 'Kanthapura'
Prof. Prashant S. Jawade, Kalamb ||45
- 05) Actions Speak louder than words -Sudha Murthy
Dr.Prachi Sharad Patharkar, Washim ||51
- 06) Contribution of Rabindranath Tagore in Literature
Dr.Dinesh A. Gundawar, Dist- Yavatmal (M.S.) ||59
- 07) Developing character profile of appealing hockey player
Dhanraj Pillay
DR. SUHAS D. YADAV, Dist. Aurangabad (M.S.) ||67
- 08) Non-Violence: Gandhi's Way of Life Revealed through his Writing
G.B.Mane, Babhulgaon ||80
- 09) Stalwarts of Modern India A. D. Shroff- (Architect of Free enterprise and ...
Dr Shruti R Panday ||86
- 10) Sri Aurobindo's Nationalism through his Poetic Works
Prof. S. P. Mohod, Yavatmal ||96
- 11) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि अस्पृश्य हक्क लढा
प्रा.डॉ.सुनिल रजपूत, जि.उस्मानाबाद ||101
- 12) व्यक्तित्व एवं कृतित्व — उषा प्रियंवदा
डॉ.महेन्द्रसिंह अजितसिंह पवार, जि. अमरावती ||107



काशी

02

The Invincible Lion Of Revolution - Rash Bihari Bose

Assistant Professor Santosh Bhaskarao Gore
English,
Loknayak Babuji Aney Mahila
Mahavidyalaya, Yavatmal
affiliated to Sant Gadgebaba Amravati
University, Amravati



Aamar Shonar Bangla.....! :

May 13, 1915! Hooghly - Calcutta port! It was a sunny morning. The Japanese ship 'Sanuki Maru' was about to sail from Calcutta to Singapore via the port dock. The time of departure of the ship was given by the big siren. At that moment, a man on the deck of the ship was looking at his motherland and praising her. 'Aamar Shonar Bangla ... Aamar Shonar Bangla ...'. The person was wheatish by complexion, was five and a half feet tall and was healthy. Intelligence and



Handwritten signature in Marathi script.



**Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya
Yavatmal (MS)**

**World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad**

This is to certify that,

Dr. / Mr. / Mrs. / Ms. _____

Santosh Bhaskarao Gore

has published his / her Research paper / Article on the topic entitled :

- Atma Nirbhar Bharat: Opportunities And Challenges

in the International Peer Reviewed / Referred Journal, Scholars' Vision for the

World Conference On Startup In India And Education With Placement In Abroad

-Chief Editor-
Dr. Uday V Navalekar
Principal
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

-Executive Editor-
Dr. Sanjay S. Tamgadge
Dept. of English
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

- Co Executive Editor-
Dr. Gajanan Rahate
Dept. of Economics
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

3.2.2

Certificates

**Scholars'
Vision**

**Multi - Disciplinary Bi-annual
International Peer reviewed / Referred Journal**



Box
Ch 3.2.2

प्रा. ३ तातेड

The Stalwarts



लोकनायक बापूजी अने महिला महाविद्यालय

यवतमाल ४४५००१ (महाराष्ट्र)

संपादक मंडळ
प्राचार्य डॉ. दुर्गेश कुंटे
प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड
सह.प्रा.डॉ. संतोषकुमार गाजले
प्रा. सौरभ वगारे



काशिके

- लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 6
- 12) व्यक्तित्व एवं कृतित्व - उषा प्रियंवदा
डॉ. महेंद्रसिंह अजितसिंह पवार, जि. अमरावती ||107
- 13) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदियमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळ प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||114
- 14) आधुनिक भारताचे निर्माते- राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज डॉ. रामलाल चौधरी, भंडारा (महा.) ||122
- 15) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक "भारतेन्दु हरिश्चंद्र" का अनुवाद के क्षेत्र में ...डॉ सुनीता बुदले, अमरावती ||132
- 16) सोने गुरुजींच्या वाङ्मयातील संस्कारमूल्ये डॉ. ममता व. दयणे, यवतमाल ||142
- 17) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदियमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळ प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||149
- 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का सामाजिक आन्दोलन प्रा. डॉ. बंडू एस. मानवटकर, जि. अकोला ||156
- 19) गांधीवादी विचारसरणी : एक जागतिक वारसा प्रा. डॉ. आनंदराव शिंदे, जि. नांदेड ||162
- 20) आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. डी.डी.जोषळे, जि. यवतमाल ||181
- 21) आधुनिक युग मे गुरुकुलपरंपरा के प्रतिपादक पद्मविभूषण पंडित "हरिप्रसाद चौरसिया"शुभम नरेश उदावत ||185
- 22) पंचकन्या

- लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 7
- प्रा.डॉ.सौ. वीरा पवन मांडवकर, जि.यवतमाल ||191
- 23) २० व्या शतकातील प्रतिभावान संस्कृत कवी प्रज्ञाभारती श्री.भा. वर्णेकर..... प्रा. दर्शना सायम, यवतमाल ||211
- 24) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या भारतीय संसदीय जोकशाहीच्या विचाराचे ...प्रा.स्वप्निल म. रामटेके, यवतमाल ||217
- 25) आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ.बी.आर.आंबेडकर प्रा.शैलेन्द्र देवीदास तेलंग, यवतमाल ||223
- 26) शिवप्रसाद सिंह और उनकी कहानियों में मुखरित मानवीय मूल्य प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री, यवतमाल ||235
- 27) आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. सविता व्ही. रूक्मे, वाशिम ||244
- 28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का शैक्षिक दर्शन प्रोफेसर डॉ.लता वाघेला, यवतमाल ||249
- 29) हिंदी साहित्य जगत के शालका पुरुष अज्ञेय प्रा. डॉ. संतोषकुमार गुंडप्पा गाजले, यवतमाल (महाराष्ट्र) ||261
- 30) डॉ० रामकृमर वर्मा का हिंदी साहित्य में योगदान: एक कवि के रूप में...प्रा. डॉ. नलिनी शशिकांत पशीने, गोंदिया ||271
- 31) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का अर्थशास्त्रीय लेखन प्रा.डॉ. कविता राजेंद्र तातेड, यवतमाल ||283
- 32) Depiction of the Versatile Personality of LokmanyaTilak Dnyaneshwar Gatkar, Yavatmal ||293



Handwritten signature and date: 1/1/20

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 282
पृ- ६८५
(४) आचार्य रामचंद्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास -

(५) प्रो० अवधेश्वर प्र. 'अरूण', पृ- ९२ 'गीतकार डॉ० रामकुमार वर्मा', डॉ० रामकुमार वर्मा अभिनंदन ग्रंथ

(६) डॉ० नीना अग्रवाल कवि तथा नाटककार - डॉ० रामकुमार वर्मा - वरूण प्रकाशन - पृ - ७०

(७) डॉ० रामकुमार वर्मा - चित्ररेखा- परिचय

(८) डॉ० रामकुमार वर्मा - विचार- दर्शन - पृ-११२

(९) डॉ० शकुंतला डुबे - काव्यरूपों के मूल स्रोत और उनका विकास - पृ-१४३

(१०) डॉ० शर्मा विश्वबन्धु, आधुनिक हिंदी महाकाव्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, प्रथम संस्करण - १९९३, पृ-१७ -१८

(११) डॉ० नगेन्द्र के सर्वश्रेष्ठ निबंध - संपादक - भारत भूषण अग्रवाल - पृ- १२५

(१२) डॉ० रामकुमार वर्मा - एकलव्य - आमुख - पृ - १४

(१३) डॉ० रामकुमार वर्मा - उत्तरायण - भूमिका- पृ - ७-८

□□□

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 283

31

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का अर्थशास्त्रीय लेखन

प्रा.डॉ. कविता राजेंद्र तातेड

इतिहास विभागाध्यक्षा,

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल

प्रस्तावना -

डॉ. आंबेडकर ने कहा है कि, 'जिस समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक भिन्नता होने के साथ आर्थिक विषमता दिखाई देती है, वहाँ प्रजातंत्रीय विचारोंका विकास होने में कठिनाई आ सकती है। अगर हमें प्रजातंत्रीय तरीकेसे आर्थिक रचना करनी हो तो सामाजिक समानता के साथ उपयुक्त नैतिक मूल्यों का जतन करना चाहिए।' भारत में सामाजिक हितसंबंधों की भिन्नता के साथ, सामाजिक समूहों में पारस्परिक सहभागिता का अभाव होने से आर्थिक विकास की प्रक्रिया में असंतुलन स्थापित होता हुआ दिखाई देता था। सन १९४२ से १९४६ तक व्हाईसराय के कार्यकारी मंडल में मजदूर मंत्री केरूप में कार्य करते हुए डॉ. आंबेडकरने मजदुरों के हितों के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए, बेगार और भूमि दासता, कामगार वेतन संबंधी कानून बनाकर यह सिद्ध किया की दुर्बल घटकों के कल्याण हेतु राजकीय, सामाजिक, आर्थिक आधार की आवश्यकता है। डॉ. आंबेडकर सामाजिक समस्याओं को आर्थिक दृष्टि से नापते थे। उनको पता था कि विषमता का मूल अर्थ (मुद्रा) से जुड़ा हुआ है। जबतक आर्थिक समस्याओं का निवारण नहीं होता तबतक कोई भी वर्ग प्रगती नहीं कर सकता। अतः उन्हेने मिश्र



का.स.सं.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 284
 अर्थव्यवस्था का समर्थन कर राज्यघटना के माध्यम से सामाजिक एवं
 आर्थिक समानता पर बल दिया। भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास और
 समस्याओं का विश्लेषण करते हुए डॉ. आंबेडकर ने अर्थशास्त्रीय
 लेखन में समानता और विकास पर बल है।

1) 'अडमिनिस्ट्रेशन अँड फायनांस ऑफ दि इस्ट इंडिया कंपनी':—
 व्यापारिक उद्देश से भारत में स्थापित की गई इस्ट इंडिया
 कंपनी ने पूरे देश में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने में सफलता प्राप्त
 की। कंपनी प्रशासन की द्विस्तरीय रचना में संचालक मंडल तथा उसपर
 नियंत्रण रखने हेतु नियामक मंडल की नियुक्ति की गई थी। कंपनी के
 पास भारतीय व्यापार का एकाधिकार होने से ब्रिटीश सत्ता भी इसका
 लाभ प्राप्त करना चाहती थी। जिसका सीधा प्रभाव भारतीयजनता के
 आर्थिक शोषण के रूपमें दिखाई दिया। इस. स. १८१४ में कंपनी
 सरकार द्वार वित्त तथा प्रशासन का विभाजन तथा १८३४ में इस्ट
 इंडिया कंपनी के व्यापार का एकाधिकार नष्ट कर इंग्लैंड की जनता को
 भारत से व्यापार करने की स्वतंत्रता दी गई। भारत की आर्थिक समृद्धता
 का लाभ प्रत्यक्ष रूप से लेने के लिए १८५८ में इस्ट इंडिया कंपनी की
 सत्ता को बरखास्त कर ब्रिटीश पार्लियामेंट ने भारत पर प्रत्यक्ष वर्चस्व
 स्थापित करने की दिशा में कदम बढ़ाये।

प) राजस्व व्यवस्था— इ.स. १७९२ से १८५७ तक ब्रिटीश सत्ता ने
 इस्ट इंडिया कंपनी के माध्यमसे भारतीय जनता का विशाल स्तर पर
 आर्थिक शोषण किया। इस अवधि में सरकारने ५५ लाख पाउण्ड
 राजस्व में वृद्धी कर ३१७ लाख पाउण्ड राजस्व किस प्रकार प्राप्त
 किया, इसका संख्यात्मक विवरण डॉ. आंबेडकरने अपने प्रबंध में
 प्रस्तुत कर इस्ट इंडिया कंपनीद्वारा पांच गुना बढ़ाये गये महसुल
 व्यवस्था से पीडित कृषकों की व्यथा को दर्शाया है। विभिन्न करों की
 वसुली में सबसे अधिक वसुली जमीन महसुल सेकी जाती थी। यह
 निवेदन भारतीय और विदेशी अभ्यासकों के अहवाल के आधार पर डॉ.
 आंबेडकरने प्रस्तुत किया है। कृषी का व्यापारीकरण ब्रिटीश सत्ता के
 लिए लाभदायी रहा किंतु सामान्य कृषक निर्धन होता गया।

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 285
 पप) कर्ज व्यवस्था — इस्ट इंडिया कंपनीद्वारा महसुल (राजस्व) उत्पन्न
 के साथ ही अतिरिक्त आय के स्रोत के रूप में दो प्रकार के कर्ज लिये
 गये। जिनमे भारत से लिया गया कर्ज तथा इंग्लैंड से लिया गया कर्ज
 का समावेश था। सन १७९२ में भारतीय कर्ज ७० लाख पाउण्ड के
 आसपास था जो १८५८ में बढ़कर ६०७ लाख पाउण्ड हो गया। परंतु
 उसकी तुलना में विदेशी कर्ज का प्रमाण ६६ लाख पाउण्ड तक ही
 सीमित रखा गया। इस कर्ज के बीच पाये जाने वाले अंतर का अर्थ
 ब्रिटीश पार्लियामेंट अपनी संपत्ति को सुरक्षित रखने के साथ इस्ट इंडिया
 कंपनी के भारत के वर्चस्व को कम करना चाहती थी। इसीलिए कंपनी
 को ब्रिटेन से कर्ज लेने के लिये कठोर नियम बनाये गये थे। इसके
 विपरीत भारत की संपत्ती कर्ज के माध्यम से ब्रिटेन जाती रही फलतः
 भारतीयउद्योगों का विकास नहीं हो सका और दरिद्रता की सीमा बढ़ती
 गई।

पपप) जनकल्याण की उपेक्षा — इस्ट इंडिया कंपनी द्वारा वसूल किये
 जानेवाले राजस्व का विनियोग भारतीय जनता के कल्याणकारी कार्योंपर
 इतनी अल्प मात्रा में किया जाता था कि जिससे जनता उसको लाभ से
 कोसो दूर रहती थी। जॉन ब्राइट के अनुसार ब्रिटेन के मन्वेस्टर नामक
 शहर में जल व्यवस्था के लिए १८३४ से १८४८ के बीच जितना खर्च
 किया गया उससे भी कम विनियोग उसी समय में भारत जैसे विशाल
 महाद्विप में सभ्रस्तर के सार्वजनिक बांधकाम क्षेत्र के लिये हुआ था।
 उससे प्रतीत होता है कि भारतीय जनता से अत्याधिक मात्रा में कर
 वसुल करने के पश्चात भी उन्हे प्राथमिक जनकल्याणकारी सुविधाओं
 से वंचित रखा जाता था। कंपनी शासन सेनापर विशालमात्रा में खर्च
 करती थी पर भारतीय और युरोपियन सैनिक के वेतन में चार गुना से
 भी अधिक का अन्तर होता था। यही स्थिती प्रशाकीयसेवाओं में भी थी
 जिससे आर्थिक विषमता बढ़ती गई।

पअ) आर्थिक समानता की उपेक्षा — १८५८ में इस्ट इंडिया कंपनी की
 बरखास्ती के समय कंपनीपर रहनेवाले कर्ज के संबंध में प्रश्न उपस्थित
 हुआ। इसका भार वहन करने के लिये ब्रिटीश पार्लियामेंट तयार नहीं थी।



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

अतः कंपनी सरकार का ६९३ लाख पाउण्ड की बकाया रकूम भारतीय जनता से वसुलने का निश्चय किया गया इसकी पूर्ती के लिए लगान में ५४ प्रतिशत, नमक पर ११ प्रतिशत कर को बढ़ाया गया। यह शोषण की नीति ब्रिटीश सरकार की वास्तविक आर्थिक नीति का कड़वा सच प्रस्तुत करती है। ब्रिटीश इस्ट इंडिया कंपनी तथा इंग्लण्ड की संसद के माध्यम से किए गये शोषण से मुक्तीपाने के लिए डॉ. आंबेडकर ने राजकीय समानता, आर्थिक समानता पर बल दिया डॉ. आंबेडकर कहते हैं कि, 'भारत का ब्रिटेन किया गया आर्थिक योगदान जितना रहस्यमय है उतना ही ब्रिटेन द्वारा भारत के विकास हेतु दिया गया' हुआ अत्यल्प आर्थिक योगदान भी विस्मयकारी है। 'ब्रिटीश सरकार द्वारा भारत में आधुनिकीकरण के लिये किये गये कार्योंको आर्थिक सुधारों अथवा विकास की श्रेणी में नहीं रखे जा सकते हैं। 'अमानवीय स्तर पर दी गई शांतता यह आर्थिक दासता की तूलना में अधिक सुखदायी हो सकती है अथवा नहीं यह विचारीय प्रश्न है।' इस विधान के साथ डॉ. आंबेडकर विषय का समापन करते हैं।

दि इन्वेल्युशन ऑफ प्रोव्बिन्सअल फायनान्स इन ब्रिटीश इंडिया :-

इ.स. १८३३ से १९२१ के बीच ब्रिटीश सत्ता के वित्तीय नीती के संदर्भ में केंद्र सरकार तथा घटक राज्यों के बीच के संबंधों के विश्लेषण पर आधारित शोष प्रबंध को 'दि इन्वेल्युशन ऑफ प्रोव्बिन्सअल फायनान्स इन ब्रिटीश इंडिया' नामक ग्रंथ के रूपमें प्रकाशित किया गया जो तत्कालीन समाज की आर्थिक अराजकता को अभिव्यक्त करता है। **केंद्र तथा घटक राज्य के संबंध** - ब्रिटीश शासन काल में राज्य उत्पन्न का प्रमुख साधन भूमीकर होता था। कृषियोग्य भूमी पर सरकार का अधिकार मानकर उस जमीन के मालिक केवल भूमिधारक है इस भूमिका के आधारपर भूमीकर का प्रमाण अत्याधिक रखा गया। परंतु वित्त उत्पन्न का अधिकांश भाग कर के रूपमें सरकार के पास जमा होने से कृषि उद्योग विकसित नहीं हो सका। इसी प्रकार व्यापारिक क्षेत्र में सीमाशुल्क के असंतुलन के चलते औद्योगिक उत्पादन में भी देशी उद्योगिकों को बढ़ावा नहीं मिल सका। नमक, जैसी जीवनावश्यक वस्तुपर

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 287
भी कर लगाये जाने से सामान्य जनता का अत्याधिक शोषण ब्रिटीशकाल में दिखाई देता है। जिसका संदर्भ दादाभाई नौरोजी के गवाही में मिलता है।

इस प्रबंध में केंद्र शासन तथा राज्य सरकार के बीच उत्पन्न आर्थिक अधिकारों के असंतुलन की स्थिती को दर्शाते हुए बताया गया है कि राज्यों को अपेक्षित खर्च का विवरण देना होता था पर इस खर्च को वहन करने का दायित्व कुंठ सरकार की ओर था। राज्यके खर्च पर नियंत्रण रखनेवाली यंत्रणा के अभाव में केंद्र सरकार का खर्च बढ़ने लगा तब भारत में सर्वप्रथम १८७१ में केंद्र सरकार तथा घटक राज्यों के स्वतंत्र अर्थसंकल्प बनाने की प्रक्रिया आरंभ की गई। परंतु इस नई पद्धती में राज्योंने उत्पन्न खर्च के बीच संतुलन बनाने के लिए नये कर लागू कर दिये जिससे कर निर्धारण में विषमता उत्पन्न हुई। केंद्र सरकार द्वारा धनिक वर्ग को संतुष्ट करने के लिए उनके उत्पन्न को करमुक्त कर दिया जिसके कारण करो का बोझ सामान्य जनता पर पडा। इस संदर्भ में डॉ. आंबेडकर कहते हैं - 'सामाजिक न्याय की दृष्टिसे धनिक वर्ग के उत्पन्नपर कर निर्धारण की प्रक्रिया जारी रखना ही घटक राज्य के लिए हितकारी सिद्ध हो सकता था। परंतु केंद्र शासन के वित्तविभाग की ओर से सामान्य जनता के लिये सामाजिक न्याय का बरताव नहीं किया जाता था।'

राजस्व नीति- १८८७ से १८९२ के बीच ब्रिटीश शासन द्वारा भारत में 'बजेट ऑफ असाईन रेव्युनिज' की पद्धती अपनाई गई। इसीके साथ राज्यों के विकास के नामपर 'संतुलनात्मक असाईमेंट' नीति का निर्धारण किया गया। अब राज्यों को राजस्व उत्पन्न के दो स्तर निश्चित किये गये प्रत्यक्ष तथा सर्वसामान्य। यदि प्रत्यक्ष राजस्व उत्पन्न का प्रमाण सर्वसामान्य राजस्व से अधिक होता तो केंद्र सरकार की ओर से दी जानेवाली असाईनमेंट की रकूम कम की जाती थी। यदि 'प्रत्यक्ष' राजस्व उत्पन्न का प्रमाण कम होता तो असाईनमेंट की रकूम बढ़ा दी जाती थी। तथा प्रत्यक्ष राजस्व का प्रमाण अधिक होने पर उसका आधा हिस्सा राज्य को मिलने की सुविधा दी गई। इस प्रकार केंद्र तथा राज्य सरकार दोनों के



Handwritten signature or mark in Marathi script.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 288
द्वारा संकलित किये गये राजस्व का निर्धारित हिस्सा एक दुसरे को देने की पद्धती विकसित की गई जिसे बजट ऑफ शेअर्ड रेवेन्यू कहा गया। पर इसका प्रत्यक्ष लाभ जनता को नहीं मिल सका।

१९१९ के सुधार कानून के अनुसार जिम्मेदार शासन पद्धती विकसित करने के लिये वित्तीय संबंधों की पुनर्रचना की गई। लेकिन किसी भी पद्धती में भारतीय कृषक अथवा सामान्य जनताके हितों को ध्यान में रखकर योजना का क्रियान्वयन नहीं किया गया। डॉ. आंबेडकर के प्रबंध में ब्रिटीश शासन की राजस्व नीति का विश्लेषण के संदर्भ में प्रसिद्ध अर्थतज्ञ प्रो. सोलिगमन ने प्रस्तावना लिखते हुए कहा मेरी जानकारी के अनुसार भारतीय केंद्रीय तथा प्रांतीय सरकार में आर्थिक संबंधों की इतनी विस्तृत एवं समृद्ध मीमांसा अबतक किसीने नहीं की है।

दि. प्राल्लेम ऑफ रूपी : इट्स ओरिजिन अँड सोल्यूशंस :

डॉक्टर ऑफ सायसन्स की उपाधि हेतु लिखा गया यह ग्रंथ १९२३ तथा १९४७ में पुनर्प्रकाशित किया गया इस प्रबंध में भारतीय रूपये का विकास तथा परिवर्तन के ऐतिहासिक विवेचन के साथ भारत के लिए आदर्श चलन पद्धती के संदर्भ में विस्तृत विश्लेषणात्मक संदर्भ प्रस्तुत करते हुए भारतीय मुद्रा एवं ब्रिटीश मुद्रा का तुलनात्मक अध्ययन किया।

b) प्रारंभिक काल में भारत में मूल्यवान घातू परिमाण चलन पद्धती प्रचलित थी। सन १८८३ में ब्रिटीश सत्ता के सर्वव्यापी प्रसार के पश्चात देशभर में एकसमान चांदी के रूपये को चलनपद्धती के रूप में लापू किया गया। इसके अनुसार १८० ग्राम वजन का चांदी का रूपया प्रचलन में लाया गया। पर यह व्यवस्था अपर्याप्त साबित होने पर मांग और पूर्ति के बीच का चलन अन्तर कम करने के लिए १८८४ में चांदी के पर्याय के रूपमें कागजी चलन का प्रयोग आरंभ किया गया। १८७३ तक भारतीय रूपया तथा ब्रिटीश पाउण्ड के बीच का विनिमय दर संतुलित था, परंतु इसके पश्चात इसमें स्थिरता लाना कठिन होने लगा। भारत में सोना तथा चांदी के विनिमय दर में स्थिरता

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 289
नहीं आने से भारत की वित्तीय स्थिती को किस प्रकार नुकसान पहुँचा इसका विस्तृत विवेचन डॉ. आंबेडकर ने इस ग्रंथ में किया है।

इ) चलन व्यवस्था के संदर्भ में अनिश्चितता अथवा गतिरोध को दूर करने के लिए आदर्श व्यवस्था के निर्माण हेतु दो पर्याय स्वीकृत किए गए। एक सुवर्ण परिमाण का प्रचलन तो दुसरा सुवर्ण विनिमय परिमाण का प्रचलन जिसमें कागज की मुद्रा का उपयोग किया जाता है और इसके बदले में सरकार द्वारा निर्धारित दरोंसे सोना देने की गारण्टी मिलती है। इन दोनोंही चलन व्यवस्था के संदर्भ में डॉ. आंबेडकर तथा अर्थतज्ञ प्रोफेसर कीन्स के बीच चर्चा भी की गई। प्रो. कीन्स ने सुवर्ण विनिमय परिमाण का समर्थन किया पर डॉ. आंबेडकर ने इसका विरोध करते हुए दलील दी कि इस योजना के कारण महंगाई बढ़कर रूपये की किंमत कम हो सकती है। इस कारण विनिमय साधन के रूप में रूपये का स्थान अस्थिर हो सकने की संभावना उन्होंने व्यक्त की। अपने युक्तिवाद के समर्थन हेतु डॉ. आंबेडकरने ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधारेपर सुवर्ण परिमाण तथा सुवर्णविनिमय परिमाण के बीच का अन्तर सिद्ध भी किया। ब्रिटीश सरकार की आर्थिक नीति भारत में महंगाई बढ़ाने वाली साबित होने के प्रमाण दिए गए। वस्तुतः यह चर्चा आज की अर्थव्यवस्था से मेल नहीं खाती फिर भी डॉ. आंबेडकर का विश्लेषण अधिक सटीक होने के संकेत अर्थतज्ञ व्यक्त करते है। हिल्टन यांग कमीशन के समक्ष १९२६ में रिझर्व बैंक की स्थापना के संदर्भ में गवाही देते हुए उनका आग्रह यह था कि जो सस्था चलन निर्माण का कार्य करती है उसपर परिणामकारी नियंत्रण की आवश्यकता है। यदी ऐसा नहीं हुआ तो अनिबंध मुद्रा पूर्ति के साथ महंगाई बढ़ने से आर्थिक स्थिरता को क्षति पहुँचेगी। उनकी विचारधारा सटीक होने के प्रमाण उनके, संशोधन कार्य को मार्गदर्शक प्रो. सोलिगमन ने व्यक्त किए है कि 'डॉ. आंबेडकर के लेखन में भारत की महत्वपूर्ण स्थित्यांतरित धारणाओं को निष्पक्ष तरी कैसे विश्लेषित किया गया है।'

मूल्यमापन -

अर्थशास्त्रीय लेखन में डॉ. आंबेडकर की लेखनशैली क्रमबद्ध



Handwritten signature in Marathi script.

रूपसे विकसित होती दिखाई देती है। इसमें बहुजनहिताय— बहुजनसुखाय की नीति का दर्शन होता है। वर्तमान में केंद्र शासन का विनीय घाटा बढ़ता जा रहा है। इसकी पूर्ती के लिए रिज़र्व बैंक को कारगर उपाय करने की जरूरत महसूस हो रही है। चलन मिण की क्षमता पर प्रभावशाली नियंत्रण करने की डॉ. आंबेडकर द्वारा १९२९ में प्रतिपादित की गई सूचना आज भी सटीक सिद्ध हो सकती है जो उनकी दूरदर्शिता की नीति को व्यक्त करती है। उनके आर्थिक विचारों का प्रभाव आज भी देश की अर्थनीतिपर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

ब्रिटीश राज्यकर्ताओं की आर्थिक शोषण की नीतियों का सामान्य जनता पर दिखाई देनेवाले प्रभाव को डॉ. आंबेडकर ने अपने लेख, ग्रंथ, भाषण, आयोग के समक्ष दी गई गवाहियों में किलेपित किया है। समाजवादी, राष्ट्रीय विचारधार के आधार पर उन्होंने ब्रिटीश राज्यकर्ताओं की आर्थिक नीतियों की कमियों को बतलाकर भारतीय अर्थ व्यवस्था के समक्ष उपस्थित कठिनाईयों का विभिन्न अर्थतंत्रों के विश्लेषण के आधारपर युक्तिवाद प्रस्तुत किया है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि डॉ. आंबेडकरजी एक कुशल अर्थशास्त्री थे जो कि अर्थनीति को, अर्थशास्त्रीय सिद्धान्तों को वास्तविक रूप देने के पक्षधर थे।

निष्कर्ष

- १) डॉ. आंबेडकर के आर्थिक लेखन का आधार सामाजिक न्याय था।
- २) डॉ. आंबेडकर को नियोजनबद्ध तथा समाजवादी अर्थव्यवस्था अभिप्रेत थी।
- ३) डॉ. आंबेडकर ने संविधान के माध्यम से देश की अर्थनीति निश्चीत करनेपर बल दिया।
- ४) डॉ. आंबेडकर के आर्थिक लेखन स्वतंत्रतापूर्व काल के आर्थिक समस्याओं से जूझा होने पर भी वर्तमान समय की आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डालता है।
- ५) डॉ. आंबेडकर के लेखन का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था

में सुधार लाना था, किंतु बदलते परिवेश में आर्थिक नीति को सामाजिक समानता से जोड़ा गया। ब्रिटीश शासन कालमें यदि आर्थिक विकास और सामाजिक समानता के लिए स्वतंत्र प्रशासनिक रचना का निर्माण किया जाता तो भारत में आर्थिक विषमता को कम किया जा सकता था। शिक्षा, रोजगार, राजनीति, दृष्टिदाता निवारण में अपनाये गये उपाय भारतीय नागरिक और उसके अधिकारों से संलग्न होने चाहिए, यही निष्कर्ष उनके अर्थशास्त्रीय लेखन का सार है।

संदर्भ —

- १) बक्षी, डॉ. बी.आर. आंबेडकर, सोशियो एकनॉमिक पोलिटिकल आउटलॉक २००९.
- २) काकडे दिलीप, अर्थतंत्र बाबासाहेब आणि नवीन आर्थिक धोरण, २००३.
- ३) पंडागले एस., सोशल फिलॉसफी ऑफ डॉ. बी.आर. आंबेडकर, भोपाल.
- ४) नाईक सी. डी. शॉर्ट्स अँड फिलॉसफी ऑफ डॉ. बी. आर. आंबेडकर २००३.
- ५) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर गौरव ग्रंथ (सम्पा लेख) १९९९.
- ६) कीर धनंजय, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, पाण्युलर प्रकाशन, मुंबई २००९.
- ७) शेषराव चव्हाण, भारत रत्न डॉ. आंबेडकर, मसीहा ऑफ अनस्टेबल्ल्स, १९९०.
- ८) डॉ. मुनोकर बी. भारतातील आर्थिक सुधारणा आणि दलित २००५.
- ९) भगवानदास (संपा) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर रायटिंग अँड स्पीचेस, खंड ३-४.
- १०) पवार दया, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर गौरव ग्रंथ, म. रा. सा. सं. मंडल, मुंबई १९९९.
- ११) काटकर आर, एक विसाव्या शतकातील आंबेडकरवाद,



Handwritten signature in Marathi script.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 292

सुधीर प्रकाशन, वर्धा, २००९.

१२) डॉ. आंबेडकर, संपूर्ण वाङ्मय खंड १, २, सुचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार नई दिल्ली १९९३.

□□□



का.सं. १०

The Stalwarts



लोकनायक बापूजी अने महिला महाविद्यालय

यवतमाल ४४५००१ (महाराष्ट्र)

संपादक मंडळ
प्राचार्य डॉ. दुर्गेश कुटे
प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड
सह.प्रा.डॉ. संतोषकुमार गाजले
प्रा. सौरभ वगारे

Cha.
3.2.2
ग्रा. लग



काशं

- 12) व्यक्तित्व एवं कृतित्व – उषा प्रियंवदा
डॉ. महेन्द्रसिंह अजितसिंह पवार, जि. अमरावती ||107
- 13) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदिप्यमान पर्व : क्रांतिकारी
चळवळ.... प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||114
- 14) आधुनिक भारताचे निमति— राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज
डॉ. रामलाल चौधरी, भंडारा.(महारा.) ||122
- 15) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक “भारतेन्दु हरिश्चंद्र” का
अनुवाद के क्षेत्र में ...डॉ सुनीता बुदले, अमरावती ||132
- 16) साने गुरुजींच्या वाङ्मयातील संस्कारमूल्ये
डॉ. ममता व. दयणे, यवतमाल ||142
- 17) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदिप्यमान पर्व : क्रांतिकारी
चळवळप्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||149
- 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का सामाजिक आन्दोलन
प्रा. डॉ. बंडू एस. मानवटकर, जि. अकोला ||156
- 19) गांधीवादी विचारसरणी : एक जागतिक वारसा
प्रा. डॉ. आनंदराव शिंदे, जि. नांदेड ||162
- 20) आधुनिक भारताचे निमति डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
प्रा. डॉ. डी.डी. जोधळे, जि. यवतमाल ||181
- 21) आधुनिक युग मे गुरुकुलपरंपरा के प्रतिपादक पद्मविभूषण पंडित
“हरिप्रसाद चौरसिया”शुभम नरेश उदावंत ||185
- 22) पंचकन्या



काशं

साने गुरुजींच्या वाड्मयातील संस्कारमूल्ये

डॉ. ममता व. दयणे

सहायक प्राध्यापक, मराठी विभाग,
डॉ. बा. अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल

=====

मराठी साहित्यसृष्टीत मातृहृदयी साहित्यिक म्हणून सर्वपरिचित असलेले सानेगुरुजी शोर लोकशिक्षक होते. महाराष्ट्राचे प्रबोधनकार होते. साने गुरुजी हे वृत्तीने शिक्षक होते. त्यांनी आपली वाणी व लेखणी समाजजीविनाला आकार देण्यासाठी, किशोवयीन पिढीवर संस्कार करण्यासाठी वापरली. महाराष्ट्रातील समाजमनावर त्यांच्या वाड्मयाने सखोल व टिकाऊ परिणाम केला. अनेकांची युवा मने विधायक कार्यासाठी त्यांनी भागवून टाकली. समाजजीवनावर संस्कार करण्याचे, व्यक्तीमनाचे उन्नयन करण्याचे सामर्थ्य त्यांच्या वाड्मयामध्ये आहे. समाजजीविनाला सुसंस्कारित करणारे अनेक अमूल्य विचार त्यांच्या साहित्यात व्यक्त झालेले आहे. त्यांच्या साहित्यातून व्यक्त होणाऱ्या विचारांमध्ये शैक्षणिक मूल्य आहेत. शिक्षण प्रक्रिया कशी असावी, शिक्षणाची उद्दिष्टे कोणती असायला पाहिजे, शिक्षण प्रक्रियेमध्ये व्यक्तिनिष्ठ व समाजनिष्ठ अशी कोणकोणती मूल्ये सुसंस्कारित व्हायला पाहिजे, शिक्षणाच्या प्रक्रियेत माता - पिता, सभोवतीचा परिसर, निसर्ग यांचे स्थान काय आहे या संदर्भातील साने गुरुजींचे विचार त्यांच्या साहित्यात व्यक्त झालेले आहे.

माणसाचे शिक्षण केव्हा सुरू होते या संदर्भात सानेगुरुजी यांच्या श्यामची आई या कादंबरीतील विचार महत्त्वाचे वाटतात. ते लिहिल्यात

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 143

मुन्यु जमतो त्यापूर्वीच त्याचे शिक्षण सुरू झालेले असते..... जगात फक्त आईबापच शिकवितात असे नाही. आजुबाजूचे सारे जग, सारी सजीव - निर्जीव सृष्टी शिकवित असते. परंतु या आजुबाजूच्या सृष्टीतून काय शिकावे, कसे शिकावे, हे आईबापच शिकवितात. आई वडिलां सोबतच भोवतालच्या परिसराचा ही शिक्षणामध्ये महत्त्वाचा वाटा असतो. कारण 'शिक्षणाने आत्मदर्शन होऊन सर्व भूतमात्रावर प्रेम करण्याची प्रवृत्ती उत्पन्न झाली पाहिजे. हे केवळ पुस्तकी शिक्षणाने शक्य नाही तर विशेषतः मातेकडूनच हे संस्कार व्हायला पाहिजेत 'श्यामची आई या पुस्तकात ते लिहिल्यात' आई माझा गुरू, आई माझी कल्पतरू, तिने मला काय काय तरी दिले.... आईने जे शिकविले त्याचा पराधीनता माझ्या जीवनात मला प्रगट करता आला नाही" यावरून शिक्षणाच्या संस्काराची परिणती आचरणात झाली तरच ते खरे शिक्षण होईल असे गुरुजींचे मत दिसते. श्यामची आई श्यामला काय वाचावे यासंदर्भात सांगते "विश्वाचा विशाल ग्रंथ वाचावा, मनुष्याची जीवने वाचावी, हृदये वाचावी, त्यातील सुखदुःखे जाणून घ्यावी, हेच खरे वाचन नाही का?..... प्रत्यक्ष उदाहरणाने जे शिक्षण मिळते ते शेकडो व्याख्याने ऐकून किंवा अनेक ग्रंथ वाचूनही मिळत नाही, कृती ही मुक्तेपणाने बोलते. शब्दाडूनही हे मुक्तेपण परिणामकारक असते." अर्थातच अनुभव आणि निसर्ग हे मुलांचे शोर शिक्षक आहे, हे साने गुरुजींचे मत होते.

जीवनाची संकुचित दृष्टी नाहीशी होऊन व्यापक दृष्टीने जीवनाचा अर्थ समजावून घेण्याची क्षमता निर्माण करणे हे शिक्षणाचे उद्दिष्ट असले पाहिजे. ही दृष्टी पुस्तकातील शब्दानाने प्राप्त होणार नाही तर जीवनातील अनुभवांनी प्राप्त होईल. अनुभव संपन्नता हे शिक्षणाचे उद्दिष्ट तर सेवापरयणता हे शिक्षणाचे ध्येय असले पाहिजे, त्यासाठी शिक्षणाने उत्तम नागरिक निर्माण झाले पाहिजे असे साने गुरुजींचे विचार होते. श्यामची आई या कादंबरीत भूतदया या प्रकरणात ते लिहिल्यात प्रेम ज्ञान व शक्ती यांचा विकास जीवनात हवा. प्रेम म्हणजे हृदयाचा विकास. ज्ञान म्हणजे बुद्धीचा विकास व शक्ती म्हणजे शरीराचा



बा. अणे

आनंद असतो. आणि खरोखर श्रमजीवनात अपार गोडी आहे. राहून राहून एक विचार माझ्या मनात हल्लो येत असतो, भारतातील मुले स्वावलंबी झाली पाहिजेत. विद्यार्थ्यांच्या ठिकाणी स्वावलंबी वृत्ती निर्माण झाली पाहिजे असे साने गुरूजींना वाटते. चारित्र्य हे सर्वांत श्रेष्ठ मूल्य आहे त्यावरच व्यक्तीचे तसेच राष्ट्राचे भवितव्य अवलंबून असते. यासंदर्भात ते सुंदर पत्रे भाग-३ मध्ये लिहितात आज भारताला अन्न वस्त्राहूनही चारित्र्यसंपन्न माणसांची जरूर आहे. प्राण गेला तरी खोटे बोलणार नाही, अनितीने पैसा मिळवणार नाही. लाच मागणार नाही, दुसऱ्यास सतावणार नाही - अशा वृत्तीची निःस्पृह, निर्मळ सेवापारयण माणसे राष्ट्राला हवी आहेत. मानवता हे फार श्रेष्ठ मूल्य आहे. माणूस हा श्रेष्ठ. मानवता हे मूल्य शिक्षणातून विद्यार्थ्यांच्या मनात रुजले पाहिजे. माणसाने माणसाशी माणुसकीने वागावे हे विद्यार्थ्यांना समजले पाहिजे. व्यक्ती व समाज यांचे कल्याण साधणारा श्रेष्ठ मानव शिक्षणातून निर्माण झाला पाहिजे असे गुरूजींना वाटते.

शिक्षण म्हणजे व्यक्तिमत्त्वाचा सर्वांगीण विकास होय. शिक्षणाने सद्गुणांची निर्मिती झाली पाहिजे, व्यक्तिनिष्ठ जीवन संपन्न बनले पाहिजे, त्यासाठी जीवन व्यवहार करण्याची कौशल्ये व क्षमता शिक्षणाने विकसित व्हायला हवी. व्यक्तीविशिष्ट जीवन तर शिक्षणाने संपन्न झालेच पाहिजे सोबतच सामाजिक जीवनही संपन्न व्हायला पाहिजे. शिक्षणाने उत्तम नागरिक निर्माण झाले पाहिजे इतकेच नव्हे तर मानवतेची विशाल वृद्धी शिक्षणाने माणसांमध्ये निर्माण झाली पाहिजे. प्राणीमात्रावर प्रेम करण्याची वृत्ती शिक्षणाने निर्माण झाली पाहिजे. शिक्षणाने जीवनाची उन्नती झाली पाहिजे. शिक्षणाने मनाच्या वृत्तीला वळण लागावे, मनोवृत्तीवर सुसंस्कार व्हावेत. नैतिक विकास व चारित्र्य निर्मिती ही शिक्षणाने साध्य झाली पाहिजे तसेच उपजीविकेची क्षमताही शिक्षणाने प्राप्त झाली पाहिजे. अर्थातच शिक्षण जीवनातून आणि जीवनासाठी मिळाले पाहिजे हा विचार साने गुरूजींना अभिप्रेत होता. खर तो एकची धर्म जगाला प्रेम अपवि जमी जे हीन अति पतित

'भारतीय संस्कृती' या ग्रंथातील 'बुद्धीचा महिमा' या लेखात ते लिहितात नचिकेता प्रत्यक्ष मृत्यूजवळही ज्ञानाची शिक्षा मागता झाला, याच्याहून ज्ञानाची शोखी आणखी कोणती असावी? ज्ञानासाठी मृत्यूजवळही जावे लागेल. ज्ञानाला कशाची भीती नाही. ज्ञान मिळवून पाहणारा सार्या त्रिखंडात जाईल. ज्ञानासाठी वाटेत तो त्याग करण्याची तयारी असली पाहिजे असे त्यांना वाटे. ते पुढे लिहितात समाजाला नवविचार देणे म्हणजे फार शीर साधनाच आहे. विचाराचा डोळा समाजाला देणे याहून भयंकर दुसरे काय आहे ? चिंतन करून आपणास जो विचार सुचला, त्याला पूज्य मानून तो सदैव प्रकट केला पाहिजे. त्याची वाढ केली पाहिजे, तो सर्वासामोर निर्भयपणे मांडला पाहिजे. तो सोडता कामा नये. असे ज्ञानाचे ज्ञानोपासकाचे महात्म्य त्यांनी वर्णन केले आहे.

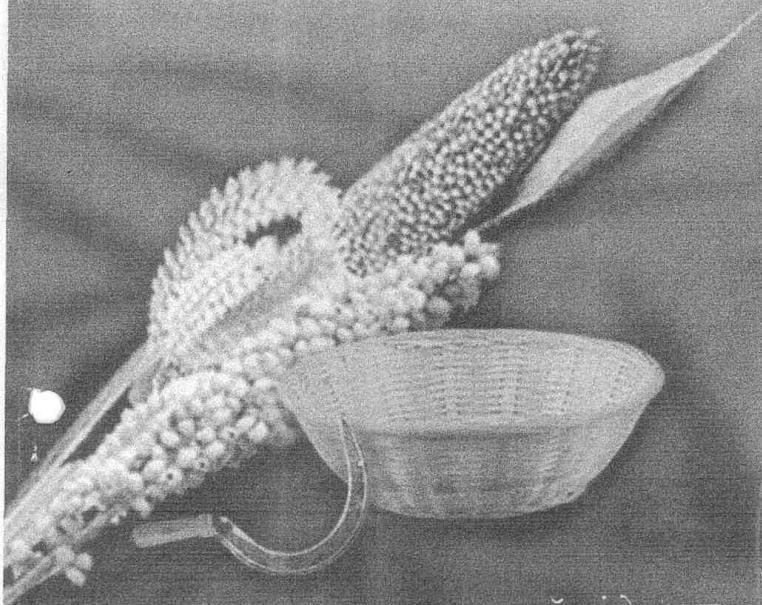
विद्यार्थ्यांमध्ये चांगल्या गोष्टींबद्दल श्रद्धा उत्पन्न झाली पाहिजे. वृद्धांबद्दल आदरभाव तसेच नम्रता सुद्धा असायला पाहिजे. कारण नम्रवृत्ती शिवाय ज्ञानग्रहण करण्यासाठी लागणारी विज्ञानसूक्ती लाभणार नाही. यासंदर्भात 'भारतीय संस्कृती' या ग्रंथात 'गुरु शिष्य' या लेखात ते म्हणतात नम्रता हा ज्ञानाचा खर आरंभ आहे. गुरुजवळ शिष्य रिकामे मन घेऊन जातो. विहिरीत अपसंसार पाणी आहे. परंतु भांडे जर वाकणार नाही तर त्या भांड्यात अन्नत पाण्यातील एक थेंबही शिरणार नाही. तसेच ज्ञानाचे जे सागर असतात, त्यांच्याजवळ जोपर्यंत आपण वाकणार नाही, तोपर्यंत ज्ञान आपणास मिळणार नाही. भरण्यासाठी वाकावयाचे असते. वाढविण्यासाठी नमावयाचे असते.

नम्रतेशिवाय ज्ञान ग्रहण होणार नाही तसेच गुरूवर निष्ठा असल्याशिवाय ते प्राप्त होणार नाही. या संदर्भात 'भारतीय संस्कृती' या ग्रंथातील 'गुरु-शिष्य' प्रकरणात ते पुढे लिहितात गुरु म्हणजे एक प्रकारे आपले ध्येय. आपल्याला ज्या ज्ञानाची तहान आहे, ते ज्ञान अर्थातच यथार्थपणे ज्याच्या ठिकाणी आपणास प्रतीत होते, तो आपला गुरु होतो. गुरुभक्ती म्हणजे एकप्रकारे ध्येय भक्ती. सुभाला उपदेश करतांना 'सुंदर पत्रे भाग-३' मध्ये ते स्वावलंबनाचे महत्त्व विशद करतात. ज्यावेळेस मनुष्य आपण होऊन काम करते त्यावेळेस ते काम म्हणजे



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

ग्रामीण साहित्य आणि संस्कृती



डॉ. संतोष चतुर
डॉ. गोपाल ढोले

3.2.2
cha

~~Prashant~~

प्रा (२००७)



काशने

: अनुक्रमणिका :

ग्रामीण साहित्य : स्वरूप, स्थिती, गती आणि अपेक्षा, आव्हाने.....	१५
प्रा. डॉ. गजानन लोहवे	
ग्रामीण साहित्य : संकल्पना, प्रेरणा व विशेष.....	२२
प्रा. रेखा व्ही. इंगोले	
ग्रामीण साहित्याची परंपरा	२७
प्रा. डॉ. अनुराधा रा. मुळे	
ग्रामीण साहित्याची चळवळ	३४
प्रा. सौ. हेमा शि. जवंजाल	
ग्रामीण कृषी जीवन आणि संस्कृती काल-आज-उद्या	४०
डॉ. दिपाली प्र. गांवडे	
ग्रामीण कृषी जीवन व संस्कृती	५०
प्रा. फिरोज साहाळ	
ग्रामीण साहित्य व लोकसाहित्य अनुबंध	५५
डॉ. भाऊसाहेब दादासाहेब गव्हाणे	
लोकजीवनातील लोकसमजुती	६३
डॉ. कांत जाधव	
लोकसंस्कृती आणि लोककलावंत	७३
प्रा. पुरुषोत्तम एस. निर्मळ	
ग्रामीण साहित्य आणि लोकसाहित्य : अनुबंध	८०
डॉ. ममता व. दयने	
शेती जीवनाची दैन्यावस्था रेखाटणारी सचिन वसंत पाटील यांची ग्रामीणकथा	८४
डॉ. प्रमोद भीमराव गारोडे	
ग्रामीण साहित्यातील ग्रामजीवनाचे वास्तव	९२
डॉ. माधुरी मनोहरराव पाटील	



काशं

ग्रामीण साहित्य आणि लोकसाहित्य : अनुबंध

डॉ. मापना व. कुमरे
मराठी विभाग प्रमुख
लो. बा. अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाळ

मराठी साहित्य विश्वामध्ये साठोसरी साहित्य प्रवाहामध्ये ग्रामीण साहित्य हा महत्त्वाचा साहित्य प्रवाह म्हणून मानला जातो. ग्रामीण साहित्य ही संज्ञा ग्रामीण संवेदनशीलतेतून निर्माण झालेल्या साहित्यासाठी वापरली जाते. ग्रामीण जीवनातून फुलणारे ग्रामीण वास्तव्यातून साकार होणारे साहित्य ते ग्रामीण साहित्य ग्रामीण जीवन हे कृषिकेंद्रित जीवन आहे. कृषिकेंद्रितता हा ग्रामीण व्यवस्थेचा पाया आहे. ग्रामीण संस्कृती ही ग्रामव्याप्ते कृषिकेंद्रित संस्कृती आहे. कृषिजीवन आणि शेतकरी हा ग्रामसंस्कृतीचा मुख्य घटक आहे. कृषि संस्कृतीचा मुख्य घटक आहे. कृषि संस्कृतीतून आलेली निसर्गसुखता ही ग्रामीण साहित्यातून खेड्यातील जीवनपद्धती, रीतीरिवाज, शेती तेथील निसर्ग आणि मातीशी असलेले माणसाचे नाते, विधी, परंपरा, चालीरीती, समजुती, श्रद्धा-अंधश्रद्धा, लोकसंकेत यांचे चित्रण येते. त्या त्या परिसरातील लोकजीवनाचे, लोकसंस्कृतीचे प्रतिबिंब त्यात उमटलेले दिसते. लोकसाहित्यातील प्रतिबिंबित झालेली लोकसंस्कृती ही प्रत्यक्ष दैनंदिन जीवन व्यवहाराशी निगडित आहे. लोकसाहित्यातील समूहजीवन, मौखिक परंपरांचे जतन कृषिव्यवसायाशी, निसर्गाशी असलेले दृढत्व या सर्व घटकांमधून ग्रामीण कृषिसंस्कृतीचे दर्शन घडते. कृषिप्रधान संस्कृतीचे प्रतिबिंब व्यापक स्वरूपात लोकसाहित्यात उमटलेले असल्यामुळे त्याच्यातील हे निकटत्व लक्षात घेऊन ग्रामीण साहित्य आणि लोकसाहित्य यांच्यातील अनुबंध शोधण्याचा प्रयत्न प्रस्तुत शोधनिबंधातून केला आहे.

उद्दिष्ट्ये :

१. लोकसाहित्य आणि ग्रामीण साहित्य यांच्यातील नात्याचा शोध घेणे.
 २. लोकसाहित्यातील कृषिकेंद्रिततेचा अभ्यास करणे.
 ३. लोकोत्सव आणि निसर्ग व कृषिव्यवसाय यांच्यातील अनुबंधाचे आकलन करणे.
 ४. ग्रामीण साहित्यातील लोकतात्वांचा आढावा घेणे.
- लोकसाहित्य आणि कृषिसंस्कृती :
लोकसाहित्य या सामासिक शब्दात लोक ही संज्ञा समूहवाचक आहे.

लोक म्हणजे समान संस्कृती, परंपरा असणाऱ्या कोणताही मानवी समूह. ज्यांची जीवनशैली एका विशिष्ट परंपरेने चालत आलेली आहे. असा मानवी समूह म्हणजे लोक. लोकसाहित्यातील 'साहित्य' या संज्ञेमध्ये शब्द आणि शब्देतर सामग्रीचा आगर्भाव आहे. शब्द साहित्यात लोककथा, लोकगीते, लोकनाट्ये, लोकनृत्य, मराठी, वाक्यप्रचार लोकोक्ती मंत्र यांचा समावेश होतो. हे सर्व खऱ्या अर्थाने गांधर्वातून असल्याने त्याला लोकवाङ्मय असे म्हटले जाते. तर लोकजीवनातील रीती, समजुती, लोकदैवते, उपासनाविधी यांचा समावेश शब्देतर साहित्यात होतो. लोकसाहित्यातील शब्द व शब्देतर या दोन्ही वर्गांचे कार्य परंपरागत स्वरूपाचे आहे.

आपला देश हा कृषिप्रधान आहे. या कृषिप्रधान संस्कृतीचे वास्तव चित्रण ग्रामीण साहित्यात येते. ग्रामीण संस्कृतीत शेती आणि निसर्ग यांचे अविभाज्य नाते आहे. या पारलभ्यमीवर लोकजीवनातील अनेक सण उत्सवांचा संबंध सुध्दा शेती आणि निसर्गाशी जुळलेला आढळतो. पाऊस हा शेतीव्यवसायातील कृषिजीवनातील अत्यंत महत्त्वाचा घटक आहे. मराठी महिन्यानुसार आपल्या लोकोत्सवांमार्गे अमणाच्या प्रेरणांचा शोध घेतल्यास ऋतुमानानुसार पर्जन्यकाळापासून आपल्या मंग-उत्सवांना प्रारंभ होतो. प्रत्येक सणाचा संबंध त्या ऋतुतील वातावरण, निसर्गातील विविध घटक, वनस्पती, प्राणीमात्र, शेतातील पीके, धनधान्य यांच्याशी असलेला दिसतो. उद, पोळा, नागपंचमी, मकरसंक्रांत, हरितालिका, ई. यावरून लोकसंस्कृतीमध्ये निसर्गाला व निसर्गावर अवलंबून असलेल्या कृषिव्यवसायाला, कृषिव्यवसायाशी निगडित सर्व घटकांना अधिक प्राधान्य दिलेले दिसते. या सर्व सण-उत्सवातील विधीमध्ये महत्त्वाचे स्थान असलेल्या साहित्यामध्ये विविध वनस्पतींची पाने, फुले, फळे, धान्य या सर्व वस्तु त्या त्या ऋतुमध्ये शेतीच्या हांगामामध्ये विपुल प्रमाणात उपलब्ध असतात. तसेच या सर्व लोकोत्सवा मधून शेती-माती भूमाता काळी आई, शेतीव्यवसायाला सहायक असणारे विविध घटक, निसर्ग, प्राणीमात्र यांच्या विषयीची कृतज्ञताच व्यक्त केलेली दिसते. काही उत्सवांच्या विधीमध्ये लोकगीते, लोकनाट्ये व लोककथांचे सुध्दा महत्त्व आहे. लोकमानसाच्या श्रद्धा, आनंद, उत्साह यांच्या सामुहिक आविष्काराचे परंपरेने चालत आलेल्या विविध लोकोत्सवातून हातांना दिसतो. यावरून लोकसंस्कृतामध्ये शेती व निसर्गाला असलेले प्राधान्य लक्षात येते. आणि 'कृषिप्रधान' हे तर ग्रामीण साहित्याचे वैशिष्ट्य आहे.

ग्रामीण साहित्य व लोकसंस्कृती :

ग्रामीण साहित्यामध्ये ग्रामीणत्वाच्या आशयामधून प्रकट होणाऱ्या ग्राम

Cha



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली
साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
सम्पादक
डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० दीपक पाण्डेय, सहायक निदेशक, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली
आचार्य पं० पुष्पिनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ० डी० आर० राहुल, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दतिया, मध्यप्रदेश
डॉ० शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन-फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/संपादक/प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२२

ISBN 978-93-92611-68-1

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं० १७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रुपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Sahitya Mein Rashtriya Chetna
Edited by Dr. Ghanshyam Bharti, Dr. Okendra



काशं

प्रस्तावना :

आज जब हमें स्वतंत्रता मिलकर ७५ साल हुए और हम स्वातंत्र्य अमृत महोत्सव मना रहे हैं तब इस शुभ अवसर पर हम में से कितने लोग हैं जो ये जानते हैं हमें आजादी प्राप्त करने में कितने अनगिनत लोगों ने सहयोग दिया है? कितने लोग शहीद हुए हैं? कितनी लोगो ने अपनी जान पर खेल कर स्वतंत्रता के लिये अपनी जान न्योछावर कर दी है? आजादी के लिये जीन क्रांतिकारी स्वातंत्र्य सेनानीयों ने अपना अमूल्य योगदान दिया हम उन्हें शतशः नमन करते हैं। कितने ही अनाम वीर एवम विरांगनाओं ने स्वतंत्रता के लक्ष्य में अपना तन-मन-धन गंवाकर आजादी के यज्ञ में अपना जीवन समर्पित किया ये तो भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास के पन्ने ही बता सकते हैं। देश ऋणी है उन क्रातिवीरों का जिन्होंने देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। अपना भारत स्वतंत्र हुवा वह सहरत्रों ज्ञात-अज्ञात आजादी के नायकों के रक्तंजित बलीदान से!

जब हम इतिहास के पन्नों में झांककर देखते हैं तो हमें हमारा गौरवशाली स्वतंत्रता संग्राम अनेक दौरों से गुजरा दिखता है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का ये इतिहास स्वतंत्रता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अद्भुत गाथा हैं। १८५७ के विद्रोह में विश्व के सबसे महान व शक्तिशाली साम्राज्य को चुनौती दी गई। इस विद्रोह में झाशी की राणी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल जैसी अनेक विरांगनाओं का योगदान उल्लेखनीय रहा। इन वीर सेनानियों में अनेक महिला स्वातंत्र्यसेनानी भी थी जिन्होंने न केवल क्रांतिकारियों की तरह तरह से सहायता की बल्कि खुद आगे चलकर नेतृत्व भी किया। स्वतंत्रता आंदोलन के कार्य में महिलाएं भी आरंभ से लेकर अंत तक केवल शांतिपूर्ण आंदोलन में सक्रिय नहीं रही हैं अपितु क्रांतिकारी गतिविधियों में भी सक्रिय रही। चलो, आज इसी स्वर्णिम अवसर पर हम याद करते हैं उन वीरांगनाओं को जिन्होंने सक्रिय तरीके से अंग्रेजों से लोहा लिया था मगर उनकी कहानी शायद ज्यादा प्रकाश में आयी नहीं।



काशं

अपने जच्चे और शौर्य का अतुलनीय प्रदर्शन करते हुए लखनऊ में लड़ी। अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर अपमानित होनेके बजाए अंत में उन्होंने नेपाल में शरण ली जहाँ १८७६ में उनकी मृत्यु हो गई।

१८५७ स्वतंत्रता संग्राम की दूसरी चिंगारी है 'झांसी की रानी लक्ष्मीबाई'। रानी लक्ष्मीबाई भी राज घराने की थी उनके पति झांसी के महाराज गंगाधर राव के निधन के बाद अंग्रेजों ने दत्तक विधान कानून के तहत राणी लक्ष्मीबाई के गोद लिए हुए बेटे दामोदर राव को गद्दी का उत्तराधिकारी माने से इनकार कर दिया। लक्ष्मीबाई को झांसी के किले से बाहर कर दिया गया छलेकिन जब अंग्रेज फौज झांसी पर हमला करने आई तब झांसी की रानी ने पुरे दमखम के साथ मुकाबला किया छ जब अंग्रेजों ने बढत बनाली तब लक्ष्मीबाई अपने बेटे के साथ किले से बच निकलीं।

राणी बाहर निकल कर कल्पी पहुची, जहां तात्या टोपे का उन्हें साथ मिला। दोनों ने मिलकर ग्वालियर पर कब्जा कर लिया लेकिन एक बार फिर जब अंग्रेज भारी पडे तब लड़ाई ग्वालियर से बाहर लड़ी जाने लगीछ उसी लड़ाई में रानी को गोली लग कर वीरगती प्राप्त हुई। राणी लक्ष्मीबाई हमारी अनंत तक वीरता का प्रतीक रहेगी। राणी लक्ष्मीबाई ने १८५७ के पहले स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजोंके दात खड़े कर दिए ये तो एक कालातीत सत्य है। सर ह्युरोज को झांसी की राणी लक्ष्मीबाई के अद्भुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा की, "सैनिक विद्रोह के नेताओं में महाराणी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थी" अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए झांसी की रानी ने जो महिला दस्ता 'दुर्गा दल' के नाम से स्थापित किया था, उसी दुर्गा दल कि एक सदस्य झलकारीबाई थी जो तिरंदाजी और तलवारबाजी में कुशल थी। जब अंग्रेजोंने झांसी के किले को घेराबंदी कर ली थी तब झांसी की रानी वहा से सहीसलामत बाहर निकले इसके लिये झलकारीबाई ने स्वयं को प्रति झांसी रानी का रूप देकर अंग्रेजों को चक मा दिया। झलकारी बाई के भरोसे झांसी की रानी बिना किसी को शक हुए बाहर निकल सकी। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने झलकारी की बहादुरी को निम्न प्रकार पंक्ती बद्ध किया है-



काशं

जैसे महान क्रांतिकारी की पत्नी होने के कारण अपने पति को सभी क्रांतिकारी गतिविधियों में पुरा सहयोग दिया।

बंगाल में जन्मी प्रीतीलता वड्डेदार भी इसी गौरवशाली शृंखला की कड़ी है जिन्होंने मात्र २१ साल की उम्र में देश के लिये मौत को गले लगा दिया। प्रीतीलता का झुकाव हमेशा क्रांतिकारी विचारों की ओर था प्रीतीलता ने प्रसिद्ध क्रांतिकारी सूर्यसेन से हथियार चलाने की ट्रेनिंग ली थी उन्होंने केडगाव के यूरोपियन क्लब के बाहर खिडकी में लगवाया अंग्रेज घायल हुए और एक यूरोपियन महिला की मृत्यु हुई। इस हमले में दोनों तरफ से गोलियां चली और इसी दौरान एक गोली प्रीतीलता को लग गई। प्रीतीलता गंभीर अवस्था में घायल हुई जब उसका भागना असंभव लगा तब प्रीतीलता ने पोर्टेशियम सायनाइड खाकर शहादत को गले लगा लिया।

हमारी अगली सौदामिनी है कनकलता बरुआ। असम राज्य में १९२४ को पैदा हुई कनकलता बचपन से ही हमेशा देश की सेवा करने और स्वतंत्रता संग्राम में मदद करने के सपने को देखते थी उम्र कम होने के कारण वह आजाद हिंद सेना में शामिल नहीं हो सकी लेकिन आसाम राज्य में स्वतंत्रता की पहल के लिये शुरू हुआ 'करो या मरो' अभियान में वह जोर शोर से शामिल हो गयी और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान असम में भारतीय झंडा फेहराने के लिए आगे बढ़ते हुए उनकी मृत्यु हो गई। इसी भारत छोड़ो आंदोलन में स्वतंत्रता संग्राम में लड़ने के लिए अनगिनत महिलाओं को प्रेरित करने वाली भोगेश्वरी फुकनानी को हम कैसे भूल सकते हैं। जब क्रांतिकारियों ने वंदे मातरम के नारे लगाते हुए मोर्चा संभाला था तब क्रांतिकारियों पर हमला करने हेतु आये हुए कप्तान को जान से मारने का शौर्य भोगेश्वरीजी ने दिखाया था। इसी स्वराज्य सौदामिनीयोके शृंखला में नागालैण्ड की रानी गिडालू को कौन भूला सकता है भला! जो अपने चचेरे भाई जाडोनांग १९३१ में फांसी की सजा होने के बाद खुद अपने आप स्वयं स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर संभाल लेती है और पुरे पहाडी इलाके में सरकार के विरोध जनमत तयार करते हुए सरकार को कर न देने



काशं

सम्मानित किया गया। अरुणा असफ अली का नाम आते ही हमें १९४२ के भारत छोड़ो आंदोलन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली अगली सौदामिनी याद आती है वह है डॉ. उषा मेहता।

डॉक्टर उषा मेहता और उनके दोस्तों ने गुप्त आकाशवाणी केंद्र शुरू किया। जीससे वो मुख्य नेता गणका संबोधन प्रक्षेपित करते थे। जिससे स्वतंत्रता आंदोलन की मशाल सामान्य जनों में प्रज्वलित रहती थी। १९४२ का स्वतंत्रता आंदोलन देशव्यापी था। देश के कोने कोने में स्वतंत्रता के प्रति लालसा जाग उठी थी। स्त्री-पुरुष, बाल-आबाल एकजूट हो कर स्वतंत्रता के प्रति सजग हो कर अपने अपने स्तर पर लड़ रहे थे।

इन सभी में मनिबेन पटेल, सुचेता कृपलानी, कस्तुरबा गांधी, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, कॅप्टन लक्ष्मी सहगल, सरोजिनी नायडू, दुर्गाबाई देशमुख, अवंतिकाबाई गोखले, उर्मिला देवी, कमला नेहरू, प्रभावती जयप्रकाश, विजयालक्ष्मी पंडित, शांताबाई वेंगसरकर, कृष्णाबाई पणजीकर, उर्मिलाबाई मेहता, हंसाबेन मेहता, सुशीला बाई पै, सोफिया खान, मृदुला बेन साराभाई, इंदुमती चिमनलाल, आशादेवी आर्य नायकम, मदालसा नारायण, अमलप्रभा दास, कुसुम कारखानीस, सुमती तुळपुळे, अनुताई लिमये, आवाबेन हवेवाला, सुशीला कुबेर, विमल गरुड, कुसुम गोळे और कुसुम हेगडे इन महिलाओं ने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया और स्वतंत्रता आंदोलन में स्त्रियों का महत्वपूर्ण योगदान दिया।

आज अपना प्रिय भारत देश आजादी का अमृतमहोत्सव मना रहा है। आजादी के लिए कुर्बानी देने और देश के लिए लड़ने वाले वीरों में देश कि अनगिनत वीरांगणाएं भी थी जिन्होंने निडरताके साथ लड़कर बढ़-चढ़कर भारत की आजादी में अपना अहम योगदान दिया था। आज इन महीला स्वतंत्रता सेनानीयों को याद कर कर हमारा देश का प्रत्येक नागरिक खुद को गौरवान्वित महसूस करता है। यहां उद्धृत स्वतंत्रता सौदामिनीयों के अलावा असंख्य महिला नेताओं ने क्रांतिकारी गतीविधियों में भागीदारी दी जिसकी वजह से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन प्रभावशाली साबित हुआ और द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद अंग्रेजों ने भारत छोड़ने के लिये भूमिका तैयार करने के लिए



काशं

प्रा. समाविकारं

Chol


लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 1

The Stalwarts

लोकनायक बापूजी अणे महिला
महाविद्यालय, यवतमाल (महाराष्ट्र)

❖ संपादक मंडल ❖

प्राचार्य डॉ. दुर्गेश कुटे
प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड
सह. प्राध्यापक डॉ. संतोषकुमार गाजले
प्रा. सौरभ वगारे

 Harshwardhan Publication Pvt. Ltd.
Reg. No. U74120 MH2013 PTC 251205
At Post Limbanesh, Tq. Dist. Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell: 07688057695, 09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publishers & Distributors. www.vidyawarta.com



काशं

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 4

पायक आदर्शगीय दिवाकरराव पाडे, मा. उपाध्यक्षा सौ. माणिकताई कद्रे, मा. सचिव श्रीयुत चंद्रकांतजी रानडे, मा. अॅड. श्रीयुत उदय पाडे, मा. श्रीयुत मोहन जोशी, मा. श्रीयुत उद्धवराव येरे, मा. श्रीयुत विनोद देशपांडे के मार्गदर्शन, संचालन और नेतृत्व में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सर्वांगीण उन्नति में योगदान देने का सफल कार्य कर रहा है। अस्सी, आजादी का अमृत महोत्सव और महाविद्यालय का स्वर्ण जयंती महोत्सव के मणिकीर्तन योग पर आधुनिक भारत के निर्माताओं को केंद्र में रखकर इस पुस्तक प्रकाशन का निर्णय लिया गया था।

यह अत्यंत हर्ष और आनंद की बात है कि हमारे इस प्रकाशन कार्य में संपूर्ण देश से कई शोधकर्ताओं ने शोषालेख भेजकर सहयोग किया है, हम उनके ऋणी हैं। इस पुस्तक का प्रकाशन करने में महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. दुर्गेश कुटे इतिहास विभाग प्रमुख प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड, वाणिज्य विभाग प्रमुख प्रा. सौरभ वगारे की अहम भूमिका रही है। इस पुस्तक को ई-बुक तथा हार्ड बाउंड (सजिल्द) में प्रकाशन करने में बापूराव चोल्प और उनकी प्रकाशन संस्था विद्यावार्ता की अहम भूमिका रही है। साथ ही हमारी इस आयोजन में जिन लोगों से हार्दिक साधुवाद देता हूं। साथ ही हमें सहयोग दिया है, उन सभी के प्रति ने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में हमें सहयोग दिया है, उन सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। भविष्य में भी आप सभी का स्नेह इसी प्रकार बना रहे, इसी आशा के साथ.....

डॉ. संतोषकुमार गाजले

सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष,
लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय,
यवतमाल (महाराष्ट्र) ४४५००९

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 5

INDEX

- 01) लोकनायक बापूजी अणे यांचे सामाजिक कार्यातील योगदानाचे पुनरावलोकन... डॉ. दुर्गेश कुटे, यवतमाल || 108
- 02) The Invincible Lion Of Revolution - Rash Bihari Bose Assistant Professor Santosh Bhaskarao Gore, Yavatmal || 117
- 03) Newton of Library Science: Dr.S.R.Ranganathan Dr. Rajshri Vivek Dharmadhikari, Yavatmal || 139
- 04) Gandhism in Raja Rao's 'Kanthapura' Prof. Prashant S. Jawade, Kalamamb || 145
- 05) Actions Speak louder than words -Sudha Murthy Dr.Prachi Sharad Patharkar, Washim || 151
- 06) Contribution of Rabindranath Tagore in Literature Dr.Dinesh A. Gundawar, Dist- Yavatmal (M.S.) || 159
- 07) Developing character profile of appealing hockey player Dhanraj Pillay...DR. SUHAS D. YADAV (M.S.) || 167
- 08) Non-Violence: Gandhi's Way of Life Revealed through his Writing....G.B.Mane, Babhulgaon || 180
- 09) Stalwarts of Modern India A. D. Shroff. (Architect of Free enterprise and ... Dr Shruti R Panday || 186
- 10) Sri Aurobindo's Nationalism through his Poetic Works Prof. S. P. Mohod, Yavatmal || 196
- 11) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि अस्पृश्य हक्क लढा प्रा.डॉ.सुनिल रजपूत, जि.उस्मानाबाद || 101



Dr. Santosh Kumar Gajale

03

Newton of Library Science: Dr.S.R.Ranganathan

Dr. Rajshri Vivek Dharmadhikari
Librarian,

Loknaya Bapuji Aney Mahila Mahavidyalaya, Yavatmal

(Discusses contributions of Padmashri Dr.S.R.Ranganathan, the Father of Library Science in India in librarianship.)

Mentions the entry of Ranganathan into the library profession from that of a mathematician with no looking back. Describes the personal traits of Ranganathan, his unbounded energy and the principles and ethics followed by him.)

Professor Dr. Shiyali Ramamrita Ranganathan, the most outstanding library scientist produced by India had won international recognition for his contributions. For twenty years as the First librarian of the University of Madras, he has not only built up a world of books steadfastly and patiently but also brought in a bright tradition of scholarship at the University of Madras which is one of the oldest in the country.

Unique has been his contribution to the library movement in our country. Indeed he had been an architect of it and has carved for himself a place of honour in the library world as the Father of Library Science in India, having pioneered the study of Library Science and elevated it into a discipline by itself with openings for training and research in an otherwise virgin field. We had Dr. S.R. Ranganathan, an



काशिके

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 40
ideal blend of a librarian, a teacher, self-effacing humanist, a great lover of books and the gentle and effective trainer of young minds.

When Dr. Ranganathan proposed his celebrated Five laws of library science in 1931, the term library science was an anachronism in itself. At such a time Dr. Ranganathan strayed into the field of library science not by accident but by choice as he himself puts it. Dr. Ranganathan chose to enter the library field, many thought that he was committing a mistake. But once Dr. Ranganathan entered this profession and there was no looking back. He set himself wholeheartedly to upgrade its service and status. What he did and achieved has become a part of history. He had published his Five laws of library science and had conceived symbolically a world-wide philosophy of librarianship. The laws which he advocated were simple and did not project the impact that was brought in later years. The impact of each of the laws of library science as Ranganathan took the courageous step to call "librarianship" as "library science" brought about a revolution in the working of Libraries and Librarians. The contribution made by Dr. S. R. Ranganathan in the limited span of life given to him (1892 to 1972) can hold its own against those of the leading luminaries of any time.

To go through Dr Ranganathan's autobiography 'A librarian looks back' is a blessed experience. Dr Ranganathan was born with poor health and a slender frame. Voice did not boom nor squeak. But his will was made of the hardest steel from which hammers recoiled. Mathematics gave him a sharp mind. Ramayana and gita a resolve to entrench activity in Dharma.

Personal traits and philosophy of Dr. S. R. Ranganathan: Single Meal A Day

Like the ancient Rishis and Saints believe in self-input

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 41
sacrifice and punishment in order to achieve their intellectual and professional gain. Since Ranganathan wanted to work till late hours during the night he felt that with the heavy stomach consisting of South Indian dinner he could not keep his eyelids open for long. So he decided to give up the evening meal and continue like that for more than 40 years. His morning meal was the South Indian meal that he took between 9 a.m. and 9:30 a.m. There was no lunch and nothing to eat afterwards. He would only take about 200 gram of milk at night. It may be stated that Ranganathan did not taste tea or coffee throughout his life. He worked relentlessly without holidays, remaining more than 12 hours in the library.
No Reading Of Newspaper:

Ranganathan had given up reading newspapers as he observed that newspapers contained more political news and reports which did not concern him. It was a waste of time to read the paper and become emotional while losing the concentration in his studies relating to the profession. Another reason for not reading the newspaper was lack of time.

No Calling Of High Ups:

Dr. S. R. Ranganathan would not call on the high ups for courtesy or for personal gain, unless he was called by the person to discuss professional problems.

Evil to be Ignored:

Dr. S. R. Ranganathan had set certain standards for himself and for others. He would not retaliate when others would try to harm him or even do what was not ethically current. His principle was to ignore those who differ from him or work against him.

Value of character:

Dr Ranganathan attached great value to the character. He believed in the dogma, 'if health is lost something is lost



Handwritten signature or initials in the bottom right corner.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 44
network of libraries. His last wish was that some states and
the country as a whole would have suitable library laws so
that India could have 'free book service for all' through the
network of libraries based on legislation.

Dr.S.R.Ranganathan, a mathematician enters into the
Library Profession and with his unbounded energy for
dedicated work, his working pattern, his knack for involving
others into work and setting his own work standards achieved
a great honour the 'Father of Library Science in India' and "
Padma shri'" Award. He awoke a nation, his own and
astonished the world with his genius. He expressed his ideas
clearly with conviction, but he claimed no finality in his works.
He left them open-ended; he gave the new generation a new
path to follow. Dr. S.R. Ranganathan was a scientist par
excellence; his mind, a large reservoir of ideas, worked on
the Vedic principles of Ekvakyata and could momentarily
relate very far-fetched ideas. Prof.Dr. S.R. Ranganathan has
been the 'doyen' of library science in India. He was a versatile
genius. He applied his analytical mind to nourish and
strengthen library science. The whole world and particularly
India owe him a great deal for his great contributions to this
subject and overall library movement. Ranganathan was a
very special human being so it is rightly said, What Newton
was to physics, Dr.Ranganathan is to Library Science.

References:

- Kumar, P S G(1992) Ranganathan:A Multifaceted
Personality. Delhi: B.R.Publishing.
Kaula,P,N (1993) Some episodes from Ranganathan's
Life:Herald of library science, 32(2).

□□□



बापूजी अणे

प्रा. तैलिंग

लोकनायक, बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल

The Stalwarts

लोकनायक बापूजी अणे महिला
महाविद्यालय, यवतमाल (महाराष्ट्र)

❖ संपादक मंडल ❖

प्रचार्य डॉ. दुर्गा कुटे
प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड
सह. प्राध्यापक डॉ. संतोषकुमार गाजले
प्रा. सौरभ वगारे

Reg. No. U74126 MH2013 PTC 251205
**Vidyawarta Publication Pvt. Ltd.**
All Post, Lumbaganesh, Tq. Dist. Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell: 07588057695, 09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

3.2.2 Chel



का. २००

लोकनायक बापूजी आणि महिला महाविद्यालय, यवतमाल 6

- 12) व्यक्तित्व एवं कृतित्व - उषा प्रियंवदा ||107
डॉ. महेशसिंह अजितसिंह पवार, जि. अमरावती
- 13) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदियमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळ.... प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||114
- 14) आधुनिक भारताचे निमति- राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज डॉ. रामलाल चौधरी, भंडारा (महा.) ||122
- 15) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक, "भारतेन्दु हरिश्चंद्र" का अनुवाद के क्षेत्र में ...डॉ सुनीता बुदले, अमरावती ||132
- 16) साने गुरुजींच्या वाङ्मयातील संस्कारमूल्या डॉ. ममता व. दयाणे, यवतमाल ||142
- 17) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदियमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळप्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||149
- 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का सामाजिक आन्दोलन प्रा. डॉ. बहू एस. मानवटकर, जि. अकोला ||156
- 19) गांधीवादी विचारसरणी : एक जागतिक वारसा प्रा. डॉ. आनंदराव शिंदे, जि. नांदेड ||162
- 20) आधुनिक भारताचे निमति डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. डी.डी. जोषळे, जि. यवतमाल ||181
- 21) आधुनिक युग मे गुरुकुलपरंपरा के प्रतिपादक पद्मविभूषण पंडित "हरिप्रसाद चौरसिया"शुभम नरेश उदावत ||185
- 22) पंचकन्या

लोकनायक बापूजी आणि महिला महाविद्यालय, यवतमाल 7
प्रा.डॉ.सौ. वीरा पवन मोडवकर, जि.यवतमाल ||191

- 23) २० व्या शतकातील प्रतिभावान संस्कृत कवी प्रज्ञाभारती श्री.भा. बाणकर..... प्रा. दर्शना सायम, यवतमाल ||211
- 24) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या भारतीय संसदीय जोकशाहीच्या विचारांचे ...प्रा.स्वनिल म. रामटेके, यवतमाल ||217
- ✓ 25) आधुनिक भारताचे निमति डॉ.बी.आर.आंबेडकर प्रा.शैलेन्द्र देवीदास तेलंग, यवतमाल ||223
- 26) शिवप्रसाद सिंह और उनकी कहानियों में मुखरित मानवीय मूल्य प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री, यवतमाल ||235
- 27) आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. सविता द्वाी. रूक्मे, वाशिम ||244
- 28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का शैक्षिक दर्शन प्रोफेसर डॉ.लता वाघेला, यवतमाल ||249
- 29) हिंदी साहित्य जगत के शलाका पुरुष अज्ञेय प्रा. डॉ. सतोषकुमार गुंडप्पा गाजले, यवतमाल (महाराष्ट्र) ||261
- 30) डॉ० रामकुमार वर्मा का हिंदी साहित्य में योगदान: एक कवि के रूप में...प्रा. डॉ. नलिनी शशिकांत पशीने, गोंदिया ||271
- 31) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का अर्थशास्त्रीय लेखन प्रा.डॉ. कविता राजेंद्र तातेड, यवतमाल ||283
- 32) Depiction of the Versatile Personality of LokmanyaTilak Dnyaneshwar Gatkar, Yavatmal ||293



1/1/20

25

आधुनिक भारताचे निमिती
डॉ.बी.आर.आंबेडकर

प्रा.शैलेन्द्र देवीदास तेलंग
लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल

सारांश :- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर हे खरया अथनि आधुनिक भारताचे निमिती आहे, याचे कारण भारताच्या निमितीकरिता आणि विकासकरिता आवश्यक असणाऱ्या विविध बाबीकरिता त्यांनी दिलेले योगदान त्यांना खऱ्या अर्थाने आधुनिक भारताचे जनक मानले पाहिजे, त्याच्या आटपैलू व्याक्तीमत्वामध्ये भारतीय राज्यघटनेचे शिल्पकार, अर्थशास्त्रज्ञ, प्राध्यापक, समाजसुधारक, राजनितीतज्ञ, स्वतंत्र भारताचे पाहिले कायदेमंती, जागतिक दर्जाचे भारतीय न्यायशास्त्रज्ञ, वक्तील, पत्रकार, दलितांचे कैतारी, बौध्द चळवळीचे प्रेरणास्थान, दलितांचे भाग्यविधाता, कुशल नेता व संघटक, भारतराष्ट्र सर्वदृष्टीने समर्थ होण्याकरिता केलेले योगदान, राष्ट्राचे हीत जोपासनार देशभक्त, उत्तम संसदपटू, महान ग्रंथलेखक, अशा विविध पैलुनी विभूषित व्यक्तीमत्व यांना महामानव, भारतरत्न, विरवभूषण, ज्ञानाचे प्रतीक असलेले बोधिसत्व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे अखंड भारताकरिता सखील योगदान आहे.

बाबासाहेबांचे शिक्षण :- मुंबईतील मराठा हायस्कूलमध्ये व नंतर एल्फिस्टन या सरकारी शाळेत घेतले. ते एक प्रतिभावत उत्तम विद्यार्थी होते. त्यांनी सयाजीराव गायकवाड यांच्या शिफारशीने कोलंबिया विद्यापीठ आणि लंडन स्कुल ऑफ इकोनॉमिक्स या दोन्ही नामांकित विद्यापिठातून

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 222
करण्याची संधी संसदाल्मक लोकशाहीत लोकांना प्राप्त होते. संसदेचे स्वरूप चर्चा मंडळीय व्यासपीठासारखे ठरते जनतेच्या तक्रारी प्रश्न आणि दुःखांना वाचा फोडण्याचे महत्वाचे वेंद ठरते.

वरील सर्व गोटींना चिकीत्सकपूर्ण अभ्यास करून डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी भारतामध्ये संसदीय शासन पद्धतीचा रिककार केलेला दिसून येतो.

संदर्भ सुची:

- डॉ.गवई सुभाष व चव्हाण शांताराम निवडक राज्यघटना आणि आंतरराष्ट्रीय संबंध प्रकाशक रंगराव पाटील प्रशान्त पब्लिकेशन,जळगांव(२०१८)पृष्ठ क. ११
- लोट्टे राज तुलनात्मक शासन व राजकारण पिंपळपुरे ऑण्ड पब्लिशर्स नागपुर (२०१२)पृष्ठ क.५०,५१
- येणकर/रायम व कायदे सतीष राजकारणातील आधुनिक संकल्पना आणि विचार प्रकाशक रंगराव पाटील प्रशान्त पब्लिकेशन, जळगांव (२०१९)पृष्ठ क. १४०,१४१,१४२

□□□



Handwritten signature

अर्थशास्त्रातील डॉक्टरेट पदव्या संपादन केल्या. त्यांनी सामाजिक आणि आर्थिक अडचणीवर मात करून उच्च शिक्षण मिळविले ते कोलंबिया विद्यापीठातील सर्वात दुसऱा विद्यार्थी होते. यातून समाजासाठी आणि देशासाठी पहिला महत्वपूर्ण मुलमंत्र दिला. शिका समाजाची व स्वतःची प्रगती ही शिक्षणा शिवाय होणार नाही हे त्यांनी स्वतः कर्तृत्वाने सिध्द करून दाखविले.

पुस्तकासाठी घर :- डॉ. बाबासाहेबांचे पुस्तकावर अपार प्रेम होते. ते पुस्तक आणि भावकी यापैकी पुस्तकांची निवड करणारे पुस्तकप्रेमी होते. पुस्तकासाठी घर बांधणारे एकमेव व्यक्ती होते. त्यांनी पुस्तकालयाला राजगृह हे नाव दिले. राजगृहात मराठी, इंग्रजी पुस्तकाबरोबरच गुजराथी, उर्दू, फ्रेंच, जर्मनी, पारशी असे ५०००० हजार पेक्षा अधिक ग्रंथ आहे. या ग्रंथांमध्ये प्रामुख्याने राजकरणावर ३०००, इतिहासावर २६००, कायद्यावर ५०००, धर्मशास्त्रावर २०००, चरित्रे १२०० व इतर साहित्य ३०००, अर्थशास्त्रावर १०००, तत्वज्ञानावर ६०००, युद्धशास्त्रावर ३००० व इतर ७६०० असा ग्रंथाचा संग्रह आहे. त्यांच्या या आवडीमुळे ते जगातल्या शंभर विव्दानांच्या यादीमधील प्रथम क्रमांकाचा महाविद्वान, अर्थशास्त्रज्ञ डबल डॉक्टरेट मिळविणारे प्रथम दक्षिण आशियातील यादीमध्ये डॉ.एस्.सी. हे सर्वोत्तम पदवी मिळविणारे भारतातील प्रथम होते. लंडन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स मधील विद्यापिठातील आठ वर्षे कालावधीचा अभ्यासक्रम फक्त दोन वर्षे आणि तीन महिन्यामध्ये पूर्ण करणार कुशल बुध्दिमान विद्यार्थी.

बौध्द धम्माची दीक्षा :- भारतातील हजारो वर्षांपासून शोषित समाजाच्या दीन-दलितांच्या उध्वरासाठी भारताच्या मातीत रूजलेला बौध्द धर्म १४ ऑक्टोबर १९५६ रोजी नागपूर येथील दीक्षाभुमी येथे हजारो बौध्द ावासांबत स्वीकारला. त्यानंतर १६ ऑक्टोबर १९५६ रोजी चंद्रपूर येथे सुध्द लाखी दलितांना बौध्द धर्माची दीक्षा दिली. बौध्द धम्मातील भिक्खु संघाने त्यांना बोधीसत्व ही बौध्द धर्मातील एक उच्च पदवी देऊन त्याचा सन्मान केला. सन १९९० रोजी त्यांना मरणोत्तर भारतरत्न हा भारतातील सर्वोच्च पुरस्कार देण्यात आला.

शिका, संघटित व्हा आणि संघर्ष करू ह्या मुलमंत्र :- त्यांनी विद्यार्थ्यांसाठी व समाजाच्या प्रगतीसाठी वरील मुलमंत्र दिला. या मुलमंत्राचा उपयोग करून बौध्द समाज प्रगती करीत आहे. बाबासाहेबांनी समाजासाठी संपूर्ण आयुष्य खर्ची घातले. त्याकरिता त्यांनी स्वतःची व कुटुंबाची सुध्दा पत्वा केलेली नाही. त्यांनी समाजाच्या कल्याणासाठी आयुष्यभर संघर्ष केला. त्याय मिळविण्यासाठी संघटीत होऊन संघर्ष केला पाहिजे तरच त्याय मिळेल यावर त्यांचा विश्वास होता. भारतीय समाजातील अनेक प्रश्न त्यांनी या मुलमंत्राचा उपयोग करून संघर्षाने सोडविली आहेत. **आर्थिक धोरण :-** डॉ. बाबासाहेब आर्बोडकरांचा आर्थिक धोरणाविषयक दृष्टिकोण हा त्यांच्या घेतलेल्या अर्थशास्त्राच्या शिष्याणातून होतो त्यांनी एम.ए. १९१५ रोजी विषय इस्ट इंडिया कंपनीचे प्रशासन आणि वित्त पी.एच.डी. करिता असलेला विषय ब्रिटीश भारतातील प्रांतीय वित्त उगम लंडन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स तर लंडन विद्यापीडाने १९२४ साली सर्वोच्च पदवी डी.एस्.सी. पदवीचा विषय रूपयाची समस्या : उदम आणि उपाय या प्रबंधाकरिता बहाल केला. त्यांनी मांडलेली अनुत्पादक रोजगार ही संकल्पना त्यांनी मांडल्या नंतर अनेक वर्षांनी लुथ्या बरोजगारीची संकल्पना मुर्फसे या अर्थतज्ञांनी मांडली. ही संकल्पना अर्थशास्त्रात प्रसिध्द आहे. डॉ. बाबासाहेबांनी आर्थिक नियोजन, सिंचन, बीज इत्यादी विषयावर विपुल लिखान व भाष्य केले. या सर्व समस्यांचे विश्लेषण इतके सखोल व विपुल आहे की, ते निरिक्षणे, निष्कर्ष आणि शिफारशी सध्याच्या भारतातील आर्थिक समस्या सोडविण्याकरिता आजही उपयुक्त ठरत आहेत. घोडक्यात म्हणू शकतो की, ते एक प्रशिक्षित आणि व्यासंगी अर्थतज्ञ होते.

श्रम विभागणी :- डॉ. बाबासाहेबांच्या आर्थिक तत्वज्ञानाची चर्चा करतांना आर्थिक समस्येला त्यांनी जातीव्यवस्थेला केंद्रस्थानी ठेवले आहे. भारतातील मागास जातीवर, अस्पृश्य समाजावर होणारे गंभीर परिणाम कसे सोडविता येईल यांचा त्यांनी प्रामुख्याने विचार केला. भारतीय जातीव्यवस्था ही श्रमविभागणीवर आधारित आहे. त्यामुळे जातीवर आधारित व्यवसाय ठरतात. त्यांनी भारतातील निरनिराळ्या



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, स्वतन्त्रमाल 226

जातीव्यवस्थेच्या आर्थिक पैलूचा अभ्यास केला. जातीने उत्पादन संबंधांना आधार पुरविला या शिवाय उत्पादनासंबंधीची मालकी वरिष्ठ जातीच्या हातात आहे तर शारीरिक श्रमाची विभागणी खालच्या समाजात अधिक प्रमाणात दिसून येते नव्हे तर श्रमीकांची विभागणीसुद्धा विषम स्वरूपाची आहे. त्यांना ही व्यवस्था जी कायमस्वरूपी व पक्की आहे ती बदलविण्याकरिता समाजाची रचना बदलविण्याचे काम केले. या व्यवस्थेमुळे खालच्या समाजातील व्यक्तीला स्वतःच्या उपजिविकेचा मार्ग निवडण्याचे स्वतंत्र नाकारण्यात आले. जगात इतर कुठेही जातीवर आधारित श्रमविभागणी पाहावयास मिळत नाही.

शेतीचे राष्ट्रीयीकरण :- भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. भारतीय शेतीवर लोकसंख्येचा प्रचंड भार, भारतीय जनतेचे शेती हे उपजिविकेचे प्रमुख व महत्वपूर्ण साधन आहे. वारसा हक्क कायदा हे जमिनीच्या विभाजनाचे प्रमुख कारण नाही तर इतर कारणेही शेतीच्या लहान धारणक्षेत्राचे आहे. याचे विवेचन त्यांनी 'भारतातील लहान धारणक्षेत्र आणि त्यावरील उपाय' या ग्रंथात शेतीक्षेत्रातील बदलाचा विचार मांडला आहे. शेतीचे धारणक्षेत्र हे लहान व विखुरलेले असल्याने समस्या अधिकच गंभीर झाली आहे. जमीन धारणा पध्दतीमुळे दलित व भूमिहीन जनतेचे जमिनदाराकडून मोठ्या प्रमाणात शोषण झाले. जमिनदारी पध्दती ही लोकशाही व समाजवाद विरोधी आहे. मोठे शेतकरी लहान शेतकऱ्यांचे शेत मजुरांची पिळवणूक करतात. त्यामुळे लहान शेतकरी भूमिहीन होतात. जमिनदारी पध्दतीमुळे जातीव्यवस्था ही अधिक मजबूत झाली आहे. त्यांनी किफायतीशीर धारण क्षेत्र म्हणजेच सुसंगत जमिनीचे आकारमान नसून कार्यक्षम मशागत करण्यासाठी आवश्यक इतर सामग्री यांचे योग्य संतुलन साधने होय. धारण क्षेत्र वाढविणे हा भारतीय शेतीपुढील प्रश्न नाही तर त्या जोडीला इतर साधने पुरेशा प्रमाणात उपलब्ध नसणे हा महत्वपूर्ण प्रश्न आहे, असे सांगितले.

इंजनाकडून भारतीय जनतेची पिळवणूक :- १७९२ ते १८५७ या काळात ब्रिटीश सरकारने भारतीय जनतेची प्रचंड पिळवणूक, शोषण केले. याची आकडेवारी देऊन त्यांनी स्पष्टीकरण केले. त्या काळात

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, स्वतन्त्रमाल 227

इंजनांनी जो महसूल किंवा कर लावला. त्यात पाच पट वाढ केली, त्यात निम्न्यापेक्षा जास्त जमिनीवर कराचा भार आहे. शेतीवर त्याच्या जाणारा महसूल कसा दोषपूर्ण आहे. त्यामुळे शेतकरी वर्ग कसा संकटात आला, याचे विवेचन त्यांनी केले. इंग्रज सरकारने प्रचंड प्रमाणात कर्ज घेतले त्या कर्जात सतत वाढ होत गेली. त्या कर्जाचे बाराच खर्च हा शाखावर, सैन्यावर व व्याजाच्या भरणा म्हणजे अनुत्पादक खर्च म्हणून केला गेला व अत्यंत कमी खर्च आर्थिक विकासावर केला गेला. १८५८ मध्ये इस्ट इंडिया कंपनी करखास्त करण्यात आली. त्यावेळी ६.९३ लाख पाउंड कर्जाचा बोजा भारतीय जनतेवर लादला गेला. ब्रिटीश सरकारने काही चांगल्लेही कार्य केले. त्यात शिक्षणामध्ये सुधारणा खर्च, शांतता प्रस्थापित केली. सुधारित कायदे व त्याची अंमलबजावणी वरील खर्च होय.

बहिष्कृत हितकारणी सभा :- असुर्यांच्या उन्नीकरिता सामाजिक चळवळ उभी करण्याच्या दृष्टिने डॉ. बाबासाहेबांनी २० जुलै १९२४ रोजी मुंबई येथे बहिष्कृत हितकारणी सभेची स्थापना केली. त्याचा उद्देश सामाजिक व राजकीयदृष्ट्या मागास भारतीय समाजाचा इतरांच्या बरोबरीने आणणे हा होता. समाजाला आर्थिक, राजकीय व सामाजिक जागृती निर्माण करणे हा त्याचा उद्देश होता. त्यांनी सायमन कमिशनकडे एक पत्र सादर केले व त्यात त्यांनी मागासवर्गीयाकरिता नामनिर्देशन तत्वावर जाग आरक्षित ठेवण्यासंबंधीची मागणी केली. त्यात त्यांनी भूदल, नौदल व पोलीस खात्यात मागासवर्गीय यांची भरती करण्यासंबंधीची मागणी केली. ह्या सभेमाफत असुर्यांच्या कल्पनासाठी शाळा, वसतिगृहे व ग्रंथाले सुरू करण्यात आली. यातून समाज सुशिक्षित व जागृत बनावा. हा त्यांचा मुख्य उद्देश होता. त्यांनी हे सर्व करण्याकरिता बुध्दाच्या शांतीपूर्ण मार्गाचा अवलंब केला. याची प्रसिध्दी त्यांनी त्यांच्या पाक्षीकातून दिली. त्यांच्या पाक्षीकांमध्ये मुकनायक, समता, बहिष्कृत भारत यातून या शिवाय त्यांच्या भाषणातून व लिखानातून समाजाच्या हृदयावर आणि मेंदूवर आघात करून जनतेचे विचार बदलविणे हा त्यांचा मुख्य हेतू होता.



Handwritten signature in Marathi script.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, वतमाल 228
 रुपयापुढील समस्या, उगम व उपाय :- या डॉ. बाबासाहेबांच्या जगपसिद्ध ग्रंथात १८०० ते १८९३ या काळातील विनियम प्रमाण पद दतीमुळे रूपयाचा विनियम दर कसा बदलत गेला. त्यामुळे इंग्रजांच्या साम्राज्यवादी आर्थिक धोरण कसे होते याचा वाईट परिणाम भारतीय अर्थव्यवस्थेवर कसा झाला याची चिकित्सा केली आहे. भारतासारख्या विकसनशील देशाला कोणती चलन पध्दती चांगली याकरिता दोन पर्याय आहेत. १) सुवर्ण परिमाण २) सुवर्ण विनियम परिमाण दोन्हीतील शोडक्यात फरक म्हणजे सोन्याची नाणे म्हणजे सुवर्ण परिमाण होय आणि सुवर्ण विनियम परिमाण म्हणजे रुपया या कागदी चलनाचा उपयोग होतो. व त्याला सुध्दा पाठबळ सोन्याचे असते पण १९३३ नंतर हे पाठबळ बंद झाले आहे.

भारतासारख्या विकसनशील देशासाठी सुवर्ण विनियम परिमाण पध्दती चांगली कारण ती पध्दती लवचीक आहे, असे केन्स यांनी सुचविले. याला भारतातील लहान मोठ्याने समर्थन केले. मात्र डॉ. बाबासाहेबांनी याला कडाडून विरोध केला. १९२५ साली 'हिल्टन यंग कमीशन'च्या रिफरन्सीनुसार १ एप्रिल १९२५ रोजी आर.बी.आय.ची स्थापना झाली. या कमिशन पुढे त्यांनी साक्ष दिली की, भारतासारख्या विकसनशील देशा करिता सुवर्ण विनियम परिमाण पध्दती योग्य नसून, सुवर्ण परिमाण (Gold Standard) ही योग्य पध्दती आहे. कारण लवचिकता हा गुण जरी या म्हणजे सुवर्ण विनियम परिमाण (Gold Exchange Standard) पध्दतीत असला तरी हा गुण दुधारी तलवार आहे. त्याचा जेवढा फायदा होईल तेवढाच जर सरकार बेजबाबदार असेल तर त्या लवचिकेवर वाईट परिणाम देखील होऊ शकतो. परिणामी महागाईत वाढ होईल. ही महागाई आजतागायत भोगत आहे. या शिवाय चलन निर्मितीवर कोणाचा तरी अंकुश असावा, असे केले नाही तर सर्वसामान्य माणूस हा आर्थिक अडचणीत येईल. हा डॉ. बाबासाहेबांचा युक्तीवाद होता. पुढे १९२४ साली हिल्टन यंग कमीशनचा अहवालाचा रिपोर्ट सादर केला गेला. १९९० चे आरबीआयचे वार्षिक अहवाल पाहिले तर त्यामध्ये त्या कालावधीत वित्तीय तूट कमी

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, वतमाल 229
 करण्यावर भर देण्यात आला आहे. शिवाय आर.बी.आय. कडून अनियंत्रित पतपुरवठा करून घेतला होता. द्रव्यारी बील ९० दिवसांचे करून घेतले होते. या सत्रवरील उपाय योजना डॉ. बाबासाहेबांनी ७५ वर्षांपाचीच सांगितली होती. म्हणून त्यांचे आर्थिक लिखाण हे शार्वत मूल्य असलेले लिखाण आहे. भारतीय रुपयाचा आधार हा सोने असला पाहिजे चांदी नाही असेही त्यांनी सुचविले त्यांच्या एका लेखामध्ये रुपयाचे मूल्य पौंड हिशेबाने १ शिलिंग ४ पेंस किंवा १ शिलिंग ६ पेंस ठरवावे हेच राष्ट्रकरिता योग्य आहे. त्यांनी सुचविलेला विनियम दर म्हणजे १ रुपया १ शिलिंग ६ पेंस हा दर स्वीकारला गेला. तीन महत्त्वपूर्ण बील :- डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी तीन महत्त्वपूर्ण बिल आणली

१) खोली पध्दती :- डॉ. आंबेडकरांच्या प्रयत्नांनी हे बील १९४९ मध् ये आणले ही पध्दत रद्द करण्यात आली. खोत पध्दत म्हणजे मुख्यता उच्च जातीमधील जमिनदारी पध्दती होय. कोकणातील भूमीहीन व लहान शेतकऱ्यांची शोषण करणारी ही पध्दती रद्द करण्याकरिता सर्वर्ष करावा लागला.

२) महार वतन :- महार वतन रद्द करण्याचा कायदा 'बलूट' म्हणजे (भीक मांगणे) वतन म्हणून किंवा बक्षीस म्हणून त्या काळात महायत्ना एक जमिनीचा तुकडा दिले जायचा ही पध्दती १९२८ साली महार वतन कायदात सुधारणा करण्याचे बील मांडले. ही पध्दत गुलामगिरीची पध्दती आहे, ती नष्ट झाली पाहिजे म्हणून हे बील मांडले गेले. यातून त्यांना सांगायचे होते भाकरी पेशा स्वाभिमान महत्वाचा.

३) बॉम्बे मनी लॉर्डिंग बील :- या बिलाचा उल्लेख डॉ. आंबेडकरांच्या प्रकाशित लेखान सापडत नाही. याला सावकारी कायदा देखील म्हणतात. म्हणजे मुंबईतील पठाण, सावकारी पध्दतीतून शोषण करायचे, चक्रवाढ पध्दतीने व्याज वसूल करायचे हे शाब्दविण्याकरिता त्यांनी पयल केले, त्यांनी सांगितले की कर्जदाराला खाते पुस्तिका घ्यावी त्यात कर्जाचे पूर्ण विवरण असावे.

कामगार नेता :- कामगार, शेतकरी आणि महिलांच्या संदर्भात त्यांनी



Handwritten signature in black ink.

विजय झाला ही वास्तविकता बाब त्यांनी स्पष्ट केली. त्यांनी सांगितले की, कोणत्याही समाजाचा विकास कार्याचा आसल्यास त्या समाजातील महिलांचा विकास आधी व्हावयास पाहिजे कारण ज्या समाजातील महिलांचा विकास होईल त्या समाजाचा विकास सर्वात आधी होईल असे त्यांनी सांगितले.

बीज शब्द :- अर्थशास्त्र, दलित, बोधीसत्व, शिक्षण, समाजकारण, राजकारण, संविधान, स्वातंत्र्य, वील, न्याय, समता, राष्ट्रीयकरण, समाजकारण.

संदर्भ सूची :-

१) Dr. Babasaheb Ambedkar The Architect of Modern India - The Commemorative Volume in Celebration of Dr. B.R. Ambedkar 125th Birth Anniversary.

२) बुध्द आणि त्याचा धम्म - डॉ. बी.आर. आंबेडकर (त्यांच्या मूळ इंग्रजी ग्रंथाचा मराठी अनुवाद)

३) दि प्रॉब्लेम ऑफ दी रूपी इट्स ओरीजीन अँड इट्स सोल्युशन चे मराठी भाषांतर (रूपयापुढील समस्या : उगम व उपाय)

४) भारतातील आर्थिक सुधारणा व आणि दलित एक आंबेडकरी दृष्टिकोण डॉ. भालचंद्र मुणगेकर

५) क्रान्ती आणि प्रतिक्रान्त - डॉ. बी.आर. आंबेडकर - प्रबुध्द भारत पुस्तकालय आणि प्रकाश व्यवसाय, नागपूर

६) शुद्र पूर्वी कोण होते? - डॉ.बी.आर. आंबेडकर - अनुवाद - चांगदेव भ. खैरमोडे - सुगत प्रकाशन नागपूर - ४४००१७.

७) डॉ. आंबेडकर आधुनिक विज्ञान आणि मानव - मा.प. शेरारट डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर अध्यासन नागपूर विद्यापीठ, नागपूर.

८) धर्मनिरपेक्ष लोकव्याही राष्ट्रांचे घातक कोण? - चंद्रप्रकाश वानखडे यवतमाल - सुधीर प्रकाशन, वर्धा

26

शिवप्रसाद सिंह और उनकी कहानियों में मुखरित मानवीय मूल्य

प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री

श्रीमती नानकीबाई वाघवानी कला महा. यवतमाल

महात्मा गांधीजी का कहना है—मानवता की महानता मानव होने में नहीं, बल्कि मानवीय होने में है। उसी प्रकार जयशंकर प्रसाद का भी कहना है— मानवता की नाश करके व्यक्ति खुद अपना ही नाश कर रहा होता है। मानवता का नाश करके कोई भी धर्म जीवित नहीं रह सकता और बुकमार्क्स ने भी कहा— बह समाज सुदृढ समाज है, जहाँ इसानियत निभाने को सबसे बड़ा महत्व दिया जाता है। यह सभी उदारहण मानवता या मानवीयता के महत्व के बारे में बताते हैं। डॉ. शिवप्रसाद सिंह भी यही बताते हैं कि मनुष्य से बड़ा कोई इकाई नहीं है और मनुष्यता से बढ़कर कुछ मजहब नहीं है। यह सत्य कि मनुष्यता ही से बढ़कर कुछ भी उत्तम नहीं है। क्योंकि मनुष्य में निहित मनुष्यता ही पशु से अलग कर देती है। मनुष्य में निहित मानवीय गुणों के कारण ही वह महान बनता है। मानवीय गुणों का आधार मानवीय मूल्यों को आत्मसात करके उनका अनुसरण करना ही मानवता का मानवीयता कह सकते हैं।

मूल्यों के बारे में यह कहा गया कि किसी भौतिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गण से है, जिसके द्वारा मनुष्य के किसी उद्देश्य या लक्ष्य की पूर्ति होती है। इन मूल्यों से व्यक्ति के आचरण, व्यक्ति और कार्यो पर प्रभाव पडता है। दृष्टिकोण के आधार पर मूल्य



Handwritten signature or mark.

The Stalwarts



लोकनायक बापूजी अने महिला महाविद्यालय

यवतमाल ४४५००१ (महाराष्ट्र)

संपादक मंडळ
प्राचार्य डॉ. दुर्गेश कुंटे
प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड
सह.प्रा.डॉ. संतोषकुमार गाजले
प्रा. सौरभ वगारे

Cha
3.2.2
श्री मोक्ष



काशिके

INDEX

- 01) लोकनायक बापूजी अणे यांचे सामाजिक कार्यातील योगदानाचे पुनरावलोकन.. डॉ. दुर्गेश कुटे, यवतमाल ||08
- 02) The Invincible Lion Of Revolution - Rash Bihari Bose
Assistant Professor Santosh Bhaskarao Gore, Yavatmal ||17
- 03) Newton of Library Science: Dr.S.R.Ranganathan
Dr. Rajshri Vivek Dharmadhikari, Yavatmal ||39
- 04) Gandhism in Raja Rao's 'Kanthapura'
Prof. Prashant S. Jawade, Kalamb ||45
- 05) Actions Speak louder than words -Sudha Murthy
Dr.Prachi Sharad Patharkar, Washim ||51
- 06) Contribution of Rabindranath Tagore in Literature
Dr.Dinesh A. Gundawar, Dist- Yavatmal (M.S.) ||59
- 07) Developing character profile of appealing hockey player
Dhanraj Pillay...DR. SUHAS D. YADAV (M.S.) ||67
- 08) Non-Violence: Gandhi's Way of Life Revealed through his
Writing....G.B.Mane, Babhulgaon ||80
- 09) Stalwarts of Modern India A. D. Shroff- (Architect of Free
enterprise and ... Dr Shruti R Panday ||86
- 10) Sri Aurobindo's Nationalism through his Poetic Works
Prof. S. P. Mohod, Yavatmal ||96
- 11) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर आणि अस्मृश्य हक्क लढा
प्रा.डॉ.सुनिल रजपूत, जि.उस्मानाबाद ||101

लोकनायक
बापूजी अणे
महिला महाविद्यालय,
यवतमाल

संशोधन,
महाविद्यालय,



काशिके

Sri Aurobindo's Nationalism through his Poetic Works

Prof. S. P. Mohod

Loknayak Bapuji Aney Mahila, Mahavidyalaya, Yavatmal

=====*****=====

Sri Aurobindo was one of the most creative and significant figures in the history of Indian renaissance and Indian nationalism. K. R. Shrinivasa commented on Aurobindo that 'He was not merely a writer who happened to write in English but really an English writer' he contributed in the English poetry. Aurobindo Ghosh was born on 15 August 1872 at Calcutta. Sir Aurobindo's birthday is a good deal to remind ourselves of the continuing relevance of Sir Aurobindo's view of nationalism for today and tomorrow India. With a view to exploring Sri Aurobindo's political creed as well as revolutionary ideas and practices that are deeply embedded in his early political writings and speeches. The germination subsequently blossoming of patriotism has been traced out in the "Patriotic love and decisive action". While a student in England, young Aurobindo used to receive from his father newspaper cutting of the Bengali marked with passage pertaining to the cases of ill treatment of Indians at the hands of Englishmen. His young mind was imbued with revolutionary ideas and inspiration from a study of the history of Ireland and America. He could effortlessly detect the nefarious intention of the anglo-saxon bureaucrats and their representative designs behind colonial rules and policies which his con-

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 97

temporarily politician failed to grasp. An elaborate analysis of the concept of nationalism as a political program and Sri Aurobindo's unique contribution to spread it among the people of India has been made in Indian nationalism and Sri Aurobindo. In his considered view, a nation cannot be made because it is an organism. He observed that the national leader embodying a national force that expresses itself in an opportune moment. He poses British Colonial rule and its modernism as exotic forces contradictory to Hindu ethos and clash with the hegemonic control of the landed gentry over the society.

"The Doctrine of Passive Resistance 'enunciated by Sri Aurobindo and Gandhiji's movement of Satyagraha both derive their germinal ideas essentially from Thoreau's concept of "Civil Disobedience". Sri Aurobindo prescribed for a nationalist to show deep concern in four areas: Swadeshi, Boycott, Swaraj and the last one is National Education. The Revolutionary booklet called 'Bhavani Mandir' was impounded by the British police and was considered as spiritual dynamite to show of the Colonial rule over India. It caused endless nightmares to British administration, but to the contrary it proved to be a mighty inspiration and Supreme driving force to countless revolutionaries.

During 22nd session of Indian National Congress at Kolkata in December 1906, Aurobindo Ghosh was the surprise participant along with the stalwarts of Indian politics: Firoz Shah Mehta, Gopal Krishna Gokhale, Surendra Nath Banerjee, Bal Gangadhar Tilak, Bipin Chandra Pal, Lala Lajpat Rai for the critical exercise of formulating the resolution. Aurobindo has already made his mark of strong presence in political circle as the brilliant editor of Bande Mataram, the daring extremist news paper. The bedrock of political philosophy of Aurobindo was his concept of spiritual nationalism



Handwritten signature

Indian thoughts, Indian character, Indian perception, India energy, Indian greatness and to solve problems that perplexed the world in Indian spirit and from the Indian standpoint. Sri Aurobindo is remembered primarily as a Sage and Mystic. His role in the Independence movement often goes unacknowledged. Although he withdraws from the struggle early, choosing to follow another calling in Puducherry, he played a truly central role in India's march to Independence. In his Bande Mataram articles, the nationalist agenda emerged as the only progressive path towards building the future India. He pleaded for independence for India in the wider interest of humanity. He said "Our ideal of patriotism proceeds on the basis of love and brotherhood and it looks beyond the unity of nation and envisages the ultimate unity of mankind ". In the midst of the darkness and distress of today's world, Aurobindo provides a ray of hope to mankind. He envisaged a new man, a new society and a new civilization.

Conclusion:

Aurobindo's work focused the true nationalism and zeal to free the nation from shackles of British slavery. To conclude with Dr. Sarvapalli Radhakrishnan. "Aurobindo was the greatest intellectual of our age and major force for the life of the spirit. India will not forget his services to politics and philosophy and the world will remember with gratitude, his invaluable work in the realm of philosophy and religion".

References:

Collected works of Sri Aurobindo Vol 8 pp 168-169
<http://magazines.odisha.gov.in>
Sri Aurobindo's Life Divine

□□□



Handwritten signature

The Stalwarts



लोकनायक बापूजी अने महिला महाविद्यालय

ययलमाल ४४५००९ (महाराष्ट्र)

संपादक मंडळ
प्राचार्य डॉ. दुर्गेश कुंटे
प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड
सह.प्रा.डॉ. संतोषकुमार गाजले
प्रा. सौरभ वगारे

3.2.2
Ch. B
10/11/10



का. २००

- लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 6
- 12) व्यक्ति एवं कृतित्व - उषा प्रियंवदा
डॉ. महेंद्रसिंह अजितसिंह पवार, जि. अमरावती ||107
- 13) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक वैदिक्यमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळ..... प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||114
- 14) आधुनिक भारताचे निर्माते- राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज डॉ. रामलाल चौधरी, भंडारा (महारा.) ||122
- 15) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक "भारतेन्दु हरिश्चंद्र" का अनुवाद के क्षेत्र में ...डॉ. सुनीता बुट्टे, अमरावती ||132
- 16) साने गुरुजींच्या वाङ्मयातील संस्कारसूत्रे डॉ. ममता व. दयणे, यवतमाल ||142
- 17) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक वैदिक्यमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळप्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||149
- 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का सामाजिक आन्दोलन प्रा. डॉ. बबू एस. मानवटकर, जि. अकोला ||156
- 19) गांधीवादी विचारसरणी : एक जागतिक वारसा प्रा. डॉ. आनंदराव शिंदे, जि. नंदेड ||162
- 20) आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. डी.डी. जोषळे, जि. यवतमाल ||181
- 21) आधुनिक युग मे गुरुकुलपरंपरा के प्रतिपादक पद्मविभूषण पंडित "हरिप्रसाद चौरसिया"शुभम नरेश उदावंत ||185
- 22) पंचकन्या

- लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 7
- प्रा.डॉ.सौ. वीरा पवन मोडवकर, जि.यवतमाल ||191
- 23) २० व्या शतकातील प्रतिभावान संस्कृत कवी प्रज्ञाभारती श्री.भा. वर्णेकर..... प्रा. दर्शना सायम, यवतमाल ||211
- 24) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या भारतीय संसदीय जोकराहीच्या विचारांचे ...प्रा.स्वनिल म. रामटेके, यवतमाल ||217
- 25) आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ.बी.आर.आंबेडकर प्रा.शैलेंद्र देवीदास तेलंग, यवतमाल ||223
- 26) शिवप्रसाद सिंह और उनकी कहानियों में मुखरित मानवीय मूल्य प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री, यवतमाल ||235
- 27) आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. सविता व्ही. रूक्मिणी, वाशिम ||244
- 28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का शैक्षिक दर्शन प्रा.डॉ. सतीशकुमार गुंडप्पा गाजले, यवतमाल (महाराष्ट्र) ||249
- 29) हिंदी साहित्य जगत के शलाका पुरुष अज्ञेय प्रा. डॉ. सतीशकुमार गुंडप्पा गाजले, यवतमाल (महाराष्ट्र) ||261
- 30) डॉ. रामकुमार वर्मा का हिंदी साहित्य में योगदान: एक कवि के रूप में...प्रा. डॉ. नलिनी शशिकांत पशीने, गोंदिया ||271
- 31) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का अर्थशास्त्रीय लेखन प्रा.डॉ. कविता राजेंद्र ताटेड, यवतमाल ||283
- 32) Depiction of the Versatile Personality of LokmanyaTilak Dnyaneshwar Gatkar, Yavatmal ||293



Handwritten signature in Marathi script.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 248
बेटे का विवाह एक विधवा से कराया। उन्होंने बहुपत्नी प्रथा और बाज
विवाह के खिलाफ भी काम किया।
विचार और शिक्षाएँ—

१. वे विधवा-पुनर्विवाह के प्रबल समर्थक थे।
२. उन्होंने संस्कृत कॉलेज में आधुनिक पश्चिमी विचारों का अष्ट
ययन आभार कराया था।
३. विधवा-पुनर्विवाह को कानूनी वैधता प्रदान करने वाले अष्टि
नियम को पारित करने में महत्वपूर्ण भूमिकी थी।
४. बंगाली भाषा के विकास में भी योगदान दिया।
५. वे कई समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं के साथ भी गभीरता से
जुड़े थे और सामाजिक सुधारों की वकालत करने वाले महत्वपूर्ण लेख
लिखे।

ईश्वरचंद विद्यासागर एक ऐसे समाज सुधाकर थे जिन्होंने
समाज में फैली गलत विचारधारा, अधश्च्य, परंपरा, रूढ़ियाँ, बालविवाह,
बहुविवाह और विधवाओं पर हो रहे अन्याय का विरोध किया। उसी का
नतीजा था कि विधवा पुनर्विवाह कानून—१८५६ पारित हुआ। उन्होंने
खुद एक विधवा से अपने बेटे की शादी करवाई थी। उनके इन्ही प्रयासों
ने उन्हें समाज सुधारक के तौर पर पहचान दी। नैतिक मूल्यों के संरक्षक
और संस्कृत के ज्ञानी थे। साथ में अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं के ज्ञान
का समन्वय करके भारतीय और पाश्चात्य परंपराओं के श्रेष्ठता को
हासिल किया जा सकता है। ऐसा उनका मानना था। ईश्वरचंद
विद्यासागर को राजा राममोहन राय का उत्तराधिकारी माना जाता है।
उनके योगदान से आज हम आधुनिक भारत में जी रहे हैं।

संदर्भ सूची—

१. आधुनिक भारत के निर्माता पं. जवाहरलाल नेहरू—डॉ. एस.
एन. सिंह
२. आधुनिक भारत—शंकर दत्तात्रेय जावडेकर
३. आधुनिक भारत का इतिहास—सं. शिवकुमार गुप्त

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 249

28

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का शैक्षिक दर्शन

प्रोफेसर डॉ. लता वावेल
विभाग प्रमुख, गृहअर्थशास्त्र विभाग,
लो. बा. अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल

सारांश :

शिक्षा का मानवी जीवन में अत्यधिक महत्व है। शिक्षा ही वह
साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों में पृथक् करती है
। शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को
आगे आनेवाली पिढी को हस्तांतरित करने योग्य बनाती है। शिक्षाद्वारा
बालक का सर्वांगीण विकास होता है और बालक सामाजिक जीवन में
अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र विकास में सक्रीय योगदान देता
है। शिक्षा बालक को वातावरण के साथ अनुकुलन करने की क्षमता
प्रदान करती है, साथ ही वातावरण में अपनी सुविधानुसार परिवर्तन
करने की शक्ति एवं ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा के विभिन्न आयाम
हैं, जिनके माध्यम से बालक, युवाओं और प्रौढ़ों को शिक्षित किया जा
सकता है।

प्रस्तावना :

भारतीय समाज प्रबोधन क्रांति में अनेक राजकीय नेता एवं
समाजसुधारकों का योगदान है। इनमें डॉ. बाबासाहेब का योगदान
विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को बहोत
जादा महत्व दिया। इतनाही नहीं शिक्षा को उन्होंने अपने जिंदगीका



बाबासाहेब

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 252
 भी पुरूषों के साथ आगे आना चाहिए तथा बच्चों पर विवाह बोल तब तक नहीं डालना चाहिए, जब तक वे आर्थिक दायित्व को वहन करने में समर्थ नहीं हो जाए। स्त्रियों को भी पुरूषों के समान शिक्षा ग्रहण करके अपने पति से मित्रता एवं समानता का दावा करे, अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे।

भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। इस प्रजातन्त्रात्मक देश में नागरिकों को अपने कर्तव्यों व अधिकारों का ज्ञान कराने, अनपढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाने के लिए सामाजिक शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। डॉ. मणी के अनुसार समाज शिक्षा बहुमुखी प्रयास है, क्योंकि भारत जैसे जनतंत्रीय, धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में इसका प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति में न केवल नागरिक

अधिकारों की वरन उत्तरदायित्व की भी सजीव चेतना का विकास करना है। वयस्क नागरिकों की आवश्यकता हेतु, देश की प्रगती एवं सुरक्षा हेतु नागरिकों को विकास कार्यक्रमों का प्रशिक्षण प्राप्त होना आवश्यक है। नागरिकों को सामाजिक शिक्षा की आवश्यकता के संबंध में 'कोठारी आयोग' द्वारा प्रस्तुत सुझाव इस प्रकार है - प्रत्येक नागरिक को ऐसी शिक्षा प्रदान करना है जो उसे अपनी व्यक्तित्व उन्नति, व्यावसायिक प्रगती तथा सामाजिक एवम् राजनितिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्राप्त करनी चाहिए। १९५८ में तत्कालीन शिक्षामंत्री कमलापती त्रिपाठी ने इस संबंध में लिखा है

—देश में प्रजातंत्र दृढ़ बनाने के लिए उनकी आधारशिला सुदृढ़ होनी चाहिए। यह आधारशिला है भारत की जनता, जिसके ऊपरराज्य सरकारों का सुयोग्य निर्वाचन निर्भर है तथा समाज एवं राष्ट्र के मंगलमय स्वरूप का निर्धारण अवलम्बित है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए उपयुक्त शिक्षा का होना अनिवार्य है। यह उपयुक्त शिक्षा समाज द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

विद्यालय परिवर्तन केंद्र :

पाठशाला एक सजीव सामाजिक संस्था है, ऐसा डॉ. आंबेडकर का मानना था। पाठशाला संबंधी उनके विचार थोड़े आलग थे। वे कहते थे की, विद्यालय समाज को नया रूप देने वाले तथा समाज

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 253
 परिवर्तन के केंद्र के रूप में एक बड़ी भूमिका निभाता है। इस लिये विद्यालयों के वर्तमान स्वरूपों को बदलना चाहते थे। उनके मतानुसार प्रचलित शिक्षा, शिक्षण पध्दती और विद्यालयीन व्यवस्थाएं बालकों में सामाजिक समरसता व लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों का निर्माण करने में असमर्थ है। विद्यालय का वातावरण व वहां के शिक्षक जितने योग्य होंगे, उसी अनुपात में वहां से शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले छात्र भी उतने ही समर्थ व योग्य होंगे। बाबासाहब पाठशाला को समाज का एक लघुरूप मानते थे, इसलिए वे सामुहिक शिक्षण पध्दती का आग्रह करते थे। उन्होंने अपने छात्र जीवन में इन बातों को बड़ी गंभीरतापूर्वक महसूस कीया था की सामुहिक शिक्षा पध्दतीसे समाज में प्रचलित अनेक कुप्रथाओं एवं अवधारणाओं को समाप्त किया जा सकता है। शिक्षक राष्ट्रनिर्माता :

डॉ. बाबासाहब शिक्षक को राष्ट्र निर्माता के नाम से संबोधित करते हैं। शिक्षक उनकी दृष्टीसे राष्ट्ररूपी रथ का एक सुयोग्य सारथी होता है। उन्हें लगता है की शिक्षक ज्ञानपिपासु, अनुसंधान करनेवाला व आत्मविश्वासी होना चाहिए। वे मानते थे की व्यक्ति का उन्नयन या उद्धार तभी संभव है, जब उसकी शिक्षा में किसी योग्य व संस्कारवाना शिक्षक का योगदान रहा होगा। उनकी मतानुसार शिक्षक अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता होना चाहिए, पूर्वग्रहों से ग्रस्त, अव्युग्न शिक्षक को उसके स्तर से निचे गिरा देता है। पूर्वग्रह धारण करनेवाला शिक्षक अपने छात्र व सहयोगी शिक्षक के साथ निष्पक्षपूर्ण व्यवहार नहीं कर पाता, इसलिए शिक्षक शीलवान एवं नैतिक गुणों से संपन्न एवं परीपूर्ण होना चाहिए। शिक्षक को अन्य कोई कार्य सिर पर लेकर अपने उत्तरदायित्व का क्षेत्र व्यर्थ ही नहीं बढ़ाना चाहिए। अध्ययन और अध्यापन में शोधकार्य भी सम्मिलित होता है। इस तीन बातों के अलावा शिक्षक को अन्य कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। शिक्षक विद्वान के साथ सर्वश्रुत भी होना चाहिए। उसकी वाणी एवं विचार प्रभावशाली एवं शुद्ध होने चाहिए। वह बहुत उत्साही तथा अपना विषय मनोरंजक प्रस्तुत करने की उसमें क्षमता होनी चाहिए। इससे विद्यार्थी का उत्साह बढ़ेगा, उन्हें शिक्षा में



Handwritten signature or mark at the bottom right corner of the page.

राष्ट्रीय एकता की है। हम पहले भारतीय है, बाद में हिंदू, मुसलमान, सिखी है। वैसे तो हम पहले भारतीय और बाद में भी भारतीय कहलाये जाना चाहिए। इससे प्रांताभिमान और संप्रदायाभिमान बढेगा। क्योकी व्यक्ति से बडा देश है। इस लिए राष्ट्रहित सर्वोपरी होना चाहिए। समाज में समता लाने पर एकता होगी और एकता से राष्ट्र सुदृढ और सुसम्पन्न हो सकेगा।

शिक्षा का उद्देश संपूर्ण राष्ट्र का विकास करना है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय एकता बढती है साथ ही उत्पादकता में भी वृद्धी होती है। शिक्षा किसी भी परिवर्तन का मुख्य साधन है। इस दृष्टी से शिक्षा राष्ट्रीय एकता का भी प्रबल साधन है। अतः शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय विकास के उद्देशों को प्राप्त किया जा सकता है। राष्ट्रविकास में देश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्योकी राष्ट्रीय विकास ही किसी राष्ट्र के भविष्य की आधारशीला है। राष्ट्र की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं एवं आशाओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था से ही राष्ट्र का विकास सम्भव है। शिक्षा के अन्तर्गत व्यक्ति और समाज के नैतिक मूल्यों, आदर्श और विकास की विवेचना के साथ साथ बालक के कल्याण एवं विकास को पूर्ण रूप दिया जाता है, जिससे व्यक्ति एवं समाज के पूर्ण विकसित हो जाने पर राष्ट्रीय विकास की गती तीव्र होती है। भारत के संविधान में यह स्विकार कीया गया की, राष्ट्र का विकास उसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर है। इस आधार पर देश के सतत प्रक्रिया में सक्रिय तथा उत्पादक के रूप में भागीदार बनाने में सहायक हो। अतः शिक्षा के द्वारा राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को एक निश्चित स्तर तक अनिवार्य रूप से शिक्षित करना आवश्यक है, ताकी वे स्वयं विकसित होकर समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभासके। शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी हो, जो राष्ट्रीय सेवा और विकास हेतु निष्ठावान, चरित्र संपन्न तथा दृढ संकल्प वाले बालक-बालिकाओं का निर्माण कर सके और राष्ट्रीय विकास को तीव्र गती प्रदान कर सके। आयोग के अनुसार

लोकनायक बापूजी अणु महिला महाविद्यालय, रावतमाल 257
शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक सुधार यह है की, इसको परिवर्तित करने व्यक्ति के जीवन की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं में इसका सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया जाए और इस प्रकार इसको सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का शक्तिशाली साधन बनाया जाए जो राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्ती के लिए आवश्यक है। इस लिए राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ती के लिए शिक्षानिती होनी चाहिए। शिक्षा राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ती के लिए शिक्षानिती होनी चाहिए होना संदेहजनक लगता है। यहमाना जा सकता है की राष्ट्रीय निती का सफल, और शिक्षा परस्पर सम्बन्धित है। शिक्षारूपी अस्त्र :

शिक्षा ही एक ऐसा अस्त्र है, जिससे समस्त में व्याप्त अज्ञान, अशिक्षा एवं अंधविश्वास से मुक्ति मिलती है और अन्याय, शोषण अथवा दबाव के विरूद्ध संघर्ष करने की क्षमता उज्वल हो सकती है। शिक्षा के बिना समाज के विकास की प्रक्रिया अदृश्य रूप से अवरूद्ध हो जाती है और फीर राष्ट्र के इतिहास में इसका स्थायी नकारात्मक प्रभाव पडता है। इसीलिए उन्होंने भारत के संविधान में अनिवार्य शिक्षा आंकीत व्यवस्था की। डॉ. आंबेडकर शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे, क्योकी शिक्षा यह प्रत्येक व्यक्ति का जन्माधिकार है। शिक्षा उसके ज्ञान चक्षुओं के विकास पर भी बल देती है। शिक्षा व्यक्ति को लोकजीवन में संरक्षा और सुरक्षा प्रदान करती है। शिक्षा समानता, स्वातंत्र्य और भ्रातृत्व की नीव पर आधारित समाज का निर्माण करने का साधन है। इतना ही नहीं शिक्षा राष्ट्र का विकास भी करती है और राष्ट्र की, मानवी की शक्ति और सामाजिक परिवेश की गुणात्मकता निश्चित करती है। कुल मिलाकर उनके मतानुसार शिक्षा का उद्देश मानवकल्याण है।

शिक्षा एक ऐसी दुधारी तलवार के समान है, जिसे चलाना खतरनाक भी हो सकता है, क्योकी तलवार का उपयोग अथवा दुरुपयोग करना व्यक्ति के शील पर निर्भर है। क्योकी तलवार से किसी का खून भी हो सकता है या फिर किसी की रक्षा भी हो सकती है। इस लिये डॉ. आंबेडकर प्रायः नागरिकों को



Handwritten signature or mark at the bottom right of the page.

ध
महामारी कोरोना : एक रहस्य

सम्पादक

डॉ. घनश्याम भारती
डॉ. ओकेन्द्र

सह-सम्पादक

डॉ० राकेश सिंह रावत



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053

मो. 08527460252, 09990236819

ईमेल: jtspublications@gmail.com



काशं



जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

पीयर रिव्यू टीम

डॉ० नीलम जैन, विजिटिंग स्कॉलर, सेंट जोन्स स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका
आचार्य पं० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-सीडिया
अध्ययन-विशेषज्ञ, प्रयागराज
डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल, प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, इलाहाबाद केंद्रीय
विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तरप्रदेश)
डॉ. राजय शुक्ल, हिंदी-विभाग, एम.के.एम. यूनिवर्सिटी, दुमका (झारखंड)

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में
उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में
प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।
संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२१

ISBN 978-93-90143-80-1

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

पी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ८६५.०० रुपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Mahamari Corona : Ek Rahasya
Edited by Dr. Ghanshyam Bharti & Dr. Okendra

शुभकामना-सन्देश : डॉ० नील
भूमिका : डॉ० घनश्याम भार
सम्पादकीय : डॉ० घनश्याम

खण्ड

१. कोरोना काल और :
डॉ० नीलम जैन
२. महामारी कोरोना :
डॉ० घनश्याम भार
३. कोरोना : एक विध्वं
डॉ० ओकेन्द्र
४. वैश्विक जीवन-मूल्य
डॉ० (सुश्री) राणी
५. कोरोना-काल में मा
पुष्पा शर्मा, डॉ० अ
६. रहस्य: कोरोना एक
अमर कुमार चौधरी
७. कोरोना संक्रमण औ
डॉ० निखिल कुमार
८. कोरोना का नया स्व
पुष्पा शर्मा, डॉ० अ
९. कोरोना तुम्हें हारना
रामसिया चर्मकार, :
ख
१०. कोरोना लाकडाऊन
डॉ० राजश्री विवेक
११. वैश्विक कोरोना मह
डॉ० पूनमदेवी
१२. कोरोना महामारी औ
डॉ० सविता प्रमोद
१३. मानसिक स्वास्थ्य प
मीनाक्षी
१४. 'पर्यावरण' की उप
डॉ० गीता
१५. संक्रमण काल और
रामसिया चर्मकार



काशं

अनुक्रमिका

दिल्ली	शुभकामना-सन्देश : डॉ० नीलम जैन	०६
	श्रुतिका : डॉ० घनश्याम भारती	११
	सम्पादकीय : डॉ० घनश्याम भारती, डॉ० ओकेन्द्र	१४
नस स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका विद्यु-समीक्षक-मीडिया गराज वेभाग, झलाहाबाद केंद्रीय उत्तरप्रदेश) यूनिवर्सिटी, दुमका (झारखंड)	खण्ड- एक : 'कोरोना' : एक रहस्य	
	१. कोरोना काल और मानसिक स्वास्थ्य डॉ० नीलम जैन	१७
	२. महामारी कोरोना : एक रहस्य डॉ० घनश्याम भारती	१६
	३. कोरोना : एक विध्वंसकारी, अदृश्य वायरस डॉ० ओकेन्द्र	२२
	४. वैश्विक जीवन-मूल्य और मानवीय संघर्ष डॉ० (सुधी) राणी बापू लोखंडे	२८
	५. कोरोना-काल में मानव और प्रकृति में निहित रहस्य पुष्पा शर्मा, डॉ० अलका तिवारी	५६
	६. रहस्य: कोरोना एक विध्वंसकारी वायरस अमर कुमार चौधरी	६२
	७. कोरोना संक्रमण और हमारे कोरोना योद्धा डॉ० निखिल कुमार चौरसिया	६८
	८. कोरोना का नया स्वरूप : डेल्टा स्ट्रेन पुष्पा शर्मा, डॉ० अलका तिवारी	७०
	९. कोरोना तुम्हें हारना ही होगा रामसिया चर्माकर, मुकेश कुमार निराला	७२
	खण्ड- दो : कोरोना और प्रकृति	
	१०. कोरोना लाकडाऊन और प्रकृति डॉ० राजश्री विवेक धर्माधिकारी	८१
	११. वैश्विक कोरोना महामारी और आयुर्वेदिक उपचार डॉ० पूनमदेवी	८६
	१२. कोरोना महामारी और प्राकृतिक सत्य डॉ० सविता प्रमोद	९५
	१३. मानसिक स्वास्थ्य पर वैश्विक महामारी का प्रभाव मीनाक्षी	१००
	१४. 'पर्यावरण' की उपयोगिता और संरक्षण परम् आवश्यक डॉ० गीता	११३
	१५. संक्रमण काल और वैश्विक पर्यावरण रामसिया चर्माकर	१२६
गोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में त अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।		
। ।२१ ३-८०-१		
शन्स ।, दिल्ली-११००५३ ११-२२६१२२३ @gmail.com		
पये । दिल्ली टर्स, दिल्ली		
Ek Rahasya ।arti & Dr. Okendra		



काशं

कोरोना लॉकडाउन और प्रकृति

डॉ० राजश्री विवेक धर्माधिकारी
 प्रथमाल, लोकनायक बापूजी अणे महिला
 महाविद्यालय, यवतमाल 445001.
 ई-मेल : rjdharma70@gmail.com
 मोबाइल : 7588782580

सार :

कोरोना महामारी ने हमारे जीवन की एक कटू सच्चाई हमारे सामने बहुत डरावने चित्र में प्रकट की है। मनुष्य ने भौतिक प्रगति की अंधी दौड़ में प्रकृति को तहस-नहस कर दिया है। मनुष्य ने अपनी झूठी प्रतिष्ठा के खातिर सुंदर और निर्दोष प्रकृति को बदसुरत बना दिया है। हवा, पानी, जमीन ही नहीं अंतरिक्ष पर भी मनुष्य ने अतिक्रमण कर उसे प्रदूषित किया है। ये प्रकृति का प्रदूषण ही सारी गंभीर समस्याओं का मूल है। कोरोना महामारी ने हमें आईना दिखा दिया और मानव जाति को सचेत किया तुम कितनी भी दौड़ लगाओ, प्रकृति से खिलवाड़ तुम्हें बहुत महंगा सिद्ध होगा।

प्रस्तावना :

मनुष्य प्रकृति के बिना अधरा है क्योंकि उसकी हर गतिविधि प्रकृति पर ही निर्भर है। मनुष्य और प्रकृति का, सदियों से अलूट संबंध रहा है फिर भी वह प्रकृति को विनाश के कगार पर खड़ा कर अपनी भौतिक प्रगति कर रहा है, जो प्रकृति के साथ सरासर धोखा है। प्रकृति में स्थित मनुष्य ही एकमात्र जीव है जो प्रकृति का दोहन कर रहा है। उसने अपनी मोनी वृत्ति से प्रकृति को कमाल कर दिया है। भौतिक प्रगति की ये अंधी दौड़ प्रकृति को तहस-नहस कर रही है। मनुष्य ने अपनी झूठी प्रतिष्ठा के खातिर सुंदर और निर्दोष प्रकृति को बदसुरत बना दिया है और आज हम देख रहे हैं की हवा, पानी और जमीन ही नहीं अंतरिक्ष पर भी मनुष्य ने अतिक्रमण कर उसे प्रदूषित किया है। उसी के फलस्वरूप आज पूरा विश्व जहाँ कोरोना नाम के अदृश्य महामयंकर विषाणु के विरुद्ध लड़ाई लड़ने में व्यस्त हैं वहीं भारत के पश्चिम तट पर 'तौत्ते' तुफान ने और पूर्वीय तट पर 'थास' नाम के चक्रवात ने पूरे जन-जीवन को ध्वस्त कर दिया है तथा ठीक उसी समय चीन में धुआंधार बारिश और अफ्रीका में ज्वालामुखी इन सभी

खण्ड- दो : कोरोना और प्रकृति



का.स.सं.

सकते हैं। लेकिन जैसे ही पहिले दौर का लॉक डाउन खत्म हुआ जिंदगी अपने ढर्रे पर लौटी तो हमने वही लापरवाहीयों की जो हमारे लिए बुरी थी और नतीजा क्या हुआ प्रकृति अपने प्रचंड स्वल्प से फिर लौट आई और उसने दिखा दिया उसके नियमों का उल्लंघन से करने का नतीजा क्या होता है। कोरोना की दुसरी लहर ने एक और भयानक संकेत हमें दे दिया है: कोरोना पिड़ित ऑक्सीजन की कमी से तडप तडप कर मर रहे हैं। ऑक्सीजन बहाल करने में बहुत सारी मुश्किलें हैं। इस कृत्रिम ऑक्सिजन के लिए लोगों को कोरोना के कारण बंधकना पड़ा, जोस तरह सासों पर संकट आया उसने बीमारी के साथ साथ यही चेतावनी भी दी है कि यह स्थिती तो कोरोना के कारण बनी है, लेकिन कल्पना कीजिए की प्रकृति से होनेवाली छेड़छाड़ और पर्यावरण विनाश के कारण एक दिन ऐसा आयेगा कि सामान्य स्थिती में भी हवा में प्राणवायु न बचे या हवा नहीं रहेगी तो क्या होगा? ऐसा है, ऐसा ही रहा तो वो दिन भी दूर नहीं है। क्योंकि ये सब कुछ देखने सुनें और भ्रमतेन के बाद भी हम सबक लेने को तयार नहीं हैं आश्चर्य परसों ही गंगा नदी भी बहती लाशों निली ये खबर पढ़कर तो पुरा यकीन हो गया कि कोरोना ने दिया हुआ संकेत अभी भी मानव जाति को बर्तने भ्रांति समझ में नहीं आया।

जिस तरह मौजूदा समय में जान बचाना लोगों की प्राथमिकता बना हुआ है वैसे ही लोगों को पर्यावरण के प्रती चितीत करया जाना भी जरूरी है। कोरोना वायरस मानव जाति पर अब तक का सबसे गंभीर खतरा है। आमतौर पर जब भी कोई प्राकृतिक संकट आता है तो वह कुछ प्रदेश या विभाग तक ही सीमित रहता है, लेकिन इस बार यह संकट विश्व की पूरी मानव जाति पर खतरे जैसी मंडरा रही है। प्रकृति में आज जो हम सकारात्मक बदल देख रहे हैं क्या वह हमेशा के लिए स्थिर हो जाएंगे। पर्यावरण को बचाने के लिए लोगों को अपनी आदतें बदलनी होगी अगर वह खुद नहीं बदलते हैं तो उन्हें जबरन बदलवाना पड़ेगा। इसकी एक मिसाल जापान के क्याटो शहर में देखने को मिलती है। वहां 2001 से यहां मोटर वाले रास्ते बंद कर दिए गए और लोगों को सार्वजनिक परिवहन इस्तेमाल करने को मजबूर किया गया। धीरे-धीरे यह लोगों की आदत में शामिल हो गया। जब दोबारा रास्ते खुले, तो भी ज्यादातर लोग सार्वजनिक परिवहन का ही इस्तेमाल कर रहे थे।

निष्कर्ष

कोरोना के कारण लागू किया हुआ लॉकडाउन से प्रकृति को एक तरह से आराम मिला है प्रकृति पहले से कहीं खूबसूरत नजर आने लनी है। वही कोरोनावायरस की महामारी ने ना जाने कितनों से उनके अपनों को हमेशा के लिए जुदा कर दिया है। कोरोना त्रासदी से हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर इसका बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ना जाने कितनों का रोजगार खत्म हुआ है, अर्थव्यवस्था पटरी पर कब लौटेगी यह भी कहना मुश्किल है। लेकिन इस महामारी ने एक बात साफ कर दी कि मुश्किल घड़ी में भी सारी दुनिया एक साथ खड़े होकर एक दूसरे का साथ देने के लिए तैयार है। तो फिर क्या यही जज्बा और इच्छाशक्ति हम पर्यावरण बचाने के लिए जाहिर नहीं कर सकते। हमें उम्मीद है इस समय का अंधकार हम रसख और हरे-भरे खुशनुमा माहौल में बदल देंगे। कोविड-19 ने हमारे सामने दुनिया की एक ऐसी भयावह तस्वीर पेश की है जो हमने सपने में भी नहीं सोची थी। अब समय आ गया है जब हम धरती के साथ अपने बिगड़े संबंधों को सुधारे ये आने वाले दिनों में यह हमारे सामने की सबसे बड़ी चुनौती होने वाली है। अगर हम अपने निजी जीवन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देंगे तो उपयुक्त समस्याएं कम होने में कुछ मदद अवश्य मिलेगी।

- 1 घर में अनावश्यक जलने वाली बिजली बंद कर देनी चाहिए जहां तक हो सके वहां सौर ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए।
- 2 गीले कपड़े तथा बाल सुखाने के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरण की बजाए प्रकाश तथा हवा का प्रयोग करना चाहिए जो मुफ्त में मिलते हैं।
- 3 नल का पानी हमेशा सावधानी से उपयोग में लाना चाहिए, अगला महापुद्ब पानी के लिए होगा ऐसी आशंका है ये महापुद्ब रोकने के लिए पानी की हर बूंद बचाने का प्रयास करना चाहिए।
- 4 प्लास्टिक थैली की अपेक्षा कपड़े की थैली का प्रयोग करना चाहिए।
- 5 डॉल्बी कि कर्कश आवाज तथा महान वाहनों से बढता हुआ ध्वनि प्रदूषण कम करना चाहिए।
- 6 पारिवाहिक तथा सामाजिक समारोह में भोजन के लिए प्लास्टिक तथा थर्मोकॉल की थाली या ग्लास कटोरी प्लेट आदी बर्तनों की अपेक्षा स्टील के बर्तनों का इस्तेमाल होना चाहिये।



Handwritten signature or mark.

- 7 हर काम के लिए अधिक से अधिक सार्वजनिक वाहन का उपयोग करना चाहिए। कम दूरी के काम के लिए सायकल का प्रयोग अपने स्वास्थ्य और प्रकृति के लिए भी लाभदायक है।
- 8 मुद्रित और कोरे कागज का पुनः उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि कागज निर्मिती के लिए वृक्षों की बली चढ़ाई जाती है।
- 9 निजी एवं सरकारी आस्थापनाओं में कर्मचारियों को घर से काम करने की सुविधा का पर्याय एवं तकनीकी व्यवस्थाओं में सुधार लाने से प्रकृति की शुद्धता में बढ़ोतरी होगी।
- 10 हर किसी क्षेत्र के संसाधनों में पुनः उपयोगिता, पुनर्निर्माण की सोच रखना अनिवार्य है।
- ये तो हमारे रोजमर्रा के जिंदगी में उपयुक्त सरल उपाय है इसी धर्ती पर हम हमारे हर किसी कावक्षेत्र में सोचना शुरूवात करेंगे तो प्रकृती के हित में हमें बहुत सारे उपाय एवं सुझाव मिलेंगे। इन उपायों को हम हमारे निजी तथा सार्वजनिक जीवन में अगर अमल करेंगे तो इसी से यह सुनिश्चित होगा की हम शायदत विकास की तरफ हमारा एक नया कदम बढ़ा रहे हैं। यही छोट सफल उपाय बड़े सुखद परिणाम दिखायेंगे। बस उपायों पर अमल की आवश्यकता है।
- इसी आशा के साथ हम हमेशा ध्यान में रखेंगे,
 प्रकृति को बचाना हमारा कर्ज है,
 प्रकृति का हम पर कर्ज है,
 प्रकृती ही हर मर्ज की दवा है,
 प्रकृती हमारे लिये दुवा है।

संदर्भ :

-bbc-com
 www-jansatta-com

वैश्विक कोरोना महामारी और आयुर्वेदिक उपचार

डॉ० पूनम देवी

असिस्टेंट प्रोफेसर

विभागाध्यक्ष संस्कृत

तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर

ई-मेल : poonamdevi194177@gmail.com

मोबाइल : 8175842558

संस्कृत साहित्य के महान्य महाकवि कालिदास का यह कथन सर्वथा सत्य प्रतीत होता है "शरीरमात्रं खलु धर्म साधनम्"। शरीर ही सभी धर्मों का साधन है; क्योंकि हम जो कार्य करते हैं, वह शरीर के द्वारा ही सम्पन्न होता है; इसलिए हमें शरीर की स्वस्थता पर ध्यान देना चाहिए। जब शरीर स्वस्थ रहेगा तभी हमारे सभी कार्य सम्पन्न होंगे। रामचरित मानस में तुलसीदास जी ने कहा है कि "बड़े भाग्य मानुष तन पायो" यह मानव शरीर बड़े भाग्य से मिलता है परन्तु आज वर्तमान समय में मानव की भाग दौड़ भरी जिन्दगी, अतिथित दिनचर्या, अनुचित, आहार-विहार एवं अनैतिक आचरण के कारण व्यक्ति व्याधि ग्रस्त हो गया है। इसे हम व्याधि और महामारी दो रूपों में इसको विश्लेषित करेंगे।

व्याधि वह है जो किसी एक स्थान विशेष पर किसी एक व्यक्ति को रूग्ण बनाती है और उचित औषधी के सेवन से व्यक्ति कुछ समय में ही स्वस्थ हो जाता है। उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती है, परन्तु महामारी वह है जो किसी एक स्थान विशेष पर किसी एक व्यक्ति को नहीं अपितु समस्त राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को अपनी चपेट में ले लेती है। इसलिए इसे हम संक्रामक रोग भी कह सकते हैं। महामारी को संस्कृत में संक्रामक रोग या संक्रमित व्याधि कहते हैं। महामारी को कोई व्यक्ति किसी संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में जाने पर संक्रमित व्यक्ति भी संक्रमित होता है। यह कोई नई शीमारी नहीं है। इसके पहले भी हमारे देश में महामारी का प्रकोप रहा है, जैसे चेचक, हैजा, क्षेम, पोलियो इत्यादि जिसमें कई हजारों लाखों व्यक्तियों की जान गयी।



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

cha

3.2.2

The Stalwarts



लोकनायक बापूजी अने महिला महाविद्यालय

यवतमाल ४४५००१ (महाराष्ट्र)

संपादक मंडळ
प्राचार्य डॉ. दुर्गेश कुंटे
प्रोफेसर डॉ. कविता तातेड
सह. प्रा. डॉ. संतोषकुमार गाजले
प्रा. सौरभ वगारे

७. 10/11/2015



काशिके

- 12) व्यक्तित्व एवं कृतित्व – उषा प्रियंवदा
डॉ. महेन्द्रसिंह अजितसिंह पवार, जि. अमरावती ||107
- 13) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदिप्यमान पर्व : क्रांतिकारी
चळवळ.... प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||114
- 14) आधुनिक भारताचे निर्माते— राष्ट्रसैन तुकडोजी महागज
डॉ. रामलाल चौधरी, भंडारा (महा.) ||122
- 15) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक “भारतेन्दु हरिश्चंद्र” का
अनुवाद के क्षेत्र में ...डॉ. सुनीता बुदले, अमरावती ||132
- 16) साने गुरुजींच्या वाङ्मयातील संस्कारमूल्ये
डॉ. ममता व. दयणे, यवतमाळ ||142
- 17) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदिप्यमान पर्व : क्रांतिकारी
चळवळ प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||149
- 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का सामाजिक आन्दोलन
प्रा. डॉ. बहू एस. मानवटकर, जि. अकोला ||156
- 19) गांधीवादी विचारसरणी : एक जागतिक वारसा
प्रा. डॉ. आनंदराव शिंदे, जि. नदिड ||162
- 20) आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर
प्रा. डॉ. डी.डी. जोषळे, जि. यवतमाळ ||181
- 21) आधुनिक युग मे गुरुकुलपरंपरा के प्रतिपादक पद्मविभूषण पंडित
“हरिप्रसाद चौरसिया”शुभम नरेश उदावंत ||185
- 22) पंचकथा



काशं

साने गुरुजींच्या वाङ्मयातील संस्कारमूले

डॉ. ममता व. दयणे

सहायक प्राध्यापक, मराठी विभाग,

लो. बा. अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल

मराठी साहित्यसृष्टीत मातृहृदयी साहित्यिक म्हणून सर्वपरिचित असलेले सानेगुरुजी थोर लोकशिक्षक होते, महाराष्ट्राचे प्रबोधनकार होते. साने गुरुजी हे वृत्तीने शिक्षक होते. त्यांनी आपली वाणी व लेखणी समाजजीवनाला आकार देण्यासाठी, किशोरवयीन पिढीवर संस्कार करण्यासाठी वापरली. महाराष्ट्रातील समाजमानावर त्यांच्या वाङ्मयाने सखोल व टिकाऊ परिणाम केला. अनेकांची युवा मने विधायक कार्यासाठी त्यांनी भारावून टाकली. समाजजीवनावर संस्कार करण्याचे, व्यक्तीमनाचे उन्नयन करण्याचे सामर्थ्य त्यांच्या वाङ्मयामध्ये आहे. समाजजीवनाला सुसंस्कारित करणारे अनेक अमृत्य विचार त्यांच्या साहित्यात व्यक्त झालेले आहे. त्यांच्या साहित्यातून व्यक्त होणाऱ्या विचारांमध्ये शैक्षणिक मूल्य आहेत. शिक्षण प्रक्रिया कशी असावी, शिक्षणाची उद्दिष्टे कोणती असायला पाहिजे, शिक्षण प्रक्रियेमध्ये व्यक्तिनिष्ठ व समाजनिष्ठ अशी कोणकोणती मूले सुसंस्कारित व्हायला पाहिजे, शिक्षणाच्या प्रक्रियेत माता - पिता, सभोवतीचा परिसर, निसर्ग यांचे स्थान काय आहे या संदर्भातील साने गुरुजींचे विचार त्यांच्या साहित्यात व्यक्त झाले आहे.

माणसाचे शिक्षण केव्हा सुरू होते या संदर्भात सानेगुरुजी यांच्या श्यामची आई या कादंबरीतील विचार महत्त्वाचे वाटतात. ते लिहितात

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 143
मनुष्य जन्मतो त्यापूर्वीच त्याचे शिक्षण सुरू झालेले असते.....जगात फक्त आईबापच शिकविताना असे नाही. आजुबाजूचे सारे जग, सारी सजीव - निर्जीव सृष्टी शिकवित असते. पत्तु या आजुबाजूच्या सृष्टीतून काय शिकवे, कसे शिकवे, हे आईबापच शिकविताना. आई वडिलां सोबतच भोवतालच्या परिसराचा ही शिक्षणामध्ये महत्त्वाचा वाटा असतो. कारण "शिक्षणाने आत्मदर्शन होऊन सर्व भूतमात्रावर प्रेम करण्याची प्रवृत्ती उत्पन्न झाली पाहिजे. हे केवळ पुस्तकी शिक्षणाने शक्य नाही तर विशेषतः मातेकडूनच हे संस्कार व्हायला पाहिजेत "श्यामची आई या पुस्तकात ते लिहितात" आई माझा गुरु, आई माझी कल्पतरू, तिने मला काय काय तरी दिले.... आम्ही जे शिकविले त्याचा पगधांशीही माझ्या जीवनात मला प्राट करता आला नाही" यावरून शिक्षणाच्या संस्काराची परिणती आचरणात झाली तरच ते खरे शिक्षण होईल असे गुरुजींचे मत दिसते. श्यामची आई श्यामला काय वाचावे यासंदर्भात सांगते "विशवाचा विशाल ग्रंथ वाचावा, मनुष्याची जीवने वाचावी, हृदये वाचावी, त्यातील सुखदुःखे जाणून घ्यावी, हेच खरे वाचन नाही का?..... प्रत्यक्ष उदाहरणाने जे शिक्षण मिळते ते शेकडो व्याख्याने ऐकून किंवा अनेक ग्रंथ वाचूनही मिळत नाही. कृती ही मुक्तेपणाने बोलते. शब्दांही हे मुक्तेपण परिणामकारक असते." अर्थातच अनुभव आणि निसर्ग हे मुलांचे थोर शिक्षक आहे, हे साने गुरुजींचे मत होते.

जीवनाची संकुचित दृष्टी नाहीशी होऊन व्यापक दृष्टीने जीवनाचा अर्थ समजावून घेण्याची क्षमता निर्माण करणे हे शिक्षणाचे उद्दिष्ट असले पाहिजे. ही दृष्टी पुस्तकातील शब्दांनाने प्राप्त होणार नाही तर जीवनातील अनुभवांनी प्राप्त होईल. अनुभव संपन्नता हे शिक्षणाने उद्दिष्ट तर सेवापरायणता हे शिक्षणाचे ध्येय असले पाहिजे, त्यासाठी शिक्षणाने उत्तम नागरिक निर्माण झाले पाहिजे असे साने गुरुजींचे विचार होते. श्यामची आई या कादंबरीत भूतदया या प्रकरणात ते लिहितात प्रेम ज्ञान व शक्ती यांचा विकास जीवनात हवा. प्रेम म्हणजे हृदयाचा विकास. ज्ञान म्हणजे बुद्धीचा विकास व शक्ती म्हणजे शरीराचा



16/1/20

विकास. शरीर, मन व बुद्धी या तिन्हीची वाढ जीवनात हवी. ज्ञान हे जीवनाला उपयुक्त असले पाहिजे. ज्ञान व जीवन यांची फारकत असता कामा नये. शिक्षणाने सदृग्णाची निर्मिती झाली पाहिजे. शिक्षण ही व्यापक प्रक्रिया आहे असे गुरुजींना वाटते.

साने गुरुजींच्या वैचारिक वाङ्मयात त्यांचे शैक्षणिक विचार सविस्तरपणे व्यक्त झालेले दिसतात. शिक्षणाने श्रमनिष्ठा उत्पन्न झाली पाहिजे. ती केवळ वैयक्तिक उदरभरणासाठी नव्हे, तर सामाजिक पोषणासाठी ही महत्त्वाची आहे. यासंदर्भात 'भारतीय संस्कृती' या ग्रंथात 'कर्म' या प्रकरणात ते लिहितात श्रमजीवी माणसाच्या अंगातून गळणारे पाणी हे सर्वात थोर. ते पाणी जगाचे पोषण आहे. देव पाऊस पाडील, परंतु शेतकरी स्वतःच्या घामाचा पाऊस जर शेतात पा डणार नाही तर, काय पिकणार आहे? माणसांना दाणे मिळणार नाहीत, पाखरंना दाणे मिळणार नाहीत. सारी सुट्टी मरेल. श्रमनिष्ठा ही व्यक्ती पारसुन समूहापर्यंत आवश्यक आहे. समाजामध्ये आज श्रमजीवी व बुद्धिजीवी असा जो भेद दिसतो तो शिक्षणाने दूर झाला पाहिजे. या संदर्भात ते पुढे लिहितात आज आपल्या समाजात घडे व मुंडकी दूर दूर पडली आहेत. थडाला मुंडके नाही व पुंडक्याला धड नाही. समाजपुरुष असा मरून पडला आहे. बुद्धिजीवी लोक, डोनेत्राज लोक श्रमजीवी माणसाची कदर करीत नाहीत.... बुद्धिवादी श्रम करू देत व श्रमणा-याला विचाराचा आनंद मिळू दे, असे हेईल तो सुट्टिन. अर्थात विद्यार्थ्यांना श्रमाचा व्यायाम मिळाला पाहिजे.

शिक्षण हे उत्पादनक्षम असले पाहिजे. श्रमनिष्ठा, उत्पादनक्षमता व स्वावलंबन ही उद्दिष्टे एकमेकांशी निगडित आहे. शिक्षणाने स्वावलंबनाची वृत्ती निर्माण झाली पाहिजे, तसेच प्रेम, सहृदयता, कृतज्ञता, सेवाभाव, सहिष्णुता, चारित्र्य संवर्धन या मनाच्या विविध वृत्तींचे संगोपन व संवर्धन शिक्षणाने साधले पाहिजे. शिक्षणाने सेवावृत्ती निर्माण झाली पाहिजे. ज्ञान हे सेवा पत्रायण असले पाहिजे. यासंदर्भात सुंदर पत्रे भाग-३ मध्ये ये साने गुरुजी सुभाला उद्देशून लिहितात तू शिक, डॉक्टरी ज्ञान मिळव आणि कोकणात जा आणि परीब आया-वायांची सेवा कर. नदी

ज्याप्रमाणे ओल्याचा देत वाहात राहते त्याप्रमाणे तुझी जीवनसरिता सर्वांच्या जीवनाला ओल्याचा देत वाहात राहो. शिक्षणाने मूल्याबद्दल श्रद्धा निर्माण झाली पाहिजे. कारण श्रद्धेने माणूस कर्मप्रवृत्त होतो.

राष्ट्रीय एकात्मता संवर्धन करण्याचे उद्दिष्ट शिक्षणाने साधले पाहिजे. या संदर्भात सुंदर पत्रे भाग - ३ मध्ये ते लिहितात मला टिपण्याचा खेळ फार आवडतो. हिंदुस्थानभर हा खेळ आहे. हा आपला राष्ट्रीय खेळ आहे. भारताला असुरूप सात रंगांच्या दोर्यांना एकत्र गुंफायचे. विविधतेत एकता. भारतात नाना प्रांत, नाना भाषा, नाना धर्म, नाना जाती सर्व मिळून एक विशाल संस्कृती निर्माव्याची. देवासमोर गोंफ विणून हे ध्येय पुरे करू अशी जणू रवाही द्यायची. कारण राष्ट्रीय एकात्मतेवर लोकशाही, सर्वधर्मीय समानता, सामाजिक न्याय या गोष्टी अवलंबून आहे. त्यामुळे शिक्षणाने अशी विशाल दृष्टी निर्माण व्हायला पाहिजे. मानवतेचे संवर्धन करण्याची वृत्ती शिक्षणाने निर्माण झाली पाहिजे. बरेचदा मानवा- मानवामध्ये कुत्रिम भेद निर्माण करून श्रेष्ठ-कनिष्ठ असे उरविले जाते, देशाची मात्सर्याची बीजे रोवली जातात हे सर्व थांबले पाहिजे. ही सर्व शैक्षणिक उद्दिष्टे साने गुरुजींच्या वैचारिक वाङ्मयात व्यक्त झालेली दिसतात.

विविध नैतिक, मूल्ये संस्कार साने गुरुजींच्या वैचारिक साहित्यातून होतात. आपल्या मनोधारणेची विशिष्ट घडण दाखविणारा शब्द म्हणजे मूल्य. इतरांशी सद्भावाने वागण्यासाठी ज्या वृत्तीची मदत होते ते नैतिक मूल्य. सत्यनिष्ठा, सेवाभाव, श्रमप्रतिष्ठा, ज्ञाननिष्ठा, वृद्ध व्यक्तींबद्दल पूज्यभाव, मातृपितृ प्रेम, श्रद्धा, नम्रता, गुरुनिष्ठा, स्वावलंबन, चारित्र्य, कृतज्ञता, भूतदया, स्वाभिमान, संयम, त्याग, देशभक्ती, कर्तव्यनिष्ठा, मानवता ही मूल्य साने गुरुजी यांच्या साहित्यात आढळतात. सुंदर पत्रे भाग-... मध्ये ये ते लिहितात सेवामय वृत्तीने भारतात प्रेमस्नेहाचा पाऊस पाडणारे हजारे पत्रे हवे आहेत.... आशने, उत्साहाने, प्रेमाने, सेवाभावाने उचंबळणारे तरुण. असे तरुण मिळतील तर ओसाड, भकास भासणारा भारतीय संसार हिरवागार होईल.

विद्यार्थ्या मध्ये ज्ञाननिष्ठा रुजली पाहिजे हे पटवून देताना



Handwritten signature or mark at the bottom right of the page.

- 12) व्यक्तित्व एवं कृतित्व — उमा प्रियंवदा ||107
 डॉ. महेंद्रसिंह अजितसिंह पवार, जि. अमरावती
- 13) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदिप्यमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळ.... प्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||114
- 14) आधुनिक भारताचे निर्माते— राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज डॉ. रामलाल चौधरी, भंडारा (महा.) ||122
- 15) आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रवर्तक "भारतेन्दु हरिश्चंद्र" का अनुवाद के क्षेत्र में ...डॉ सुनीता बुदले, अमरावती ||132
- 16) साने गुरूजींच्या वाङ्मयातील संस्कारसूत्ये डॉ. ममता व. दयणे, यवतमाल ||142
- 17) भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील एक दैदिप्यमान पर्व : क्रांतिकारी चळवळप्रा. डॉ. सुषमा देशपांडे, औरंगाबाद ||149
- 18) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का सामाजिक आन्दोलन प्रा. डॉ. बंडू एस. मानवटकर, जि. अकोला ||156
- 19) गांधीवादी विचारसरणी : एक जागतिक वारसा प्रा. डॉ. आनंदराव शिंदे, जि. नांदेड ||162
- 20) आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. डी.डी. जोषळे, जि. यवतमाल ||181
- 21) आधुनिक युग मे गुरुकुलपरंपरा के प्रतिपादक षट्मविभूषण पंडित "हरिप्रसाद चौधरिया"सुषम नरेश उदावंत ||185

22) पंचकन्या

- 23) २० व्या शतकातील प्रतिभावान संस्कृत कवी प्रज्ञाभारती श्री.प्रा. वर्णेकर..... प्रा. दर्शना सायम, यवतमाल ||211
- 24) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या भारतीय संसदीय जोकशाहीच्या विचारचे ...प्रा.स्वप्निल म. रामटेके, यवतमाल ||217
- 25) आधुनिक भारताचे निर्माते डॉ.बी.आर.आंबेडकर प्रा.शैलेन्द्र देवीदास तेलंग, यवतमाल ||223
- 26) शिवप्रसाद सिंह और उनकी कहानियों में मुखरित मानवीय मूल्य प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री, यवतमाल ||235
- 27) आधुनिक भारत के निर्माता डॉ. सविता व्ही. रूक्मे, वाशिम ||244
- 28) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का शैक्षिक दर्शन प्रोफेसर डॉ.लता वाघेला, यवतमाल ||249
- 29) हिंदी साहित्य जगत के शालका पुरुष अज्ञेय प्रा. डॉ. संतोषकुमार गुडणा गाजले, यवतमाल (महाराष्ट्र) ||261
- 30) डॉ० रामकुमार वर्मा का हिंदी साहित्य में योगदान: एक कवि के रूप में...प्रा. डॉ. नलिनी शशिकांत पशीने, गोंदिया ||271
- 31) डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का अर्थशास्त्रीय लेखन प्रा.डॉ. कविता राजेंद्र तातेड, यवतमाल ||283
- 32) Depiction of the Versatile Personality of LokmanyaTilak Dnyaneshwar Gatkar, Yavatmal ||293



Handwritten signature and date: 12/12/20

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 248
बेटे का विवाह एक विधवा से कराया। उन्होंने बहुपत्नी प्रथा और बाज
विवाह के खिलाफ भी काम किया।
विचार और शिक्षाएँ—

१. वे विधवा-पुनर्विवाह के प्रबल समर्थक थे।
२. उन्होंने संस्कृत कॉलेज में आधुनिक परिचामी विचारों का अष्ट
ययन आभर कराया था।
३. विधवा-पुनर्विवाह को कानूनी वैधता प्रदान करने वाले अहि
नियम को पारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका थी।
४. बंगाली भाषा के विकास में भी योगदान दिया।
५. वे कई समाचार-पत्रों व पत्रिकाओं के साथ भी गंभीरता से
जुड़े थे और सामाजिक सुधारों की वकालत करने वाले महत्वपूर्ण लेख
लिखे।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर एक ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने
समाज में फैली गलत विचारधारा, अश्रद्धा, परंपरा, रूढ़ियों, बालविवाह,
बहुविवाह और विधवाओं पर हो रहे अन्याय का विरोध किया। उसी का
नतीजा था कि विधवा पुनर्विवाह कानून—१८५६ पारित हुआ। उन्होंने
खुद एक विधवा से अपने बेटे की शादी करवाई थी। उनके इन्हीं प्रयासों
ने उन्हें समाज सुधारक के तौर पर पहचान दी। नैतिक मूल्यों के संरक्षक
और संस्कृत के ज्ञानी थे। साथ में अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं के ज्ञान
का समन्वय करके भारतीय और पश्चात्य परंपराओं के श्रेष्ठता को
हासिल किया जा सकता है। ऐसा उनका मानना था। ईश्वरचंद्र
विद्यासागर को राजा राममोहन राय का उत्तराधिकारी माना जाता है।
उनके योगदान से आज हम आधुनिक भारत में जी रहे हैं।

संदर्भ सूची—

१. आधुनिक भारत के निर्माता पं. जवाहरलाल नेहरू—डॉ. एस.
एन. सिंह
२. आधुनिक भारत—शंकर दत्तात्रेय जावडेकर
३. आधुनिक भारत का इतिहास—सं. शिवकुमार गुप्त

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 249

28

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का शैक्षिक दर्शन

प्रोफेसर डॉ. लता वाघेला
विभाग प्रमुख, गृहअर्थशास्त्र विभाग,
लो.बा. अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल

सारांश :

शिक्षा का मानवी जिवन में अत्यधिक महत्व है। शिक्षा ही वह
साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों में पृथक् करती है
। शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को
आगे आनेवाली पिढी को हस्तांतरित करने योग्य बनाती है। शिक्षाव्यय
बालक का सर्वांगीण विकास होता है और बालक सामाजिक जीवन में
अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र विकास में सक्रीय योगदान देता
है। शिक्षा बालक को वातावरण के साथ अनुकूलन करने की क्षमता
प्रदान करती है, साथ ही वातावरण के साथ अनुकूलन करने की क्षमता
करने की शक्ति एवं ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा के विभिन्न आयाम
है, जिनके माध्यम से बालक, युवाओं और प्रौढ़ों को शिक्षित किया जा
सकता है।

प्रस्तावना :

भारतीय समाज प्रबोधन कार्य में अनेक राजकीय नेता एवं
समाजसुधारकों का योगदान है। इनमें डॉ. बाबासाहेब का योगदान
विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को बहोत
जादा महत्व दिया। इतनाही नहीं शिक्षा को उन्होंने अपने जिनगीका



बाबासाहेब

भी पुरूषों के साथ आगे आना चाहिए तथा बच्चों पर विवाह बोझ तब तक नहीं डालना चाहिए, जब तक वे आर्थिक दायित्व को वहन करने में समर्थ नहीं हो जाए। स्त्रियों को भी पुरूषों के समान शिक्षा ग्रहण करके अपने पति से मित्रता एवं समानता का दावा करे, अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे।

भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। इस प्रजातन्त्रात्मक देश में नागरिकों को अपने कर्तव्यों व अधिकारों का ज्ञान करने, अनपढ व्यक्तियों को साक्षर बनाने के लिए सामाजिक शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। डॉ. मणी के अनुसार समाज शिक्षा बहुमुखी प्रयास है, क्योंकि भारत जैसे जनतंत्रीय, धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में इसका प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति में न केवल नागरीक

अधिकारों की वरत उत्तरदायित्व की भी सजीव चेतना का विकास करना है। वयस्क नागरिकों की आवश्यकता हेतु, देश की प्रगती एवं सुरक्षा हेतु नागरिकों को विकास कार्यक्रमों का प्रशिक्षण प्राप्त होना आवश्यक है। नागरिकों को सामाजिक शिक्षा की आवश्यकता के संबंध में 'कोठारी आयोग' द्वारा प्रस्तुत सुझाव इस प्रकार है - प्रत्येक नागरिक को ऐसी शिक्षा प्रदान करना है जो उसे अपनी व्यक्तिगत उन्नति, व्यावसायिक प्रगती तथा सामाजिक एवम् राजनितिक कार्यों में भाग लेने के लिए प्राप्त करनी चाहिए। १९५८ में तत्कालीन शिक्षामंत्री कमलापती त्रिपाठी ने इस संबंध में लिखा है - देश में प्रजातंत्र दृढ़ बनाने के लिए उनकी आधारशिला सुदृढ़ होनी चाहिए। यह आधारशिला है भारत की जनता, जिसके ऊपरराज्य सरकारों का सुयोग्य निर्वाचन निर्भर है तथा समाज एवं राष्ट्र के मंगलमय स्वरूप का निर्धारण अवलम्बित है। इस उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए उपयुक्त शिक्षा का होना अनिवार्य है। यह उपयुक्त शिक्षा समाज द्वारा ही प्राप्त हो सकती है।

विद्यालय परिवर्तन केंद्र :

पाठशाला एक सजीव सामाजिक संस्था है, ऐसा डॉ. आंबेडकर का मानना था। पाठशाला संबंधी उनके विचार थोड़े अलग थे। वे कहते थे की, विद्यालय समाज को नया रूप देने वाले तथा समाज

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 253 परिवर्तन के केंद्र के रूप में एक बड़ी भूमिका निभाता है। इस लिये विद्यालयों के वर्तमान स्वरूपों को बदलना चाहते थे। उनके मतानुसार प्रचलित शिक्षा, शिक्षण पध्दती और विद्यालयीन व्यवस्थाएं बालकों में सामाजिक समरसता व लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों का निर्माण करने में असमर्थ है। विद्यालय का वातावरण व वहां के शिक्षक जितने योग्य होंगे, उसी अनुपात में वहां से शिक्षा प्राप्त करके निकलने वाले छात्र भी उतने ही समर्थ व योग्य होंगे। बाबासाहब पाठशाला को समाज का एक लघुरूप मानते थे, इसलिए वे सामुहिक शिक्षण पध्दती का आग्रह करते थे। उन्होंने अपने छात्र जीवन में इन बातों को बड़ी गंभीरतापूर्वक महसूस कीया था की सामुहिक शिक्षा पध्दतीसे समाज में प्रचलित अनेक दुरप्रथाओं एवं अवधारणाओं को समाप्त किया जा सकता है। शिक्षक राष्ट्रनिर्माता :

डॉ. बाबासाहब शिक्षक को राष्ट्र निर्माता के नाम से संबोधित करते हैं। शिक्षक उनकी दृष्टीसे राष्ट्ररूपी रथ का एक सुयोग्य सारथी होता है। उन्हें लगता है की शिक्षक ज्ञानपिपासु, अनुसंधान करनेवाला व आत्मविश्वासी होना चाहिए। वे मानते थे की व्यक्ति का उन्नयन या उध्दार तभी संभव है, जब उसकी शिक्षा में किसी योग्य व संस्कारवान शिक्षक का योगदान रहा होगा। उनकी मतानुसार शिक्षक अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता होना चाहिए, पूर्वग्रहों से ग्रस्त, अवगुण शिक्षक को उसके स्तर से निचे गिरा देता है। पूर्वग्रह धारण करनेवाला शिक्षक अपने छात्र व सहयोगी शिक्षक के साथ निष्पक्षपूर्ण व्यवहार नहीं कर पाता, इसलिए शिक्षक शीलवान एवं नैतिक गुणों से संपन्न एवं परीपूर्ण होना चाहिए। शिक्षक को अन्य कोई कार्य सिर पर लेकर अपने उत्तरदायित्व का क्षेत्र व्यर्थ ही नहीं बढ़ाना चाहिए। अध्ययन और अध्यापन में शोषकार्य भी सम्मिलित होता है। इस तीन बातों के अलावा शिक्षक को अन्य कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। शिक्षक विद्वान के साथ सर्वश्रुत भी होना चाहिए। उसकी वाणी एवं विचार प्रभावशाली एवं शुद्ध होने चाहिए। वह बहुत उत्साही तथा अपना विषय मनोरंजक प्रस्तुत करने की उसमें क्षमता होनी चाहिए। इससे विद्यार्थी का उत्साह बढ़ेगा, उन्हें शिक्षा में



Handwritten signature or mark in the bottom right corner of the page.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 256
 राष्ट्रीय एकता की है। हम पहले भारतीय है, बाद में हिंदु, मुसलमान, सिंधी है। जैसे तो हम पहले भारतीय और बाद में भी भारतीय कहलाये जाना चाहिए। इससे प्रान्ताभिमान और संभवयाभिमान बढ़ेगा। क्यौकी व्यक्ति से बड़ा देश है। इस लिए राष्ट्रहित सर्वोपरी होना चाहिए। समाज में समता लाने पर एकता होगी और एकता से राष्ट्र सुदृढ़ और सुसामन्य हो सकेगा।

शिक्षा का उद्देश्य संपूर्ण राष्ट्र का विकास करना है। शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय एकता बढ़ती है साथ ही उत्पादकता में भी वृद्धि होती है। शिक्षा किसी भी परिवर्तन का मुख्य साधन है। इस दृष्टी से शिक्षा राष्ट्रीय एकता का भी प्रबल साधन है। अतः शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय विकास के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। राष्ट्रविकास में देश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, क्यौकी राष्ट्रीय विकास ही किसी राष्ट्र के भविष्य की आधारशीला है। राष्ट्र की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं एवं आशाओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था से ही राष्ट्र का विकास सम्भव है। शिक्षा के अन्तर्गत व्यक्ति और समाज के नैतिक मूल्यों, आदर्शों और विकास की विवेचना के साथ साथ बालक के कल्याण एवं विकास को मूर्त रूप दिया जाता है, जिससे व्यक्ति एवं समाज के पूर्ण विकसित हो जाने पर राष्ट्रीय विकास की गती तीव्र होती है। भारत के संविधान में यह स्विकार कीया गया की, राष्ट्र का विकास उसके नागरिकों की शिक्षा पर निर्भर है। इस आधार पर देश के नागरिकों को ऐसी शिक्षा देने पर बल दिया गया, जो उन्हें विकास की सतत प्रक्रिया में सक्रिय तथा उत्पादक के रूप में भागीदार बनाने में सहायक हो। अतः शिक्षा के द्वारा राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को एक निश्चित स्तर तक अनिवार्य रूप से शिक्षित करना आवश्यक है, ताकी वे स्वयं विकसित होकर समाज एवं राष्ट्र के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभासके। शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा प्रणाली ऐसी हो, जो राष्ट्रीय सेवा और विकास हेतु निष्ठावान, चरित्र संपन्न तथा दृढ़ संकल्प वाले बालक—बालिकाओं का निर्माण कर सके और राष्ट्रीय विकास को तीव्र गती प्रदान कर सके। आयोग के अनुसार

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 257
 शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक सुधार यह है की, इसको परिवर्तित करने व्यक्ति के जीवन की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं में इसका सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास किया जाए और इस प्रकार इसको सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का शक्तिशाली साधन बनाया जाए जो राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्ती के लिए आवश्यक है। इस लिए राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ती के लिए शिक्षानिती होनी चाहिए। शिक्षा राष्ट्रीय निती से प्रभावीत होती है और राष्ट्रीय निती का सफल होना संदेहजनक लगता है। यहमाना जा सकता है की राष्ट्रीय निती और शिक्षा परस्पर सम्बन्धित है।

शिक्षारूपी अस्त्र :

शिक्षा ही एक ऐसा अस्त्र है, जिससे समस्त में व्याप्त अज्ञान, अशिक्षा एवं अंधविश्वास से मुक्ति मिलती है और अन्याय, शोषण अथवा दबाव के विरुद्ध सर्ष करने की क्षमता उज्वल हो सकती है। शिक्षा के बिना समाज के विकास की प्रक्रिया अट्टरुय रूप से अवरुद्ध हो जाती है और फीर राष्ट्र के इतिहास में इसका स्थायी नकारात्मक प्रभाव पडता है। इसीलिए उन्होंने भारत के संविधान में अनिवार्य शिक्षा अग्रणीकृत व्यवस्था की। डॉ. आंबेडकर शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे, क्यौकी शिक्षा यह प्रत्येक व्यक्ति का जन्माधिकार है। शिक्षा उसके ज्ञान चक्षुओं के विकास पर भी बल देती है। शिक्षा व्यक्ति को लोकजीवन में संस्था और सुरक्षा प्रदान करती है। शिक्षा समानता, स्वातंत्र्य और भ्रातृत्व की नीव पर आधारित समाज का निर्माण करने का साधन है। इतना ही नहीं शिक्षा राष्ट्र का विकास भी करती है और राष्ट्र की, मानवी की शक्ति और सामाजिक परिवेश की गुणात्मकता निश्चित करती है। कुल मिलकर उनके मतानुसार शिक्षा का उद्देश्य मानवकल्याण है। शिक्षा एक ऐसी दुभारी तलवार के समान है, जिसे चलाना खतरनाक भी हो सकता है, क्यौकी तलवार का उपयोग अथवा दुरुपयोग करना व्यक्ति के शील पर निर्भर है। क्यौकी तलवार से किसी का खुन भी हो सकता है या फिर किसी की रक्षा भी हो सकती है। इस लिये डॉ. आंबेडकर प्रायः नागरीको को



Handwritten signature or mark in the bottom right corner of the page.

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल 260
को मूल अधिकार तथा राज्य के निती निर्देशक तत्वों के समावेश से सामाजिक न्याय से सिद्धान्त को सैवधानिक मान्यता मिल सकी, जो लोकतंत्र की आधारशीलता है। कुल मिलाकर डॉ. भीमराव बाबासाहेब आंबेडकर के शिक्षा दर्शन में विविधता दिखाई देती है। हम सब को अपने कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक रहकर अशिथीलों को शिक्षित करने में अपनी भागीदारी निभाकर देश के माथे से निरक्षरता का कलंक मिटाये। भारत को समता, स्वातंत्र्य एवं भ्रातृत्व भावों पर आधुनिक एकात्म राष्ट्र बनाये, तभी उनका भारत के प्रती देखा सपना पुर होगा और राष्ट्र उन्नती की ओर अग्रसर होने में साह्यरूप होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

- १) हरदान हर्ष — डॉ. भिमराव आंबेडकर जीवन और दर्शन, आवृत्ती १९९५.
- २) चांगदेव खैरमाडे — भिमराव रामजी आंबेडकर, खंड ४.
- ३) कीर धनजय — डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरीत्र, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई.
- ४) डॉ. गुला मजु — भारत में शिक्षा प्रणालिका विकास.
- ५) एस. कुमार, दिलि शर्मा — भारतीय राजनितिक विचारक विश्वकोष, भाग-९, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, रेशन ऑफसेट दिल्ली.

□□□

29

हिंदी साहित्य जगत के शलाका पुरुष अज्ञेय

प्रा. डॉ. संतोषकुमार गुंडप्पा गाजले
हिंदी विभागाध्यक्ष,

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाल (महाराष्ट्र)

भारतवर्ष में साहित्य युजन की एक महान सांस्कृतिक परंपरा रही है, इसी परंपरा से सार ग्रहण कर अपने मौलिक चिंतन एवं मन से अज्ञेय ने एक ऐसी साहित्यिक परंपरा का प्रवर्तन किया है जिसने न सिर्फ हिंदी साहित्य की अपितु समग्र भारतीय साहित्य की धारा ही बदल दी है। यही कारण रहा है कि छत्रयावदोत्तर कवियों में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय सबसे दैदीप्यमान नक्षत्र की तरह हिंदी साहित्य के गगन मंडल पर छाए हुए दिखाई देते हैं। या, यू भी कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य के एक नए आकाश का निर्माण अज्ञेय ने किया है, जहां वे सूर्य की तरह विराजमान हैं। अस्तु, हम देखते हैं कि अज्ञेय को पढ़ना हमेशा एक सुखद और अनिर्वचनीय अनुभव होता है।

जीवन में चिता हमेशा सदानिराग की भांति बहती रहती है। इसी चिंता को कभी काटकर, तो कभी जोड़कर इस बावरे अहेरी ने साहित्य की उस असाध्य बीणा का संधान किया है जिसने हिंदी साहित्य में व्याप सनाटे को सृजन के ऐसे ही क्षण प्रदान किए हैं कि इनकी वाणी ने आगन के पार द्वार को पार कर नव साहित्यिक प्रतिमानों तथा गतिविधियों का सूरणत किया है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के द्वारा अज्ञेय



का.सं. १०



**Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya
Yavatmal (MS)**

**World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad**

This is to certify that,

Dr. / Mr./ Mrs. / Ms. Santosh Bhaskarao Gore

has published his / her Research paper / Article on the topic entitled :

Atma Nirbhar Bharat: Opportunities And Challenges

in the International Peer Reviewed / Referred Journal, Scholars' Vision for the

World Conference On Startup In India And Education With Placement In Abroad

-Chief Editor-
Dr. Uday V Navalekar
Principal
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

-Executive Editor-
Dr. Sanjay S. Tamgadge
Dept. of English
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

- Co Executive Editor-
Dr. Gajanan Rahate
Dept. of Economics
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

CertIFICATE

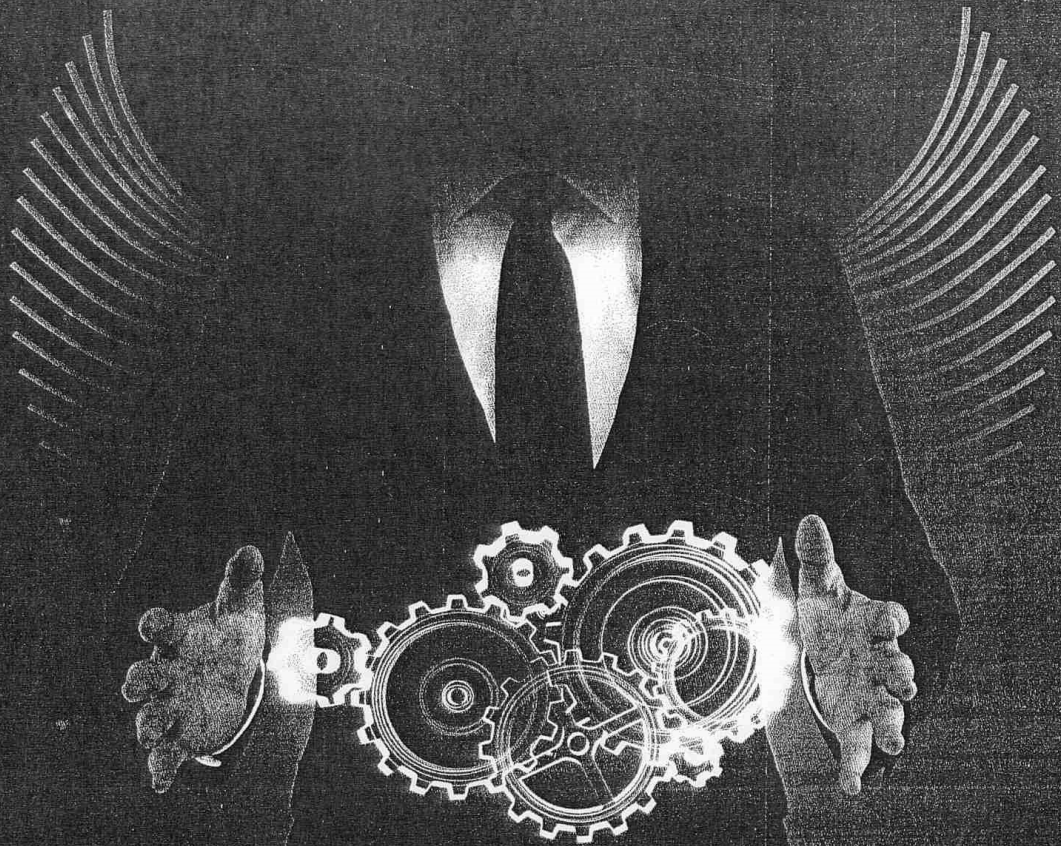
**Scholars'
Vision**

Multi - Disciplinary Bi-annual
International Peer reviewed / Referred Journal



प्र. सं. सं.

ISSN 2278 - 7984



World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

CONFERENCE PROCEEDING

VOLUME - I



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

14.	Re-engineering Academic Library for Better Electronic Service through Consortia Dr. (Ms.) Vaishali P. Gudhade Sudhir B. Sangole	41
15.	Atma Nirbhar Bharat: Opportunities and Challenges Santosh Bhaskarrao Gore	46
16.	Innovative Practices of the College Library Mr. P. S. Sirsat Dr. K. O. Mandgaonkar	52
17.	Ambedkarism Reflected in Bama's Autobiography Karukku Prof. Surendra Bhimrao Raut	55
18.	Bibliotherapeutic Approach and Adolescents Today Mrs. Suvarna S. Parab Dr. K. O. Mandgaonkar	58
19.	Women Health and Nutrition During Lactation Period Prof. Dr. Punam Y. Choudhary	61
२०.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय समाज प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री	६४
२१.	हिंदी साहित्य : हिंदी कहानियों में दलित चेतना प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री । स्वाती सरकटे	६८
२२.	जागतिक व्यापार संघटना आणि भारताची परिस्थिती प्रा. डॉ. माधुरी पं. राखुंडे	७०
२३.	स्टार्टअपमधील आव्हाने आणि संधी प्रा. डॉ. रुपेश एम. कुन्हेकर	७५
२४.	बौद्धिक संपदा : माहिती आणि गुणदोष (Intellectual Property : Information and Pros and Cons) प्रा. डॉ. सौ. वीरा पवन मांडवकर	८०
२५.	पंडीत नेहरू आणि लोकशाही प्रा. डॉ. किरण आईनेनवार	८४
२६.	एक अपत्य असणाऱ्या कुटुंबातील पालक-बालक संबंधावर होणारा परिणाम व उपाययोजना प्रा. कु. रुपाली सुभाषराव कणसे	८६



काशने

Atma Nirbhar Bharat: Opportunities and Challenges

Santosh Bhaskarrao Gore
Assistant Professor
Department of English
Loknayak Bapuji Aney Mahila Mahavidyalaya
Yavatmal
Mob : 9423614077, 8180843748
E-mail : appsantoshbgore@gmail.com

- Abstract -

At this current crucial moment, the whole world is combating with the fatal virus CORONA. The lethal COVID Pandemic is also ubiquitous in India and all Indians along with the rest of the world are skirmishing with the similar mortal enemy. However, it is the inherent tendency of the Indians to create steps out of rough stones. They are good at converting adversities into favorable conditions. In this contingency also, Indians have with them the sole intention of translating this virulent disease into glorified prospects. India has been functioning on immunization and vaccination similar to further developed countries. At the same time, India has also been functioning on systematic and scientific progress for building India self reliant rather on almost Import free situation. The current state of affairs is of such temperament that we tend to go for additional Imports in contrast to Exports. Consequently, a great quantity of our overseas preserve walks off. The PPE supplies utilized for therapeutic discipline is almost certainly the greatest illustration of the similar. Prior to this deadly devastating disease, India had been importing PPE Kits from a variety of nations. But, because of this Pandemic of COVID-19, deficiency of PPE kits has been taking place all across the globe including India. In place of depending on imports and disbursing elevated costs, India has preferred the approach of manufacturing itself being reliant on its individual potentials and commenced industrializing the PPE Kits. At present, the consequence of it is that Indians are exporting PPE kits as an alternative of importing it. All this complete state of affairs is a colossal stride leaping at the forefront towards building our India Aatmanirbhar or "Aatmanirbhar Bharat". From the time when India is a developing financial system, it is the prevalent mounting emergent financial system throughout the world as well. Consequently, the stride develops into further significant epoch for the gigantic fiscal progress on this road. Conversely, with an innovative radiance, abundant industries are emergent and well equipped to acquire jeopardy to turn into

autonomous state to each and every single kind of challenge to visage in the illumination of the novel expectation of India which is "Aatmanirbhar Bharat".

- Keywords -

Pandemic, COVID-19, Export and Import, Aatmanirbhar Bharat, PPE Kits, Financial System, Fiscal Progress

Introduction

The Pandemic COVID-19 has revolutionized the whole planet radically. The complete earth has been devastated not only in provisions of medicinal science but also in the spheres of financial system, service sector, money inflation and stable progress. Out respectable and honorable Prime Minister Mr. Narendra Damodardasji Modi has as well announced that COVID-19 catastrophe has, even though, formed a pandemic of virulent disease, however, this is furthermore the precise occasion to go round with this pandemic into an occasion to expand the motherland of personal determination and desire in the structure of Aatmanirbhar Bharat. The perception of Aatmanirbhar Bharat was essentially in the milieu that the belongings which were imported earlier than the COVID, now, shall be produced in India. This must be carried out not only for personal utilization but also for the export. The Indian government has formulated supreme magnitude for the sole aim of self reliance in its guiding principles, strategies and performance. The COVID-19 Pandemic has taught us and compelled us how to pace up one and the same and what labors shall be placed for it. Aatmanirbhar Bharat Crusade is the upshot of the similar. It is the juncture to capture audacious resolutions concerning venture for endorsing industrialized economy in India merely. All Indians have to escape out from the conventional outlook of Command and Control to Plug and Play technique. The government has emphasized on Public Centric, Public driven and Planet friendly growth governance configuration. The central government has crafted this all at no cost for the peasants and pastoral financial



Santosh Gore

system from the slavery of hundreds of years. They are at liberty to put on the market wherever they wish to go for all over their motherland. India has battled it out not only with COVID-19 Pandemic but also with a range of additional natural menaces and challenges too; for instance: Floods, Earthquakes and supplementary, but most significant issues like battle. All the Indians have forever endeavored to transform the catastrophe into the prospects. "We have to spin disasters into prospects for generating an Aatmanirbhar Bharat and obtain footsteps to guarantee that manufactured goods that we import from somewhere else are produced and manufactured in India," asserted Modiji. This is the high occasion when not only the metropolitan areas having urbanized amenities, but also each rural community forming villages and District of the nation shall be self dependent and self reliant. This is a renowned reality in the perspective of India that it shall manufacture for them and hit upon markets in further nations and with the intention of the authentic connotation of building India self reliant. All the Indians have extensively desired that our nation should become self-reliant in spheres akin to therapeutic and medical paraphernalia, industrialized defense equipments, mechanized advanced electronic and technical goods, coal and minerals, edible oil and countless further stuff.

Opportunities

1. **Vocal for Local - A New Game Changer :** The Prime Minister emphasized the fact that the nation acknowledged record breaking Foreign Direct Investments throughout the previous financial year and moreover the FDI escalation was recorded at 18%. He asserted that yet for the duration of the COVID-19 lethal pandemic, huge international corporations are gazing at India with great hopes. He then reemphasized the 'Vocal for Local' entitle and asserted that India should endeavor for fulfilling the requirements of the whole world as well. He marveled how long the nation would still export raw materials and supplies and import finished goods and products. He stated India has enormous natural resources and wealth. So, the significant demand of the hour is value addition. "All the citizens have to encompass a frame of mind of liberated India. This is the solitary approach to construct 'vocal for local'. We should forever realize and appreciate our local goods and products. If we don't accomplish that, our products won't obtain the panorama to embark on to superior level and can't be inspired and encouraged. Aatmanirbhar Bharat crusade does not indicate only creating declines in imports but moreover, it endeavors to increase the competence of India and its ingenuity by means of the dexterities at the most advantageous level. At this moment, we have to manoeuvre at the forefront with

the mantra of 'make for the world' mutually with Make-in-India", he restated. The country has to progress forward by means of the mantra of 'Make in India' similarly as 'Make for World'. Aatmanirbhar Bharat isn't from now on purely an expression but has turned out to be a mantra and captivated public's creative imagination. It ensued that apprehensions are persistently hoisted on it and as well recognized the challenges further on. But, simultaneously, it has been emphasized that there are millions of elucidations obtainable all the time for such challenges. Surrounded by the devastating catastrophe of the COVID-19 pandemic, he stated, "1.30 billion Indians have taken an oath to shape an 'Aatmanirbhar Bharat'. An insistence is obligatory on the prerequisite to provoke eradicate warehouses and storehouses stating that the entire nation has got to manoeuvre towards multi-modal connectivity infrastructure. Vocal for Local, Re-Skill and Up-Skill campaigns will elevate the superiority of livelihood of each and every citizen below the non-public earnings. India, currently, is even, dedicated for the conservation in addition to endorsement of its biodiversity.

In accordance with data from the Stockholm International Peace Research Institute (SIPRI), India was the world's second-largest arms importer, accounting for approximately nine of the global arms imports from 2015-19. The reliance of Russian arms is at the present decreased and India has to simply branch out its Stock of Arms and build major defense pacts with USA, Israel and France too. As indicated by an additional report with the title 'Trends In World Military Expenditure, 2019', India is the third-largest military client spending on defense all over the world, following the US and China, with its military expenditure mounting by 6.8% to 71.1 Billion Dollar in 2019. In their book with the title, 'Arming Without Aiming: India's Military Modernization', South Asia defense expert Stephen P. Cohen and Sunil Dasgupta, a Senior Fellow at Brookings, alluded to the deficiency of a consistent military stragem, yet as want of political determination in consecutive governments, as causes at the back of India flawing to generate its defense industrializing potentials. Nevertheless, a few diverse preferences, that appear to acquire, have been prepared within the most recent few years. Performing on its 'Make in India' oratory, the government has pioneered a few procedures to control local defense industrialized equipments, searching associations between engineering, industry, academic world and furthermore the corporate and private sector. Nonetheless, in this year, the Indian association for security research known as Defense Research and Development Organization



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

(DRDO) is anticipated to launch an assortment of laboratories for the progress of the innovative and futuristic technological expertise by the name of its most modern venture DRDO Young Scientist Laboratories. These laboratories were stipulated to be located at Bengaluru, Mumbai, Chennai, Kolkata and Hyderabad. Additionally, the government was moreover coming across to deliver MSMEs, who contribute to protective military paraphernalia i.e. gears with asset funding. These procedures are in sequence with the government's visualization to construct India solitary in each of the most excellent five defense and aerospace producers all over the world with a yearly defense exports objective of around 5 billion dollar by 2025. At this moment, around 194 defense technological startups are occupied in creative manufacturing under the regulation of government's 'Startup India' mission. Of these, to a certain extent, 50 are inventing novel 'fit-for-military-use' expertise with ultra modern technologies and products under the government's enterprise, 'Innovations for Defense Excellence'. These all startups are creating it extra comfortable situation to hit upon elucidations to the diverse tribulations which are stumbled upon in its Defense India Startup Challenges (DISC), commencing from personal splinter-proof protection suits to real-time positioning systems. In 2018, the government initiated 'Innovations for Defense Excellence', a venture to encourage the entrepreneurial enthusiasm among MSMEs, startups, individuals, research and development organizations and academic world. All the way through the enterprise, those indicating competence of emerging pioneering technologies in defense are endowed with both financial support and incubation sustenance. The government's Defense India Startup Challenges (DISC), which consist of crisis proclamations, consider about leveraging startups' competences to abide by the necessities of soldiers. It's financed and administered by the Defense Innovation Organization, a not-for-profit company.

The government, all through this pandemic time, has proclaimed a fiscal package of twenty lakh crore and a variety of financial restructuring has moreover been publicized. This entire plethora of tasks was done under the international package of Aatmanirbhar Bharat Abhiyaan that is self reliant India. The foremost purpose of this setting up was to present a provisional assistance in the shape of diminution in liquidity-critical situation occurred to deprived populace by relocating the currency in their bank accounts. The second one was to bestow alterations of extended tenure nature in a variety of expansion decisive regions so that they can be

internationally ready for action and eye-catching with facing cut throat competition at the universal level. These steps of measures as amalgamation with each other will create a prospect for the augmentation in a range of segments such as Agriculture, Mining and Defense and Aviation, Micro and small enterprises, Coal and Mining, etc. The force of this Incentive Package has been in an assortment of spheres. For instance, in case of primary segment, the actions proclaimed for agriculture and associated spheres are mighty transformative and facilitated India in constructing "One Nation, One Market". This all was proposed to create the food globe of the earth. Likewise, for secondary sector, a package of three Lakh Crore through the competence of Collateral Free Loan facility has helped the MSME segment to make kick start the sector. The package of Rs. 20 lakh crore encompasses financial and pecuniary actions mutually, the latter being within the environment of credit guarantees and liquidity infusions into banks and other monetary segment organizations in preference to the financial system fundamentally. Majority of the package is liquidity procedures that are taken for granted to be passed on by RBI to Banks and Banks to Citizens. This diffusion wouldn't be as silky as a consequence of bungling diffusion of fiscal strategy. In contrast, the lockdown has subordinated comprehensive demand and a monetary incentive is obligatory. Conversely, the package, by relying tremendously on credit concoction to flavor up the financial system, did not distinguish that investment will gain only people across income segments have money to spend. If the remnants of the household financial system are not invigorated, the MSME segment may face a deficiency of demand and its manufacturing may rapidly pop to an exhaustive fiasco. Government maintains that the incentive package is approximately 10% of India's GDP. Nonetheless, funding, it'd be thorny for the reason that the government is concerned as regards including the financial deficit. Nevertheless, the large volume of Indian manufacturing business is by now slightly debt-laden to necessitate up the venture in PSUs. Moreover, it's intricate to scrounge the overseas marketplaces, as rupee with orientation to dollar is the entire time squat.

Diverse measures have to be adopted to emerge out from the complexity faced in this agenda by the means of Enhancing Demand. The financial packages as obligatory for the nation all through the Lockdown epoch desire an ornamental demand all over the nation. The most efficient approach for this is frequently to expend on Greenfield infrastructure. Infrastructure expenditure exceptionally generates



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

configurations that elevates efficiency and broadens expenditure supremacy to the segment of the populace mainly beleaguered by the lockdown, specifically daily wage laborers. For funding the packages as proclaimed by the government, India's obtainable funding of overseas currency exchange reserve situate at all occasion elevated which can be utilized tactically to fund the need of the hour to emerge out from the pessimistic brunt of privatization, clubbed with depressing force of taxation and a variety of loans. A range of development configurations which mirrors the down town forces is not functional if they are not propped up by reforms in all allied segments.

2. **Endeavors at Domicile Territory :** Prime Minister, in his Independence Day speech, has expressed that self-reliance is not a mere word, it is a countrywide determination. We require constructing endeavors at stages to actualize this tenacity. The Prime Minister believed that country could no longer continue to be an exporter of raw materials and importer of refined cargo. To build the nation competent of manufacturing for the globe, we require to formulate thorough-going labors. With the exception of restricting imbalanced rivalry from imports, by means of elevating excise and tariffs, anti-dumping and countervailing duties, non-tariff procedures together with standards; we require to create pains to generate an ecosystem to extend the household and domestic manufacturing industries. We appreciate that in the post-independence era our financial and industrialized progress has been shoddily affected by extreme rules and regulations, bureaucratic barriers, red-tapeism, inspector raj, the communist and socialist outlook of accomplishing business and commercial transactions and strangulation of all our entrepreneurs. In the epoch of innovative monetary strategy, although the oratory was of elating set of laws, red-tapeism, heartening private ventures, in actuality, government strategy hung about intense to only import liberalization, permitting MNCs for the sake of FDI, amending domestic rules and laws to smooth the progress of overseas corporations. Fascination for liberated trade and import liberalization (particularly from China) resulted in demolishing our manufacturing industry, rather than building our industries proficient. FDI furthermore did not lend a hand in the transfer of new-fangled expertise. In its place, for the sake of technology, the depletion of foreign exchange augmented manifold by means of royalty and technological fees.

Now, moment in time has approached to promote domestic labors to amplify aboriginal fabrication. These endeavors are previously perceptible. For escalating fabrication of Active Pharmaceutical Ingredients (APIs), a Production Linked Incentives (PLI) package of in excess of rupees 11 thousand crore has been spun out. For electronics and mobile phones, PLI package of in excess of forty-two thousand crore Rupees has been prearranged. Our homeland has eyewitnessed, how our commerce industry both large and small, acted in response to the Corona challenge by manufacturing PPE kits, N95 masks, ventilators and a lot of extra types of apparatus and equipments. We provided HCQ tablets to the whole world. Pharmaceutical industry is by now geared up to manufacture Corona vaccine.

Challenges

1. **Atmanirbharta or self-reliance cannot be achieved overnight :** Several people consider that in this age of globalization, we are associated a great deal with the remainder of the globe, that our labors to develop into self-reliant can attest to be regressive and desperately suicidal. Such people fall short to realize that steadfastness to self-reliance is not about discontinuing imports from China or to another place altogether, but to steadily diminish reliance on nations like China and structuring domestic industries as maintained by our requirements and resources.

Owing to the indifference of Governments in the earlier period towards discarding of Chinese merchandise, our manufacturing was shattered. Conversely, we ought to re-establish our manufacturing and industry and we require to prepare ourselves to hit upon substitutes. We must not disregard that the majority of the imports from China are those that are either manufactured or could be manufactured in the nation which comprise steel, chemicals, machinery, vehicles, fertilizers, pesticides etc. There are scores of imports, which do not yet involve elevated expertise. Such nil technology goods can effortlessly be fashioned in the nation in a small extent of time. This development can decrease monotonous and senseless imports from China.
2. **Self-reliance is not unattainable :** Even if it is spot on that the objective of self-reliance is not a runaway victory and it is laden with countless stumbling blocks, it is not such thing as unattainable. Quite a lot of reviewers strive to eliminate the proposal of self-reliance on two reckonings: First, they phrase this outlook to be unfeasible because of colossal reliance on some other nations, particularly China and squabble that this category of strategy may outlay profoundly



Handwritten signature or initials in black ink.

as a result of shutting down of manufacturing industries reliant on apparatuses and raw material approaching from China and/or by reason of augmentation in expenditure, as we will have to choose costlier substitutes. Second, they squabble that this sort of outlook to self-reliance will shove us rear to Nehruvian days of protectionism connoting, in this manner, elevated expenditures and bungling industries. In other terms, it will craft the industry collegial. The wrapping up they illustrate with their point of views is that beneath the state of affairs self-reliance is unattainable devoid of stinging the financial system.

On the other hand, they fall short to be grateful for that strategy of self-reliance by heartening fabrication in the nation and cannot be compared with protectionism. Evidently, it is true that, for new commerce and industry to thrive, the import duty on merchandise approaching from overseas will have to be augmented a little to daunt dumping, anti-dumping duties and in a number of cases protect duties may also be required. Standards are furthermore mandatory to avert mediocre overseas merchandise and in conjunction with a congregation of further non-tariff obstacles will have to be forced. Those who label these procedures as protectionist must comprehend that the US enforces additional 6500 non-tariff barriers; China entails in excess of 3,500 such barriers. In contrast, India enforces merely almost 350 such barriers.

It has to be realized that the protectionism prior to the new fiscal strategy of 1991, particularly all through the Nehruvian epoch, escorted to bungling industrialization since, throughout that phase, enormously lofty import duties (100 per cent to 600 per cent) were imposed in India which could be assumed to be a encumbrance to competence and proficiency. The epoch of soaring import tariffs has by now finished subsequent to the WTO drew closer into subsistence. India is previously bound by the WTO administration. But there are provisions and flexibilities in the WTO also, throughout which we can endorse our industries and shield them from the disproportionate rivalry. Enthralment towards unrestrained globalization of the last three decades and the passion of our policymakers towards free trade has escorted to excessive subordinating of import tariffs a great deal lower than the WTO bound tariffs. While, WTO regulations permit India to encompass a standard import duty of up to 40 per cent, our standard import duty is fewer than even 10 per cent. Beneath these provisions, the Government of India augmented import duties on a number of things together with electronics, mobile phones, consumer

goods, etc. from 10 per cent to 20 per cent and this aided dropping imports drastically. In the last two years, between 2017-18 and 2019-20, India's trade discrepancy with China has moved down from \$ 63.2 billion to \$ 48.6 billion. In spite of anti-dumping duties, countervailing duties, we can also enforce non-tariff barriers and promote Indian industries by employing principles and standards. Such procedures cannot be associated with pre-1991 protectionism. Approximately, all the nations enforce tariff and non-tariff barriers for the safeguard and endorsement of their industries, so, the question arises, "Why can't India accomplish the equivalent?" India's independent free trade will provide evidence to be detrimental when other nations are escalating import duties for the sake of a trade battle.

Consequently, reviewers have to appreciate that the incessant turn down of industries owing to low-priced Chinese imports was not in the nation's interest. Why a progressively escalating trade deficit does not divert reviewers is away from intellectual capacity. The need of the hour is that endeavors with hard work should be prepared to discontinue imports, principally with encouragements to our industries. Subsequent to that, by manufacturing goods of global standards, we can accomplish not only the necessities of the nation but also provide momentum to our exports to overseas nations. Since each and every nation is shielding its industries, we cannot associate procedures espoused under the WTO provisions with protectionism. This endeavor of self-reliance by the nation can play a crucial role in hoisting revenue and employment all over the nation.

Conclusion

Ultimately, this is, from now on, fairly obvious that India at all times needs a sort of program which compose itself self-reliant i. e. independent. This is similar to apprehending the reality that we can as well accomplish. The competence of India in manufacturing sphere has never been consumed at its best possible level. Regardless of encompassing huge size of youthful inhabitants and enormous level of Geographical region, all the resources are yet underutilized. This reality possibly had never been comprehended previous to it. Aatmanirbhar Bharat has pioneered the nation, India on the first seat at the sphere of the Industrial world, with demonstrating its competence in mass manufacturing gamut. With Aatmanirbhar agenda countless entrepreneurs have commenced mounting its obtainable competence and launching themselves in the novel regions of manufacturing together with the start ups and small scale entrepreneurs. Still those regions in which the manufacturing was finished external to India and India was perhaps the



Handwritten signature or initials in black ink.

prevalent Importer of their manufacturing, is as well been embarked on throughout this pandemic. Consequently, Aatmanirbhar has endowed a lots of prospects to the approximately all the fragments of manufacturing industry and the nation is looking forward with the expansion and permanence in this. Conversely, a mixture of challenges has furthermore been encountered by India for accomplishing this, but is fairly an expected actuality that complexities are constantly stumbled upon when we initiate working in excess of our current competence and strive to accomplish our most advantageous level. A finely expressed citation is extremely pertinent in this milieu that "Everything is difficult before it becomes easy" and this must be the dictum of each and every Indian citizen to defeat this devastating pandemic of COVID-19 emerging out to be victorious as Aatmanirbhar Bharat eventually.

References

- Ravi Singh (2020) How An Aatmanirbhar Bharat Can Pick Up Pace In The Artificial Intelligence Race.
- Building Aatmanirbhar Bharat & Overcoming COVID-19...www.india.gov.in
- Harshit Rakheja (2020) Can India's Defence Tech Startups Match Up To Aatma Nirbhar Bharat Challenge?
- Duggal, R. (2020, June 18). Aatmanirbhar Bharat Abhiyaan: Abdication of State Responsibility [Web log post].
- Ravi Duggal (2020) Indian Journal of Medical Ethics Blog on Covid 19
- Powering Aatmanirbhar Bharat Through Innovation And Entrepreneurship....<https://niti.gov.in/powering-aatmanirbhar-bharat-through-innovation-and-entrepreneurship>
- Mission Aatmanirbhar Bharat: Decoding Self Reliance and charting road to recovery... <https://www.vifindia.org/article/2020/may/27/mission-aatmanirbhar-bharat-decoding-self-reliance-and-charting-the-road-to-recovery>
- Articles/Prime Minister calls for Aatma Nirbhar Bharat (Self Reliant India)...www.industrialautomationindia.in
- Between Nation and Notion of Self Reliant Aatma Nirbhar....www.businessworld.in



Handwritten signature or mark.

ISSN 2278 - 7984

A person in a dark suit and tie is shown from the chest up, holding a cluster of glowing, interconnected gears. The background is dark with some light streaks on the sides.

World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

CONFERENCE PROCEEDING
VOLUME - IV



Abasaheb



Copyright © By Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya, Yavatmal

No part of this publication may be reproduced or distributed in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopy, recording, or otherwise or stored in a database or retrieval system without the prior written permission of publishers. This edition can be exported from India only by the Publishers.

World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Conference Conducted By -
Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

Multi - Disciplinary Bi-annual
International Peer reviewed / Referred Journal

ISSN 2278 - 7984

Published by : Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

Published at : DnyanPath Publication, Amravati (India)



Reg. Office : FFS-A, Block C, First Floor, Venus Plaza, Shegaon Naka, V.M.V. Road,
Amravati - 444 603 (Maharashtra)
Our Network : Maharashtra, Delhi, Gujrat, Chattisgarh, Telangana, Bihar.
Visit us : www.dnyanpath.org
Contact us : dnyanpathpub@gmail.com
Phone : 08600353712, 09503237806

Printed at Shri Gurudeo Printers, Amravati.

Mahatma Fule Sankul, Shegaon Naka,
V.M.V. Road, Amravati - 444603 (Maharashtra)

Contact us : sanjaytamgadge@rediffmail.com

Mob : 9881557107

Price : ₹ 500/-



काशी

- I N D E X -

1.	Effect of Demonetization on Employment Generation in Micro, Small and Medium Enterprises	1
	Prof. Ajay V. Tagalpallewar	
2.	Startup in India : A Brief Review	4
	Dr. Kamal Rathod	
3.	Use of E-Resources in Education and Research	7
	Dr. Rajabhau V. Bajad	
4.	A Study Opportunities in Commerce Education	10
	Dr. Santosh Bansirao Gaikwad	
5.	Nutritional Education Policies and Programs for Children in China	13
	Dr. Sarita Deshmukh	
6.	Current Trends of Startups	17
	Dr. Sonal S. Chandak	
7.	English Language and Scope in Recent Trends	22
	Dr. Sumedh Ahate	
8.	Role of Indian Judiciary in Resolving Domain Name Disputes and Cyber Squatting	25
	Dr. Vijesh B. Munot Ms. Yogita B. Bora Dr. Vijesh B. Munot Dr. Rajashri Dharmadhikari	
9.	Role of Yoga for Physical and Mental Health	29
	Prof. Dr. Vikas Tone	
10.	Analytical Study on Current Trends of Startup	31
	Prof. Dr. Vilas K. Mahulkar	
11.	New Born Care Practices Among Urban India	38
	Hrishikesh Shirbhate	
12.	Comparative Study of Identity Crisis of Immigrants in Manju Kapur's 'The Immigrant' and Ama Ata Aidoo's 'Our Sister Killjoy'	41
	Dr. Mangesh R. Adgokar Ku. Pratiksha Madghe	
13.	Innovation Through Adventure Sports	47
	Parag Govind Joshi	
14.	Emerging Trends in English Literature	49
	Prof. Ravi Borkar	



Handwritten signature

Nutritional Education Policies and Programs for Children in China

Dr. Sarita Deshmukh

Loknayak Bapuji Aney Mahila Mahavidyalaya
Yavatmal
Mob. : 9545966888

- Abstract -

A double burden of overweight/obesity and malnutrition during childhood is a major concern in China. Dietary intakes in this critical period affect children's physical and cognitive development, and also have health consequences in later life. Therefore, establishing healthy eating habits that will endure is crucial for children. Nutrition education is an effective way in improving nutrition knowledge and attitudes, and healthy eating behaviors. Diverse forms of nutrition improvement programs that targeting children, family, teachers, and school settings have been conducted in many developed countries. However, due to the differences of genetic background, household environment as well as dietary patterns between Chinese children and children from other countries, the existing nutrition education programs for children abroad might not be appropriate for children in China. Thus, nutrition education programs that consider Chinese nutrition-related policies and food supply as well as the local educational resources are required for Chinese children. This review summarized nutrition-related policies and legislations in China and developed countries. A series of evidence-based nutrition education programs that combined educational strategies and environmental supports conducted in the Southwest China Childhood Nutrition and Growth Study were presented. These programs can serve as example models for adopting nutrition interventions to improve nutrition and health status of children in different regions of China.

- Keywords -

Child Nutrition policy; Nutrition education.

Introduction

A balanced diet during childhood is important for healthy growth and may decrease the risks of obesity and chronic diseases in adulthood.¹ In recent years, China has been experiencing a "nutrition transition," i.e., there is a coexistence of under- and over-nutrition linked to unhealthy eating behaviors among children. It has been

reported that the prevalence of overweight and obesity among children aged 7–18 years had increased from 5.3% in 1995 to 20.5% in 2014. Meanwhile, malnutrition and anemia levels are still high, with a prevalence of 12.2% and 6.6%, respectively, in 2014.

Nutrition reflects a complex interaction involving genetic biology, personal dietary behaviors or lifestyle, and the environment. Higher intakes of high-energy and low-nutrient food, less physical activity, and secondary lifestyles have been suggested as predictors of childhood obesity, and environmental factors such as food availability, food marketing strategy, social environment, and dietary cultural practices have been shown to have an impact on personal food choice. To end childhood obesity, the World Health Organization has proposed a series of measures emphasizing effective strategies to counteract obesogenic environments and correct personal dietary behaviors.

Research experience worldwide has shown that implementing interventions targeting individual behavior in the early stage of life has optimal effectiveness. Childhood is a critical period to develop dietary habits that continue onto adulthood, and establishing healthy eating behaviors early has been shown to be effective to reduce nutrition-related health crisis. Therefore, childhood presents a crucial window of opportunity to conduct nutrition intervention. Given the role of nutrition education in enhancing children's knowledge and attitudes regarding nutrition and changing their food choices, it has been recognized as an effective nutrition intervention. Well-designed nutrition education programs carried out among children in the United States, United Kingdom, Germany, Poland, Spain, Japan, India, and China, showed potential regarding improving their nutrition-related attitudes and self-efficacy, and promoting healthy dietary practices. However, for Chinese children, there is a significant gap between urban- and rural-dwelling children in terms of child nutrition, food supply, and educational resources that should be considered in order to carry out cost-effective nutrition education programs. Also, it is necessary to identify the priorities concerning a child's nutrition problems



Handwritten signature or mark.

achievement of children who had received school meals has improved. Moreover, nutritional knowledge, beliefs, and behaviors among students and teachers, as well as guardians, have improved.

Nutrition education programs for children Nutrition education example models for children in China

Nutrition education example models for children in China have been based on a longitudinal cohort study - the Southwest China Childhood Nutrition and Growth study (SCCNG) which had been established to determine the health impacts of certain nutritional factors on a child's growth. Details on the study protocol have been described elsewhere. In brief, the study was conducted with assistance from principals and teachers of 23 selected schools in Sichuan and Guizhou provinces and Chongqing municipality. Before its implementation, parents were informed about the study through the "parents' meeting" and parents or guardians of children provided written consent. Children at these schools were asked to participate, and nearly all of them participated voluntarily except for a few who were absent due to illness. Between 2013 and 2018, 6,967 children were recruited, and they were planned to be followed-up with annually until the age of 15 years. Detailed information on socio-demographic issues, dietary intake, lifestyle behaviors, anthropometry, and pubertal development was collected face-to-face by trained investigators. By the end of 2019, six follow-up assessments had been completed among the children recruited in 2013. Using the collected data from the SCCNG, socio-demographic factors affecting children's diet quality were investigated.⁶⁹ The health impact of nutritional factors on a child's growth was also determined.^{68,70} Based on our findings and the Chinese dietary intake recommendations for children, as well as national nutrition-related policies, a series of evidence-based nutrition education programs that combined educational strategies and environmental supports were developed. The purpose of the programs is to serve as example models for adopting nutrition interventions to improve the health status of children in different regions of China.

School Settings

As children spend most of their daytime at school, a healthy school food environment might help them to develop healthy eating behaviors and improve their diet quality. Previous studies have shown that school settings such as types of food available in school cafeterias, snack stores, and vending machines could influence children's food choices and further affect their health status.^{18,89} With the assistance of the school management, a series of nutrition-related school environment support activities were conducted in the SCCNG-participating schools:

School cafeteria menus were changed to consist of healthier alternatives, with a 4-week cycle and seasonal variations. Also, cuisine training was provided for canteen staff once every two weeks and included lessons on healthy food selection; meal preparation methods; and reducing salt, oil, and sugar intake as well as food safety-related knowledge. Moreover, it was suggested that snack stores and vending machines in the participating schools have their unhealthful foods (e.g., sugar-sweetened beverages and high-energy snacks) replaced with healthful foods.

School teachers

In addition to the school settings, nutrition education programs involving teachers are more likely to meet the stated goals since teachers are authority figures in the classroom and could share their knowledge and beliefs about nutrition with students. Evidence has shown that trained schoolteachers could have a positive influence on students' dietary behaviors. Moreover, input from teachers could increase the feasibility of a nutrition education program when enriching nutrition curricula. Given the fact that the majority of teachers in primary and secondary schools lacked nutrition knowledge, nutrition interventions aiming to improve teachers' nutritional knowledge, beliefs, and behaviors were carried out in SCCNG-participating schools. The nutrition interventions for teachers comprised two modules. First, before the beginning of each semester, two teachers (a head teacher and a health educator) in each class were trained by nutrition experts. Workshops consisted of three full days on various topics, such as the importance of a balanced diet to health, the Chinese dietary guidelines for children, and how to choose healthy foods according to the nutrition labeling. Detailed educational materials (e.g., brochures, leaflets, and links to various web materials) were shared. Second, as teachers are key partners in school-based nutrition education, they were encouraged to participate in designing and incorporating the age-appropriate nutrition-related classroom sessions into the school curriculum. Before the implementation, teachers participated in a one-day training session on how to use the curriculum. Detailed information regarding the aims of the nutrition education activities and instructions for their implementation were provided in a manual.

Conclusions

Nutrition education policies and programs for Chinese children are still in their early stages compared with those of most developed countries. Although the participating schools of the SCCNG could implement a model nutrition education program, schools in other regions of China may have different conditions that could affect their decisions as well as specific details about the



Handwritten signature or mark.

LJ

Loknayak

Interdisciplinary Peer Reviewed Journal
For Innovative Research And Evaluation

31-12-21
31-12-21

ISSN (L) 2278 - 4284

Issue :
January
2022
Vol. : IX



कॉलेज

L I J

Copyright © By Loknaya Bapuji Aney Mahila Mahavidyalaya, Yavatmal

No part of this publication may be reproduced or distributed in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopy, recording, or otherwise or stored in a database or retrieval system without the prior written permission of publishers. This edition can be exported from India only by the Publishers.

Loknaya

**Interdisciplinary Peer Reviewed Journal
For Innovative Research And Evaluation**

ISSN (L) 2278-4284

Volume : IX

Issue : January, 2022

Published by : Loknaya Bapuji Aney Mahila Mahavidyalaya, Yavatmal

Published at : Dnyanpath Publication, Amravati. (India)

Mob. 8600353712, 9503237806

Visit us : <http://www.aneymahila.com>

Contact us : loknyak@aneymahila.com

publish.loknyak@aneymahila.com

Mob : 9911771811



Printed At Shri Gurudeo Printers, Amravati.
Mahatma Fule Sankul, Shegaon Naka,
V.M.V. Road, Amravati.444603 (Maharashtra)



Handwritten signature

stress can affect your mental and physical health.

What are some symptoms of stress?

Stress affects everyone differently. Some ways that chronic or long-term stress affects women include:

- Pain, including back pain
- Acne and other skin problems, like rashes or hives
- Headaches
- Upset stomach
- Feeling like you have no control
- Forgetfulness
- Lack of energy
- Lack of focus
- Overeating or not eating enough
- Being easily angered
- Trouble sleeping
- Drug and alcohol misuse
- Loss of interest in things you once enjoyed
- Less interest in sex than usual

What causes stress?

People can feel stress from many different things. Examples of common causes of short-term stress include:

Getting stuck in traffic or missing the bus
An argument with your spouse or partner
Money problems
A deadline at work

Examples of common causes of long-term stress include :

Poverty and financial worries. Depression is more common in women whose families live below the federal poverty line. Women in poverty who care for children or other family members as well as themselves may experience more severe stress.

Discrimination. All women are at risk for discrimination, such as gender discrimination at

work. Some women experience discrimination based on their race, ethnicity, or sexual orientation. Stressful events, such as learning a new culture (for those new to the United States) or experiencing discrimination, put women at higher risk for depression or anxiety.

Traumatic events. Experiencing trauma, such as being in an accident or disaster or going through emotional, physical, or sexual assault or abuse as a child or an adult, may put you at higher risk of depression and other disorders. Women are more likely than men to experience certain types of violence, such as sexual violence, that are more likely to cause mental health conditions, such as post-traumatic stress disorder (PTSD).

Ongoing, low-level stress can be hard to notice, but it can also lead to serious health problems. If you feel stressed, try these tips to help you manage your stress. If you need more help managing stress, talk to a doctor, nurse, or mental health professional.

How does stress affect women's health?

Some of the health effects of stress are the same for men and women. For example, stress can cause trouble sleeping and weaker immune systems. But there are other ways that stress affects women.

Headaches and migraines. When you are stressed, your muscles tense up. Long-term tension can lead to headache, migraine, and general body aches and pains. Tension-type headaches are common in women.

Depression and anxiety. In the past year, women were almost twice as likely as men to have symptoms of depression. Women are more likely than men to have an anxiety disorder, including post-traumatic stress disorder, panic disorder, or obsessive-compulsive disorder. Research suggests that women may feel the symptoms of stress more or get more of the symptoms of stress than men.



Handwritten signature or mark.

This can raise their risk of depression and anxiety.

Heart problems. High stress levels can raise your blood pressure and heart rate. Over time, high blood pressure can cause serious health problems, such as stroke and heart attacks. Younger women with a history of heart problems especially may be at risk of the negative effects of stress on the heart. Learn more about stress and heart disease.

Upset stomach. Short-term stress can cause stomach issues such as diarrhea or vomiting. Long-term stress can lead to irritable bowel syndrome (IBS), a condition that is twice as common in women as in men. Stress can make IBS symptoms such as gas and bloating worse.

Obesity. The link between stress and weight gain is stronger for women than for men. Stress increases the amount of a hormone in your body called cortisol, which can lead to overeating and cause your body to store fat.

Problems getting pregnant. Women with higher levels of stress are more likely to have problems getting pregnant than women with lower levels of stress. Also, not being able to get pregnant when you want to can be a source of stress.

Menstrual cycle problems. Women who experience chronic or long-term stress may have more severe premenstrual syndrome (PMS) symptoms or irregular periods. Some studies link past abuse or trauma to more severe PMS.

Decreased sex drive. Women with long-term stress may take longer to get aroused and may have less sex drive than women with lower levels of stress. While not surprising, at least one study found that women with higher stress levels were more distracted during sex than other women.

How Does Stress Affect a Woman's Mind and Body?

While men and women can react similarly in many situations, stressful or otherwise, there

does seem to be some difference in how men and women react to stress. While the exact mechanisms aren't clear, and findings are conflicting, some research suggests that differences in the brain and body may make women more physically and emotionally sensitive to certain types of stress.

"Women tend to react to stress differently than men," says Dr. Rosch. "They don't respond with the fight or flight response - they're more apt to negotiate."

In previous research, psychologists have called this the "tend and befriend" response. This may have come about, theorize scientists, because it would have been evolutionarily adaptive for women to protect offspring rather than attack or flee from predators.

The "tend and befriend" response, some think, may be mediated by oxytocin, an anti-stress hormone produced in women during childbirth, breast-feeding, and in both sexes during orgasm and other moments of human connection. This hormone may help women more than men, according to Rosch.

Studies have shown that frequent hugs from a partner can increase levels of oxytocin - and lower levels of blood pressure - in women. Research has also found that women who have positive contact with a partner before a stressful situation show lower levels of the stress hormone cortisol and lower heart rates.

What can I do to help manage my stress?

Everyone has to deal with stress at some point in their lives. You can take steps to help handle stress in a positive way.

Take deep breaths. This forces you to breathe slower and helps your muscles relax. The extra oxygen sends a message to your brain to calm and relax the body.



Handwritten signature

Issue : January 2022 // Vol. : IX

There are six popular types of meditation practice:

- mindfulness meditation
- spiritual meditation
- focused meditation
- movement meditation
- mantra meditation
- transcendental meditation

Not all meditation styles are right for everyone. These practices require different skills

and mindsets. How do you know which practice is right for you?

"It's what feels comfortable and what you feel encouraged to practice," says Mira Dessy, a meditation author and holistic nutritionist.

References :

1. www.healthline.com
2. www.womenshealth.gov
3. www.healthline.com
4. www.womenshealthmag.com



Handwritten signature or mark.



Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya
Yavatmal (MS)

World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

This is to certify that,

Dr. / Mr./ Mrs. / Ms.

प्रा. डॉ. लता वाघेला

has published his / her Research paper / Article on the topic entitled :

माहिती तंत्रज्ञान युगात जागतिक स्तरावरील बदलत्या आहार पद्धती - एक अभ्यास

in the International Peer Reviewed / Referred Journal, Scholars' Vision for the

World Conference On Startup In India And Education With Placement In Abroad

-Chief Editor-

Dr. Uday V Navalekar

Principal
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

-Executive Editor-

Dr. Sanjay S. Tamgadge

Dept. of English
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

- Co Executive Editor-

Dr. Gajanan Rahate

Dept. of Economics
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

507

कौशिक

स. वाघेला 3.2.2.

Certificates

Scholars'
Vision

Multi- Disciplinary Bi-annual
International Peer-reviewed / Referred Journal



ISSN 2278 - 7984



World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

CONFERENCE PROCEEDING
VOLUME - III



Handwritten signature or mark.

माहिती तंत्रज्ञान युगात जागतिक स्तरावरील बदलत्या आहार पद्धती - एक अभ्यास



प्रा. डॉ. लता वाघेला

प्रोफेसर गृहअर्थशास्त्र विभाग प्रमुख

लो. ना. बा. अणे महिला महाविद्यालय, यवतमाळ

मो. ९८८९४८७७७८

ई-मेल : latawaghela11@gmail.com

- सारांश -

आजच्या आधुनिक युगात तांत्रिक विकासामुळे मानवी जिवन जगणे फार सुकर आणि सोपे झाले आहे तांत्रिक प्रगतीमुळे शारीरिक कष्टावर मात करून यशस्वी होण्याच्या नवनविन स्पर्धेमुळे व्यक्तीला त्याच्या आवश्यकतेपेक्षा, ताकदीपेक्षा जास्त काम करण्यास भाग पाडले म्हणजे कमी शारीरिक हालचाल आणि अधिक वैचारीक कार्य अशा गतीशील जीवनाच्या बिघडलेल्या घड्याळाने व्यक्तीचा हक्काची रोजची सात तासांची निवांत झोप उडवली आहे. अर्थात आरोग्यासाठी आवश्यक असलेल्या झोप, विश्रांती, व्यायाम, आरोग्य इतकेच नव्हे तर आहारावर सुद्धा परिणाम झाला आहे. त्यामुळे आज जागतिक स्तरावर विविध प्रकारच्या आहार पद्धतीचा वापर औषध म्हणून केला जात आहे. या उपचारात्मक आहाराबाबतची माहिती जागतिक स्तरावर सर्वांना असणे गरजेचे आहे.

प्रस्तावना

देशातील प्रत्येक नागरिकाचे आरोग्य योग्यप्रकारे जोपासणे हे देशाचे महत्वपूर्ण कर्तव्य आहे. या आरोग्यासाठी योग्य प्रकारे पोषण घेणे ही मानवाची प्राथमिक गरज आहे. कारण आहार आणि आरोग्य या एकाच नाण्याच्या दोन बाजू आहेत. म्हणून उत्तम आरोग्यासाठी उत्तम पोषणावर विशेषत्वाने भर देणे आवश्यक ठरते. कोणत्याही देशाच्या सर्वांगीण विकासाची धुरा त्या देशातील नागरिकांच्या कार्यक्षमतेवर अवलंबून असते. ही कार्यक्षमता उत्तम आरोग्य आणि उत्तम आरोग्य हे उत्तम व पोषक आहारावर अवलंबून असते. ऋऋआरोग्य धनसंपदाफ्रया उक्तीतच सारे सार समावले आहे. परंतु बदलत्या जीवनशैलीमध्ये खाण्यापिण्याच्या सवयीमध्ये प्रचंड बदल झालेला आहे.

शिक्षणा बरोबरच आरोग्य हे राष्ट्रीय विकासाचे एक प्रभावी साधन समजले जाते. कारण उत्तम आरोग्य हे सुखी जीवनाची गुरुकिल्ली आहे. निरामय जीवन जगण्यासाठी आरोग्याच्या मुलभूत घटकांची जाणीव प्रत्येकाला असणे आवश्यक आहे. आपल्याला ज्या समाजात वावरायचे असेल त्या समाजाची पर्यायाने राष्ट्रची उन्नत साधनावयाची असेल तर समाजातील प्रत्येक घटकाने स्वतःचे व स्वतःच्या कुटुंबियांचे आरोग्य उत्तम राखणे आज अत्यावश्यक आहे. कारण आपण निरोगी असावे असे प्रत्येकाला वाटते. निरोगी शरीरातच शांत व संतुलीत मन असते. म्हणून महात्मा गांधी म्हणतात की, 'निरोगी शरीरात निरोगी मन असते, हेच खरे आरोग्य होय' असे उत्तम आरोग्याची इच्छा असणार्या प्रत्येक व्यक्तीने आपल्या जिवनात पौष्टिक आणि पोषक आहाराला महत्त्व द्यावे. कारण अन्न व आरोग्य यांचा घनिष्ठ संबंध असल्यामुळे देशातील उत्तम आणि निरोगी नागरिकांसाठी या बाबीकडे लक्ष देणे अगत्यपूर्ण ठरते.

परंतु अलिकडे भारतात आहारविषयी विषम स्थिती निर्माण झाली आहे. शहरीच नव्हे तर ग्रामीण भागातील लोकांमध्ये बाजारातील खाद्य पदार्थ जंकफुड, रेडी टु इट, इन्स्टंट पदार्थ खाण्याचे प्रमाण वाढले. त्यामुळे त्यांचा आरोग्यावरील दृष्टपरिणाम घरोघरी दृष्टीक्षेपात येत आहे. याच बरोबर आधुनिक जिवन शैली मुळे शारीरिक मेहनत कमी आणि खाणे जास्त, अनियमित जिवन शैली, अपुरी झोप, व्यायामाचा अभाव, यामुळे जिवनशैली संबंधीत आजाराचे प्रमाण वाढल्याचे निदर्शनास येते. त्यामुळे आज पाश्चातीकरणाचा आहारावर आणि आहाराचा आरोग्यावर झालेला दृष्टरीणाम प्रकर्षाने जावू लागला आहे. हा प्रभाव कमी करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न होणे अपरिहार्य आहे.



काशं

वरील आहारावर जागतिक स्तरावरील संशोधनानंतर असे दिसून आले की, या भागात चयापचयाचे आजार सर्वात जास्त प्रमाणात आढळले म्हणून या आहार पद्धतीचे अनुकरण आपआपल्या खाद्य संस्कृतीनुसार करणे आजच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगात किती फायदेशीर ठरेल असे अनेक संशोधकाचे मत एक्य आहे.

भारतीय संस्कृतीचा इतिहास पाहता प्राचीन काळापासूनच आहाराचे मोलाचे स्थान असल्याचे दिसून येते. योग्य आणि संतुलीत आहार हा शारीरिक वाढीसाठी अत्यावश्यक असतोच परंतु शारीरिक आणि मानसिक सर्वांगीण विकासासाठीही गरजेचा असतो. म्हणून आहारशास्त्रामध्ये विविध आहाराचे प्रकार प्रचलीत आहेत. त्यापैकी मॅक्रोबायोटीक डाएट हा एक प्रसार आहे. जपानी लोकांनी ही या आहाराचा आपल्या संस्कृतीत समावेश केला आहे. जपानी लोकांच्या पुरातन काळात असा एक काळ येऊन गेला की ज्यात स्थानिक धान्य, कडधान्य, फळ आणि भाज्यांच्या सेवनाला प्राधान्य होते. तर मांसाहारी पदार्थ, दुध आणि दुग्धजन्य पदार्थ आहारात वर्ज्य होते.

मायक्रोबायोटीक आहार हा जपानी ऋतूयुक्त आणि यानाफ्रुतत्वावर ही आधारीत आहे. या तत्त्वामध्ये विरोधाभास असणार्या आहारविषयक घटक मुल्यांचे संयोजन अथवा एकत्रीकरण करणे अपेक्षित असते. यीन तत्त्वाचे पदार्थ हे शीतल प्रवृत्तीचे व हलके (पचनाला) असतात. याना तत्त्वाचे पदार्थ जड, गरम व दाट असतात या आहारातील पथ्य पाळतांना सुमारे १० आहारतक्ते (चार्ट्स) दिले जातात. ज्या मधील पदार्थांची काठिण्य पातळी हळुहळू वाढत जाते. जेणे करून ऋतूयुक्त-यानाफ्रुत तत्त्वाचे ५:१ असे प्रमाण साध्य होईल टॉमटो, मिरे, पालक, बटाटे, वांगे, अँव्होकोडो अशा पदार्थांचा समावेश कमी प्रमाणात करण्याचा सल्ला दिला जातो. कारण वरील नमुद केलेले पदार्थ यीन तत्त्वाचे असल्याचे ग्राह्य धरले जाते मॅक्रोबायोटीक आहारातील स्वयंपाक पद्धती १) अन्न हे शक्यतो उकडून, वाफवून, भाजून शिजवावे २) तेलकट पदार्थ आणि विद्युत चुलीतील बनवलेले पदार्थ टाळणे ३) नैसर्गिक घटकांनी बनवलेली भांडी, चुलीचा वापर करावा ४) प्लास्टिक आणि इतर धातुचा वापर टाळावा. मॅक्रोबायोटीक आहार आणि अशा काही तत्त्वम आहार पद्धतीमध्ये योग्य संतुलनाचा अभाव असतो. या प्रकाराच्या आहार पद्धतीमुळे शरीरात पोषक तत्त्वांची कमतरता आढळते आणि त्यामुळे अनेक शारीरिक व्याधी जडू शकतात. उदा. कॅल्शियम, प्रथिने, जिव. अ.ड

ब१२, झिक इ. मधून या पोषक तत्त्वाची शरीरातल्या प्रमाणाची वेळोवेळी तपासणी/चाचणी करावी या आहार पद्धतीचा दिर्घकालीन वापर हा शरीरासाठी प्रतिकूल ठरू शकतो.

माहिती तंत्रज्ञानच्या युगात लहान मुलांपासून अबालवृद्धापर्यंत प्रत्येक व्यक्ती एक ताण तणावाखाली वावरतांना दिसतो. परिणामी गरजेपेक्षा जास्तखाणे पण पचविण्यासाठी व्यायाम न करणे यामुळे वजनात वाढ होणे ही सर्व सामान्य आरोग्याची तक्रार दिसू लागली. याला उपाय म्हणजे केवळ संतुलीत आहार होय. ज्या आहारात कार्बोटक, प्रथिन, स्निग्ध, क्षार, जिवनसत्त्व पाणी आणि फायबरचे (तंतुमय पदार्थ) प्रमाण योग्य असते होय. अशा आहारातून रोगप्रतिकारक क्षमता वाढून, स्नायुंची प्रथिनाची गरज नैसर्गिकरीत्या पूर्ण केली जाते. पण सद्याच्या आहारात या फायबरचे प्रमाण हळुहळू कमी होत असल्यामुळे आरोग्यावरील परिणाम दिवसें न दिवस वाढत चालले आहे. आहारातील फायबरचे प्रमाण संतुलीत करण्याच्या दृष्टीने पुढील ५ प्रकारच्या पदार्थांचा आहार उपयोग केल्यास आवश्यक जिवनसत्त्व, क्षार तसेच एन्टीऑक्स्टिडन्ट मिळून अपचन होणार नाही. यासाठी आहारात भाज्या, फळांचे रस, भाजी, कोशींबीर, सॅलेड, रायते, हिरव्या भाज्या पालेभाज्या, सुप आणि फळांचा वापर करावा. जसे सुका मेव्यात बदाम, अंजीर, काळा मनुका, अक्रोड, खजुर याचा वापर केल्यास हिमोग्लोबीन, फॉलीक अॅसीडचा पुरवठा होतो म्हणजे आहाराद्वारा आजारावर उपचार ही करता येतो.

ख्रिस्त पुर्व ४०० मध्ये हिप्पोक्रेटस म्हणाला होता की, "फुड इन मेडिसिन" हे आता परत सिद्ध होत आहे. आपल्या आहारातून मिळणार्या अन्न घटकामधून आपण आपल्या अनुवंशिक असलेल्या जिन्समध्ये नक्की बदल घडवू शकतो. या नवीन तंत्रज्ञानाला "न्युट्रिजिनोमिक्स" असे म्हणतात यासाठी आपला जेजेटिक प्रोफाईल समजून घेतला तर आपला आहार आपणच ठरवू शकतो. ज्याला "पर्सनलाइज्ड आहार" असे मानले जाते. आपली शारीरिक ठेवण, आजाराची प्रवृत्ती हे सर्व आपण काय खातो कशा वातावरणात राहतो. आपली जिवनशैली या सर्व बाबींचा परिणाम होतो. याचा परिणाम शरीरातील चांगल्या जंतूला (नटफ्लोरा) चालना मिळते. हे सर्वांचा स्थूलता प्रतिबंधक, प्रतिकारशक्ती, आजाराची प्रवृत्ती. मानसिक ताण तणावाचा शरीरावर होणारा परिणाम याच्या आरोग्यावर परिणाम होतो थोडक्यात जी आपली शारीरिक प्रवृत्ती आहे ती प्रत्येकाने समजून घेतली तर त्या प्रमाणे आपला



काशिके

Comp
3.1.3
श्री. मोहो

- I N D E X -

1. Importance and Existence of Conventional and Technology Based Methods in Teaching - Learning English Language Prof. Ajay V. Rele	1
2. Happy Teacher Creates Happy Classroom Anju Ankushrao Zade	4
3. Psychology and Entrepreneurship Development Dr. Narendra Narayan Daware	7
4. Concept of Nutrition Human Life in Abroad Prof. Dr. Seema B. Adhau	9
5. Bibliometric to Altmetric : An Impact Factor of Knowledge Swati S. Kandalkar Dr. Sonal U. Utane Dr. Vaishali P. Gudadhe	11
6. Analytical Study of Datasets Ms. Shilpa B. Manohar Dr. Vaishali P. Gudadhe (Chaukhande)	15
7. Best and Innovative Practices in College Library Pravin Anantrao Joshi	20
8. Understanding the Role of Education and Unemployment in India Ratndip Bhimrao Gangale	23
9. The Depiction of New Women in Shobha De's Novel Smita Mohod	26
10. Corollary of Digital Payment Schemes and ITS Applications Prof. Dr. Haridas Manikrao Dhurve	28
11. Challenges and Opportunities in Commerce Education Dr. Wasudeo D. Golait	32
12. The Thematic Study of Philip Larkin's " The Less Deceived" Ajay Vitthalrao Chandore	35
१३. ग्रामीण छात्रों की यौनशिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अनुशीलन प्रा. डॉ. अंशु रा. साहु	३९
१४. आधुनिक काळात संगीत क्षेत्रात उपलब्ध व्यवसायाच्या काही निवडक संधी प्रा. डॉ. अर्चना सं. देशपांडे	४३



काशने

The Depiction of New Women in Shobha De's Novel

Smita Mohod

Assistant Professor

L. B. Aney Mahila Mahavidyalaya

Yavatmal

E-mail : smitamohod3@gmail.com

- Abstract -

Shobha De is an eminent and most popular Indian woman writer in English. She is the first woman to explore the world of urban woman of higher social strata. De has work for the complete emancipation of woman. She projects the idea of liberating woman through self realization. However Shobha De's stories are real stories still happening in real life. Human relation based on gender distinctions, masculine domination, woman's predicament relating to tradition and modernity. And Shobha De through ordinary stories bring out the reality of the world around us. In all her novel, she represents the picture of a New Woman. The emphasis is on the image of the woman with critical comments regarding the new emerging woman of modern cosmopolitan India. She portrays the variety of women from the traditional, subjugated and marginalized the extremely modern and liberated woman.

Key Words

Emancipation, marginalized, subjugated, women's predicament.

Introduction

Shobha De the novelist fought spiritedly against all the traditional beliefs and moral values denouncing them. She breaks the world of English fiction by shifting from the male writer's angle to woman angle and emphasis from the external to internal world. The protagonists in the De's novel rebuilds their lost fortunes make all efforts to look glamorous by losing weight and spending money in massage parlours. They try to look and act differently from the conventional and traditional women. A broader evaluation of her work reveals her protest against the old image of women who can't live the way she wants to and do things the way she wants to. The liberation was not fully enjoyed by the women. The woman in Shobha De's novel believe in breaking the age old tradition of enjoying life with pre-marital affairs and extra marital affairs. She takes a plunge into the hearts of the liberated upper class women in contemporary Indian society.

26 - Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

In her novel *Second Thoughts*, the author deploys the agony and anxiety of the newly married woman Maya and her struggles to attend some sort of meaning in her life. At its peak, while Maya's identity is completely lost and she is forced to live completely confining herself to her husband's need she boldly explores her life at Mumbai through her extra marital relationship with Nikhil. She transfigures herself through Showalter first phase the feminine phase to the second phase the feminist phase. Given the title *Second Thoughts* are also quite effective as far as the protagonists affair with Nikhil is concerned. The novel also reveals the Shobha De's examination of new prospects she wanted to explore the new image of new women.

In *Sultry Days*, the novelist presents a group of modern woman who when, ill treated, turn rebellion and protest. Nisha mother protest against her husband's affair with his secretary. Sujata is another woman who does not lead a life which is defined by her husband. She makes her own rules. She has both female and male lovers. Further the get together of six former school friends at Reema's house in *Snapshots* also reveals how the women are obsessed with sex and sensual enjoyment. They express their grievance against men in general and husband in particular. They break the social norms and moral codes. Most of the women in the novel bored with her husband seek new relationship outside marriage and challenge the patriarchal system.

Strange Obsession is an account of gorgeous young super model Amrita Agrawal. Her exquisiteness fluff up envy in the posh world of modeling up on her very incursion in Bombay. One day she draws the interest of the mystifying women called Minakshi Iyenger. As the time passes and the demands of her the uninvited suitors grow, Amrita's life turns lurid. The novel spins around the life and licentious relationship of two young women Amrita and Meenakshi. Fundamentally it seems to be psychosomatic citation of a sexual fascination of inexplicable women Meenakshi, also known as a minx and her catastrophic end. According to him, both of them symbolise the different kinds of topology of contemporary urban set up. This seems to be barely better than the school girls



Handwritten signature in black ink, possibly reading 'Smita Mohod'.

playing adult games. It is through the actions and dialogue that Shobha De throws momentous light on the quandary of these two young women Minx and Amrita.

The Novel 'Snapshots' centers on the reunion of a group of school friends several years later in life most of whom are married women. The get-together of the friend is arranged on the insistence of Swati, requesting her friend's telephonically to bring snapshot of their school days. The get-together of these 'Sisters of the Subcontinent' at the house of one of them, Reema, well. Despite their problem and initial resistance, they attend it. There is so much to catch on and memories start to surface some happy, other bittersweet and some downright poisonous. As Swati the spirit behind this get-together tells them "We aren't here your just to chit chat, I want to know everything about your everybody from the time we left School. Every single dirty detail. What happened to all the boyfriends? Where did the school crushes go? And the breathless infatuation? Forced to confront dark secrets that they thought lay buried deep in the past, these women begin to turn against one another and mood of the party turns nightmarish, ending through the suicide of one of them. It is through their behavior and conversation that Shobha De throws significant light on the predicament of women in India. De's fiction is a revolt against society and social norms which are meant for woman subjugation. She has advocated rebellion sort of woman rarely to revolt against the establish social taboos which tie her to behave as passive one and always be subjugated by mans authorities. De has portrayed women characters as an alter ego of man. She seems to favor the view of Betty Friedan.

We now know that the same range of potential abilities exist for women as for men. Women as well as men can only find their identity in work that uses their full capacities. A woman cannot find her identity through others her husband, her children. She cannot find it in the dull routine of domestic and other works.

Socialist Evenings, De's maiden novel depicts the journey of Karuna the central protagonist from an ordinary middle class girl to a socialite. Karuna a prominent Bombay socialite, escape the nightmares of a broken marriage, failed relationship and mentally disturbed sister. The first person narrative reveals the various experiences of Karuna's life. The novel revolves around Karuna who protest against the male assigned roles and identities and prove herself self sufficient woman at the end. The novel describes how Karuna has to live like an alien in her husband's house. At the end she confirms of her state of living that single is good for her. Karuna with all her attempts at ego assertion refuses subscription to stereotypes, to succumb to the hegemony of malist culture. Thus, Socialist Evening depicts the picture of a city women who are not ready to be marginalized by their male counterparts. The superimposition of socio moral values was the

strategy followed by the males to keep them at subordinate position. But these women discard such phallogocentric pattern and the protocols set by the male dominated society.

De's Sister's portrays the image to corporate half sisters Mallika and Alisha who find it very difficult to create their individuality in the world of business after the death of the father Hiralal. Mallika marries Binny a businessman to combine her status in the society. Her half sister, Alisha looks for the company of Amar and Dr. Kurian to please herself. They extend rivalry to get camaraderie in the society. Sex for De 's women is obvious, vivacious and undeniable actuality. Ironically in the novel, Mikki and Alisha are unified only after the death of the latter mother. With caring warmth, Mikki attempts to appease the wounded self of the sister. She assist her to get over all that touching barriers in her life. The novel come to an end with Mikki and Alisha realizes the importance to live as one. De's Sisters has all the peppery components that go into the cooking of the hot American bestseller. De's women were more confident, bossy and valiant in contrast to them male fails. They are not guilty about the extra martial affairs and relationship out of marriages.

Conclusion

Shobha De's novel delineates the awakening of women's consciousness which implies her to strive for self actualization in an absurd and oppressive world. De recognizes the displacement and marginalization of women and attempts to turn the pattern upside down. Through her awakened consciousness of women stands for the human effort capital to be whole human beings regardless of difference in gender, caste and religion. It is to be the credit of Shobha De that in concentration on the struggle of modern women as they assert their independence and attempt to realize their potentials and powers. The woman in Des fictional world belong to the world of showbiz, opulent and romance. Their problem and concerns are different from those of the ordinary a traditional middle-class women. Being educated and wealthy they have an easy access to the new wave of life leading to woman independence. De has tried her best to expose the moral breakdown of modern society in which helpless and forsaken women longs for the fulfillment and wants to fly in the sky fettered. Her women go through the upheaval of life on the physical and emotional level finally to achieve some measure of freedom from social bondage.

References

- De, Shobha Snapshot. New Delhi; Penguin India 1995
- De, Shobha Second Thoughts New Delhi; Penguin India 1996
- De, Shobha Sultry Days New Delhi, Penguin Books India 1994

World Conference on Startup in India and Education with Placement in Abroad - 27



Handwritten signature or mark in the bottom right corner.

ISSN 2278 - 7984

A black and white photograph of a person in a dark suit and tie, holding a cluster of glowing, interconnected gears in their hands. The person's face is obscured by a white mask. The background is dark with some light streaks on the sides.

World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

CONFERENCE PROCEEDING

VOLUME - VII



Handwritten signature in Marathi script.

3.2.2. श्री. खाडके

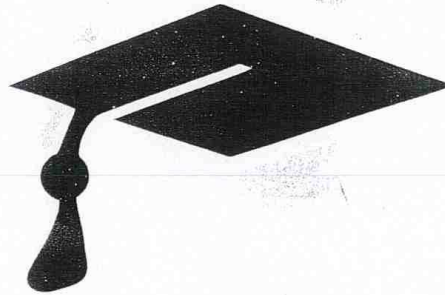
श्री. खाडके

ISSN 2278 - 7984

World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

CONFERENCE PROCEEDING
VOLUME - II



श्री. खाडके

नवीन शिक्षण प्रणाली एक शैक्षणिक आव्हान



डॉ. सुधा मुरलीधर खडके (कडू)

समाजशास्त्र विभाग प्रमुख

लोकनायक बापूजी अणे महिला महाविद्यालय

यवतमाळ

ई-मेल : drsudhakhadke@gmail.com

- सारांश -

शिक्षणाच्या माध्यमातून समानतेच्या पायावर नव समाजाची, कृतीशिल विचारांची समानतेच्या विचारांची उभारणी करणारे महात्मा ज्योतिबा फुले म्हणजे समता, बंधुता, स्वातंत्र्य, बंधुभाव, यावर निष्ठा ठेवून शिक्षणासाठी टाहो फोडणारे समाजसुधारक होय. स्वामी विवेकानंद म्हणतात ऋशिक्षण म्हणजे मनुष्याच्या ठिकाणी जे पूर्वत्व आधिचेच विद्यमान आहे त्याचे प्रकटीकरण होय. साने गुरुजी एका ठिकाणी लिहतात, खरे शिक्षक मुलांना भूतकाळाची कल्पना देऊन भविष्याच्या दरवाजापर्यंत आणून ठेवतात. पूर्वीची शिक्षण पद्धती आणि २१ व्या शतकातील शिक्षण पद्धती यात फार मोठी तफावत आहे. नाविण्याची गरज, नवनिर्मितीची क्षमता ही आज काळाची गरज आहे. शैक्षणिक गुणवत्ता वाढीसाठी शिक्षक प्रयत्नशील आहेत. शैक्षणिक क्षेत्रात राजकारणी लोकांचा वाढता हस्तक्षेप लक्षात घेता राजकारण विरहीत वातावरण भ्रष्टाचारमुक्त व्यवस्थापन उपलब्ध करून अशी शैक्षणिक प्रणाली भारतात विकसीत करणे गरजेचे आहे. क्षेत्र अध्ययन पद्धती, नेतृत्व कौशल्य, साहसी खेळ, संवाद कौशल्य, शारीरिक व बौद्धिक क्षमतांचा विकास असे अनेक विषय शिक्षण क्षेत्रात समाविष्ट आहेत. आपल्या देशाचा विचार केला तर शिक्षण पद्धतीमध्ये होऊ घातलेले आमुलाग्र बदल हे दुर्दैवाने तंत्रज्ञानाशी जोडले आहेत. या तांत्रिक बदलाच्या प्रक्रीयेत विद्यार्थी, शिक्षक व समाज यांची मानसिकता बदलण्याची तरतूद नाही. शोधनिबंधाची उद्दिष्टे - १) नवीन शिक्षण प्रणालीचा तुलनात्मक अभ्यास करणे. गृहीतक - शिक्षण क्षेत्रातील कोणताही बदल हा शिक्षक, शिक्षण व विद्यार्थी शिक्षण प्रणालीच्या केंद्रस्थान आहे. निष्कर्ष - १) बदलत्या शिक्षण प्रणालीचे विद्यार्थ्यांवर सकारात्मक व नकारात्मक

परिणाम दिसून येत आहेत. परीक्षा केंद्रात शिक्षणप्रणाली ऐवजी सर्वांगीण विकास साधणारी शिक्षण प्रणाली उपयुक्त ठरू शकते.

- बीजशब्द -

शिक्षण, शिक्षक, विद्यार्थी, शिक्षण प्रणाली, शैक्षणिक संकल्पना

- प्रस्तावना -

स्वातंत्र्य काळात शेतीला पाणी व मुलांना शिक्षण असा सर्वप्रथम आक्रोश करणारे शिक्षण नसलेला निद्रीत अवस्थेतील समाज, पुरूषास जाग आणून देणारे, शिक्षणाच्या माध्यमातून समानतेच्या पायावर नव समाजाची, कृतीशिल विचारांची समानतेच्या विचारांची उभारणी करणारे महात्मा ज्योतिबा फुले म्हणजे समता, बंधुता, स्वातंत्र्य, बंधुभाव, यावर निष्ठा ठेवून शिक्षणासाठी टाहो फोडणारे समाजसुधारक होय. छत्रपती शाहू महाराज, सयाजीराव गायकवाड, कर्मवीर विठ्ठल रामजी सिंदे, महर्षी धोंडो केशव कर्वे, सावित्रीबाई फुले, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी त्यास विविधांगी खतपाणी घातले व त्याचा आज विशाल वटवृक्ष झाला.

स्वामी विवेकानंद म्हणतात ऋशिक्षण म्हणजे मनुष्याच्या ठिकाणी जे पूर्वत्व आधिचेच विद्यमान आहे त्याचे प्रकटीकरण होय.

साने गुरुजी एका ठिकाणी लिहतात, "खरे शिक्षक मुलांना भूतकाळाची कल्पना देऊन भविष्याच्या दरवाजापर्यंत आणून ठेवतात. शिक्षक हा शिक्षण प्रक्रियेचा केंद्रबिंदू आहे. विद्यार्थी गुणांचा, संस्कारांचा, मूल्यांचा प्रवास शिक्षकापासून सुरू होतो."



काशिके

अध्ययनाची पद्धती

नवीन ज्ञानाच्या प्राप्तीकरिता संशोधन केले जाते. त्यामुळे संशोधन हा बौद्धिक प्रक्रीयेचा भाग बनला आहे. प्राप्त केलेले ज्ञान मानवी जीवनाच्या कल्याणाकरिता उपयोगी ठरेल हा या पद्धतीचा मुख्य उद्देश आहे. या उद्देशाने हा शोधनिबंध सादर करित आहे.

प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी तथ्य संकलनासाठी अनेक ग्रंथ, अहवाल, संकेत स्थळे, शोधनिबंध, गॅझेट, दूरदर्शनवरील चर्चासत्र, सेमिनार, कार्यशाळा तसेच महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांशी प्रत्यक्ष संवाद, साधून विश्लेषण केले आहे. प्रस्तुत शोधनिबंधासाठी तथ्याचे आशय, विश्लेषण, द्वितीयक स्रोत वापरून वस्तुनिष्ठपणे विश्लेषण केलेले आहे. ज्याद्वारे नवीन शिक्षण प्रणालीतील वास्तविकता स्पष्ट करण्यास मदत झाली. नवीन शिक्षण प्रणाली शिक्षकांपुढील नवे आव्हान

आजची शिक्षण प्रणाली कशी आहे? प्रत्यक्षात वास्तविकतेमध्ये ही शिक्षण प्रणाली आपल्याला सद्यः स्थितीत पाहिजे तशीच आहे का? की फारच आगळी वेगळी आहे. त्यामध्ये निश्चीत असा कोणता अभ्यासक्रम आहे? नाविण्यपूर्णता आहे काय? या प्रश्नांचे निरसन होणे गरजेचे आहे. त्यासाठी काही मुद्यांचा परामर्श घ्यावा लागेल.

१) शिक्षक व विद्यार्थी सहसंबंध : शिक्षक हा अध्यापनाचे कार्य करतो. महाविद्यालयीन शिक्षकांचा महामेरू गावापासून तर शहरापर्यंत उभारला आहे. परंतु आजचा विद्यार्थी हा खरच समाधानी आहे का? शिक्षकांचे शिकविण्याचे कार्य असले तरी त्या शिवाय शिक्षणामध्ये आवड, रस निर्माण व्हावा म्हणून इतरही गोष्टींचे ज्ञान शिक्षकाने विद्यार्थ्यांना देणे गरजेचे आहे. विद्यार्थ्यांमध्ये व्यवहारचातुर्य आणून त्याला जगण्याची शैली निर्माण करता आली पाहिजे. यासाठी शिक्षक व विद्यार्थ्यांमध्ये त्याप्रकारचे सहसंबंध प्रस्थापीत होणे अपेक्षित आहे.

२) चॉक आणि टॉक अध्यापन पद्धती : आजही नवीन तंत्रज्ञानाच्या युगात जुन्याच अध्यापन पद्धतीचा वापर शिक्षक करतांना दिसून येतात नव्या माध्यमांचा वापर शिक्षक करीत नाही. त्यामुळे शिक्षण कंटाळवाणे वाटते. त्यामुळे नव्या शिक्षण प्रणालीत चॉक अँड टॉक मेथडच्या प्लॉकडचे शिक्षण अपेक्षित आहे. तेव्हा नवनवीन तंत्रज्ञानाचा वापर करून विद्यार्थ्यांना नवीन जगाची ओळख करून देता आली पाहिजे. त्यामुळे विद्यार्थी कंटाळवाणे होणार नाही.

३) व्यावसायिक शिक्षणाचा अभाव : आजही पारंपारिक शैक्षणिक साधनांवर आधारित शिक्षण चालू आहे. बराच काळ लोटून गेला आहे बदलत्या काळानुसार तंत्रज्ञानाशी संबंधित, व्यवसायभिमुख शिक्षण पद्धती अवलंबिणे, नवनवीन संशोधनावर भर देणे आज काळाची गरज बनली आहे. त्यासाठी विविध प्रकारचे व्यावसायिक शिक्षण सुरू करून अभ्यासक्रमामध्ये त्याप्रकारचा बदल होणे गरजेचे आहे. त्यासाठी नवीन शिक्षण प्रणाली आत्मसात करावी लागेल. त्यातील तत्त्वे समजून घ्यावी लागतील.

४) शैक्षणिक संस्था भांडवलशाहीचा प्रकार : आजची शिक्षणप्रणाली ही एक भांडवलशाहीचा प्रकार बनली आहे. कारण १९८० मध्ये थंड या पद्धतीला बळी पडलेला विद्यार्थी व समाज आज सर्वत्र भटकत आहे. दिशाहीन झाला आहे. त्याआधीच्या शिक्षण प्रणालीत ऋतू - ज्जमंत, दू णरजंतफ आणि ऋतू - णफ अशा प्रकारच्या त्रिसुत्रीचा प्रयोग केला गेला. त्यातुनच पुढे शिक्षणाचे बाजारीकरण होतांना दिसून येत आहे. आज शिक्षणाचा स्तर खालावलेला दिसून येतो. जिथे जावे तिथे खाजगी शाळा, खाजगी महाविद्यालय, राजकीय लोकांनी काढून अपात्र लोकांना पैसे घेऊन नोकरीत सामावून घेतल्या गेले. परंतु हे बाजारीकरण थांबवायचे असेल तर गुणवत्तेला वाव द्यावा लागेल. नवीन शिक्षण प्रणालीमध्ये गुणवत्ता वाढविण्यासाठी नवीन तत्त्वप्रणाली अवलंबित्या गेली आहे ती येत्या काळात सर्वांनी स्विकारावी तरच शिक्षणाचे बाजारीकरण थांबू शकेल.

५) शिक्षणक्रम निवडीचा अभाव : आवश्यकतेनुसार विद्यार्थ्यांना समुपदेशन होणे गरजेचे आहे परंतु शिक्षणप्रणालीला हे देता आले नाही. विद्यार्थ्यांची आवड, इच्छा-आकांक्षा लक्षात न घेता शिक्षणक्रम निवड केला जाते खरे म्हणजे विद्यार्थ्यांच्या इच्छेनुसार त्याच्या गुणवत्तेनुसार शिक्षणक्रम निवडण्याची सुविधा पाहिजे परंतु तशी व्यवस्था शिक्षण प्रणालीत केलेली दिसत नाही.

६) संस्थाचालकांचा मनमानी कारभार : मध्यंतरी शासनाने इंजिनअरींग, बी.एड्. एम. एड्. कॉलेज, खिरापतीप्रमाणे वाटले. काय फायदा झाला त्याचा विद्यार्थ्यांना या अभ्यासक्रमाची आज दयनीय अवस्था झालेली आहे. आज हे अभ्यासक्रम बंद करावे लागत आहे. काही शैक्षणिक संस्थांमध्ये मनमानी कारभार चालू आहे ते स्वतःला संस्थाचालक व मालक समजतात. आपण जसे



काशं

विचारवंत, अभ्यासक, संशोधक यांना नव्या शिक्षण प्रणालीमध्ये सहभागी करून द्यावे.

- ६) प्रचलीत परीक्षा पद्धतीतून आणि अध्ययन व अध्यापन पद्धतीतून केवळ स्मरण प्रक्रीयेचेच मापन होतांना दिसत आहे.
- ७) विद्यार्थ्यांमध्ये बहुआयामी विचार करण्याची क्षमता अभ्यासक्रमातून विकसीत करणे ही आजची शैक्षणिक गरज आहे. शिक्षणाच्या व्या वाटा शोधण्याचा प्रयत्न होणे आवश्यक आहे.
- ८) नवीन शिक्षणप्रणालीमुळे आर्थिक विषमता घालविता येऊन, समता प्रस्थापीत करण्यासाठी शिक्षण उपयोगी ठरेल. शिक्षणाची गुणवत्ता शिक्षकाचे ज्ञान, गुणवत्ता, कौशल्य, बुद्धीमत्ता यावरून ठरते. त्यासाठी शिक्षकांनी विविध कौशल्याची जोपासना करावी.

उपाययोजना

- १) आज शिक्षण प्रणालीचा विचार करता कोवीड-१९ व लॉकडाऊनमुळे शिक्षणाचे तीन तेरा वाजले आहे. विद्यार्थी शिक्षणापासून परावृत्त होतो की काय? अशी भिती निर्माण झाली आहे. नैराश्यापोटी विद्यार्थी आत्महत्या करित आहे त्याची आत्महत्या थांबविण्यासाठी शिक्षकांची भूमिका व योगदान महत्त्वाचे आहे. त्यासाठी शिक्षक, विद्यार्थी व पालक यांच्यामध्ये सुसंवाद साधणे गरजेचे आहे.
- २) आजच्या नवीन शिक्षण प्रणालीमध्ये अभ्यासक्रमाची रचना बदलणे आवश्यक आहे. शिक्षकांनी विद्यार्थ्यांप्रती व्यापारी दृष्टीकोन न ठेवता विद्यार्थ्यांच्या मनात मानाचे स्थान निर्माण करावे.
- ३) आजचा विद्यार्थी हा आत्मनिर्भर झाला पाहिजे. अशा प्रकाराचे अध्यापन करावे. विद्यार्थ्यांना त्यांच्या जीवनात येणार्या समस्यांशी सामना करण्याची क्षमता निर्माण होईल अशी नवीन पिढी निर्माण केल्यास विद्यार्थी आत्मनिर्भर बनेल.
- ४) आजचे युग हे तंत्रज्ञानाचे युग म्हणून ओळखले जाते. आज शिक्षणाच्या कक्षा रुंदावल्या आहेत. आज मिळालेले ज्ञान उद्या जुने होत आहे. पारंपरिक शिक्षणाचा विचार बाजूला ठेवून नाविण्यपूर्ण शिक्षण प्रणाली विकसीत होणे गरजेचे आहे. शिक्षणाच्या नव्या वाटा शोधण्याची गरज आहे. शिक्षणप्रणालीत नाविण्यपूर्ण बदल होणे अपेक्षित आहे.

- ५) नाविण्यपूर्ण अभ्यासक्रमामुळे विद्यार्थ्यांचे आशय ज्ञान वाढण्यास मदत होईल. विद्यार्थ्यांना नोकरीच्या विविध संधी प्राप्त होतील. शिक्षकांनी अध्यापनामध्ये नाविण्यपूर्ण बाबींचा समावेश करावा अध्यापनाचा दर्जा उंचावण्यासाठी सर्जनशिलतेवर आधारित अभ्यासक्रम महत्त्वाचे ठरतील तसे प्रयत्न करावे.
- ६) नवीन शिक्षण प्रणाली ठरवितांना, शैक्षणिक अभ्यासक्रम व शिक्षणाचे स्वरूप ठरवितांना आजचा युवक डोळ्यासमोर ठेवून अभ्यासक्रम निश्चीत करावा.

समारोप

आज शिक्षणाकडून प्रत्येक व्यक्तीच्या, समाजाच्या व देशाच्या खूप अपेक्षा आहेत. त्या अपेक्षा ही नवीन शिक्षणप्रणाली पूर्ण करेल. आजचा विद्यार्थी घडविण्यासाठी शिक्षकाची भूमिका बदलत आहे. समाजाची व विद्यार्थ्यांची गरज लक्षात घेवून नवीन शिक्षणप्रणालीत बदल केल्या जात आहेत. शिक्षण क्षेत्रात नवनवीन विचारप्रवाह येत आहे. अध्ययन अध्यापनात नवीन संशोधन केले जात आहे.

भारतामध्ये समाजसुधारकांनी प्रसार व प्रचार केला जे शिक्षण व्यक्तीचा उदरनिर्वाहाचे साधन बनू शकत नाही असे शिक्षण कुचकामी आहे. शिक्षण हे व्यक्तीचे चारित्र्य निर्माण करणारे असावे. सामाजिक गरजांची पूर्ती करणारे असावे. नैतिक मूल्य जपणारे असावे. त्यामुळे युवकांमध्ये समृद्धीकरण करणे शक्य होऊ शकते. आजच्या शिक्षण प्रणालीमध्ये अभ्यासक्रमाचे स्वरूप सुसंगत करण्याचा प्रयत्न होत आहे. त्यामुळे आजचा विद्यार्थी राष्ट्रीय ध्येयाने प्रेरीत होऊन सामाजिक, आर्थिक व राजकीय विकास साधण्याचे काम नवीन शिक्षण प्रणाली निश्चीतपणे करेल. नवीन शिक्षणप्रणाली ही शिक्षकांसाठी नवे आव्हान आहे व हे आव्हान आमचे शिक्षक निश्चीतपणे स्विकारतील.

संदर्भ ग्रंथसूची

- १) शिक्षण समिक्षा - जानेवारी १९९१. गौरव ग्रंथ, पुणे
- २) प्रा. नानकर प्र.ल. - वर्तमान शिक्षणातील विचार प्रवाह, २००९. नित्य नूतन प्रकाशन, पुणे
- ३) पाटील वि.वि. - भारतीय समाजातील शिक्षक व शिक्षण इनसाईट पब्लिकेशन २०१० नाशिक.
- ४) जाधव के. के. - आधुनिक काळाचे शिक्षण व तत्त्वज्ञान, मन प्रकाशन, नाशिक २०००.



काशिक



**Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya
Yavatmal (MS)**

**World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad**

This is to certify that,

Dr. / Mr. / Mrs. / Ms. _____

Dr. Rajashri Dharmadhikari

has published his / her Research paper / Article on the topic entitled :

Role of Indian Judiciary in Resolving Domain Name Disputes and Cyber Squatting

in the International Peer Reviewed / Referred Journal, Scholars' Vision for the

World Conference On Startup In India And Education With Placement In Abroad

*conf
3.1.13
en/Am*

harsas

Dr. Uday V Navalekar
Principal
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

SR

Dr. Sanjay S. Tamgadage
Dept. of English
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

Rohats

Dr. Gajanan Rahate
Dept. of Economics
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal



राजश्री धर्मधिकारी

Role of Indian Judiciary in Resolving Domain Name Disputes and Cyber Squatting



Dr. Vijesh B. Munot
Ms. Yogita B. Bora
Dr. Vijesh B. Munot
Dr. Rajashri Dharmadhikari

Abstract

Domain Name Disputes and Cybersquatting is emerging theft to Intellectual and Cyber Property Rights. Cyber squatters deliberately register and use a domain name belonging to other with malafide intent to make profit. Similar trademark holders dealing in different goods and services try to register domain name similar to their trademark on first come first serve basis. The other will be unable to have same domain name, leading conflicts between them.

Judicial activism and responses have brought domain name and cybersquatting under the purview of trademark. Indian courts considered Domain name as an important corporate asset and opined that it serve same functions like trademark as business identifiers. Due to lack of specific legislation, Indian Judiciary resorted to Trademark Act and Uniform Dispute Resolution Policy to solve disputes relating to domain name by applying grounds of trademark infringement and passing off (Ss. 28/29) to domain names.

Service rendered in internet site have been recognized and accepted and such service providers are entitled to protection against passing off and infringement.

Keywords

Trademark, Domain name, Domain name dispute, cybersquatting, Internet.

Statement of problem

Domain name is emerging intellectual property in online transactions and business. Domain name dispute and cybersquatting are new burning problems related to the domain name. It is a global issue and all countries are struggling with these problems at national and international level.

Loopholes in registration process of domain name allow registering any domain name without connection to trade and business. This leads to passing off goods

and services in online business. Even business competitors can easily resort to unfair trade practices by registering domain name similar to that of business rivals.

Few people are registering domain names similar to well-known marks and in the name of well-known personality and thereafter they used to sell and transfer these domain names on huge consideration. If the owner of well-known mark fails to register their domain name in the name of well-known mark earlier, they do not have any other option than to buy it on huge amount from cyber squatters. To solve these burning issues there is no special legislations in India for preventing and protecting abuse of domain name.

In absence of special legislations, the Indian Courts are resorting to trademark laws and remedies specified there under for resolving domain name dispute and cybersquatting along with Uniform Domain Name Dispute Resolution Policy framed by WIPO and ICANN and IN.DRP.

Objectives of study

1. To study the emerging threats to cyber law properties in terms of domain name and online digital business.
2. To make detail study relating to grounds for litigation of domain name disputes in Indian Courts.
3. To study legal provisions applied by Indian Judiciary in resolving domain name disputes and cybersquatting and to analyze judicial trends relating to Cyber Squatting.
4. To find out remedies provided by Judiciary against domain name disputes and cybersquatting.
5. To analyze the limitations faced by Indian Courts in resolving domain name disputes and cybersquatting.

Significance of study

Indian Courts are also flooded with the number of litigation relating to this matter. Protection given to domain name at national and international level is attention-paying matter. Under present study researcher is going to analyze grounds for litigations and legal provisions applied by Judiciary to resolve these dispute relating to



Handwritten signature

Judicial Activism

In India the first reported case relating to Domain name dispute is **Yahoo! Inc. vs. Akash Arora** in which defendant had started a new website YahooIndia.com similar to that of plaintiff for providing similar services. The plaintiff was trademark owner of Yahoo in many countries except India. The court held that it was an attempt to pass off and earn money on the goodwill and fame of Yahoo trademark. Domain name registrant does not obtain any legal right to use that particular domain name just because he had registered the domain name. The Court had extended principle of passing off under common law to cover service provided by internet under trademark law.

Rediff Communication Ltd. v. Cyberbooth and another⁸, is a case of an action in passing off in which plaintiff had filed suit for permanent injunction to restrain defendant from using mark/domain name 'RADIFF' to pass off his business goods and services and to restrain from using 'RADIFF' as a part of trade name or trade style. The suit was decided in favor of plaintiff. Hon'ble Court opined that Internet Domain Names are of importance and are corporate asset. Domain names are more than internet address and are entitled to equal protection as trademark. With the advancement and progress in technology, service rendered in internet site have been recognized and accepted and such service providers are entitled to protection against passing off.

In **Acqua Minerals Ltd. v. Pramod Borse and another**⁹, the Court opined that when commercial property or activity has been given name or mark with which it is identified and carried out, the owner of such property or activity has domain over it. Thus such domain name has same protection as trademark has been provided under Trade Mark Act. When any person tries to usurp domain name or trade name, which is used in the course of trade, is guilty of infringement of such name if it is registered as trademark and is liable for action against passing off. The domain name has attained legal sanctity same as trade mark with advancement of communication system over internet. As internet services are very essential for business, preservation of the domain name is necessary to protect service providers against unnecessary trafficking in domain name.

In a case, Hon'ble Court observed that when defendant uses closely similar trading name of plaintiff which has acquired reputation among large public and is likely to misled, defendant is liable for action in passing off and domain name passing off may occur in the cases where plaintiffs do not in fact deals in offending goods. In this case, defendants were restrained by permanent injunction and were also liable to pay cost of suit.¹⁰

In another case, the Court held that it is a settled law that with the advent of modern technology particularly that relating to cyber space, domain name and internet sites are entitled to protection as trade mark as they are not mere address. Activates on internet are equally entitle to protection same as goods and services under Trade Mark Act.¹¹

Satyam Infoway Ltd. vs. Sifynet Solution Pvt. Ltd.¹², is the first case before Supreme Court to deal with legal protection of domain name in which it has given a legal sanction to the decisions of various High Courts for protecting domain name at par with trade mark under Trade Mark Act against infringement and passing off. Hon'ble Court opined that as far as India is concerned, there is no legislation, which explicitly refers to dispute resolution in connection with domain names. However, although the operation of the Trade Marks Act, 1999, itself is not extra territorial and may not allow for adequate protection of domain names, this does not mean that domain names are not to be legally protected to the extent possible under the laws relating to passing off.

Mr. Arun Jaitley vs. Network Solutions Private Limited and Ors¹³, is a leading case on the subject cybersquatting. Hon'ble Court has held that cybersquatting is a crime against regulation of cyber laws. Cyber squatters register and use a domain name belonging to others with *malafide* intent to make profit. The Court also revealed that WIPO failed to take stern action to stop increasing cases of cybersquatting and had not made any amendment in law to curb illegal activities of cyber squatters. The Court has reiterated the norms to be followed by the registrar to prevent harassments and litigations.

Hon'ble Supreme Court observed that a domain name is easily accessible without any of the geographical location of the consumer so it would require worldwide exclusivity for this national law might be inadequate to protect a domain name, effectively.

Uniform Domain Name Dispute Resolution Policy (UDRP) and .IN Domain Name Dispute Resolution Policy (INDRP):

WIPO and ICANN have set up system of registration of domain names with accredited Registrars and the Uniform Domain Name Disputes Resolution Policy (UDNDR Policy) on 24th October, 1999. Under this system, registration is provided on a first come first serve basis. The UDRP is limited to clear cases of bad-faith, abusive registration and use of domain names and has proven highly popular among trademark owners.

.IN Domain Name Dispute Resolution Policy (INDRP) has been adopted by National Internet Exchange of India (NIXI) also referred as .IN Registry and shall be applicable to all/any disputes relating to .IN or .BHARAT



Handwritten signature or initials in black ink.

3.2.2 प्र.सेला

एप्रिल 2021

ISSN 2278 - 7984

World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

CONFERENCE PROCEEDING
VOLUME - II



काशी

15. Recent Trends in English Literature - An Overview Mrs. Anjali Kamble	43
16. World Conference on Startup in India and Education with Placement in Abroad Ms. Kajal Govardhan Jadhao	47
17. Importance and Role of Libraries in Our Society P. S. Kolhe	50
18. Role of Mother Tongue in Teaching of English Language Prof. Prashant S. Jawade	54
19. Recent Trends in English Literature Prof. Vinod L. Khalatkar	56
20. Emerging Trends in English Literature Ms. Sarita Upadhye	58
21. Skill Based Education System in Commerce Faculty Prof. Vinit Ramesh Rao Mahure	60
22. Innovative Practices in SPM Science and Gilani Arts Commerce College Library : A Study Vivek K. Jagtap	64
२३. मालवी लोकसाहित्यानुशीलन की परंपरा में डॉ. शैलेंद्रकुमार शर्मा का प्रदेय प्रा. डॉ. सुरेखा प्रेमचंद मंत्री । कु. अर्चना नामदेवराव गवई	६८
२४. मानवी जीवनासाठी पोषक आहार - अन्वेषण डॉ. सीमा तुषार देशपांडे	७१
२५. नवीन शिक्षण प्रणाली एक शैक्षणिक आव्हान प्रा. डॉ. सुधा मुरलीधर खडके (कडू)	७४
✓ २६. स्टार्टअप आणि अर्थसहाय्य प्रा. <u>शैलेन्द्र देविदास तेलंग</u>	८०



Handwritten signature/initials



**Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya
Yavatmal (MS)**

**World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad**

This is to certify that,

Dr. / Mr. / Mrs. / Ms. प्रा. शैलेन्द्र देविदास तेलंग

has published his / her Research paper / Article on the topic entitled :

स्टार्टअप आणि अर्थसहाय्य

in the International Peer Reviewed / Referred Journal, Scholars' Vision for the

World Conference On Startup In India And Education With Placement In Abroad

Navalekar

-Chief Editor-
Dr. Uday. V Navalekar
Principal
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

Sanjay S. Tamgadge

-Executive Editor-
Dr. Sanjay S. Tamgadge
Dept. of English
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

Rahate

- Co Executive Editor-
Dr. Gajanan Rahate
Dept. of Economics
Abasaheb Parvekar Mahavidyalaya,
Yavatmal

Certificate

**Scholars'
Vision**

Multi - Disciplinary Bi-annual
International Peer reviewed / Referred Journal

3.2.2. ५१. ०५११



Dr. Uday V Navalekar

स्टार्टअप आणि अर्थसहाय्य



डॉ. शैलेन्द्र देविदास तेलंग

लो. वा. अणे महिला महाविद्यालय
यवतमाळ

मो. : ९८२२९६३८६८

ई-मेल : shailendratelang74@gmail.com

प्रस्तावना

भारत सरकारच्या पुढाकाराने सन २०१६ मध्ये सुरुवात करण्यात आलेली स्टार्टअप इंडिया योजना आहे. या योजनेच्या प्रोत्साहनाने रोजगार व संपत्ती निर्माण करणे सोपे झाले आहे. या योजनेचा मुख्य उद्देश भारताला एक मजबूत अर्थव्यवस्था बनविणे व आत्मनिर्भर बनविणे हा आहे. स्टार्टअप संदर्भातील सर्व कार्यक्रम, उद्योग आणि अंतर्गत व्यापार प्रोत्साहन विभाग (DPIIT) च्या निर्यात केले जातात. या योजनेच्या स्टार्टअप सुरु करण्याच्या अनेक फायदे प्राप्त होतात, ज्यामध्ये कामात सुलभता, आर्थिक सहाय्य, सरकारी निविदा, नेटवर्कींगच्या संधी, सोबतच आयकराचे फायदे सुध्दा मिळतात.

अर्थसहाय्यामागील दृष्टिकोन

स्टार्टअप सुरु केलेल्या काही लोकांबरोबर जेव्हा चर्चा केली, तेव्हा त्यांचे म्हणणे असे होते की, आपले उद्योगीय ध्येय पूर्ण करण्यासाठी सर्वात महत्त्वाचे काय वाटते? तर उत्तरात 'अर्थसहाय्य' असे एकमुखाने सर्वांनी सांगितले. मात्र जेव्हा या संदर्भात सखोल विचार केला तेव्हा असे दिसून आले की, एक वेळेस मान्य करू की स्टार्टअपला अर्थसहाय्य मिळाले, तरी केवळ अर्थसहाय्य हा त्यांच्या सर्व समस्यांचे एकमेव उत्तर आहे का? तर तो प्रश्न अनुत्तरीयच राहतो. अनेकदा उद्योजकांना हवा असणारा अर्थपुरवठा ही सुलभ गरज आहे. मात्र त्या पलीकडे इतर अनेक घटकांचा षोध उद्योजकांना घ्यायचा असतो. बाजारातील मागणीनुसार उपयुक्त आणि दर्जेदार असे उत्पादन निर्माण करायचे असते, संपूर्ण व्यावसायिक प्रारूपास मान्यता मिळवायची असते, ग्राहक वाढीचे अनेक प्रश्न असतात, नवीन संकल्पना ग्राहकांमध्ये रुजवायची असते, तंत्रज्ञानाच्या अनेक समस्या असतात, त्याची प्रमाणात तपासायची असते, उत्पादन सहजरीत्या उपलब्ध

असावे लागते, सोबतच उद्योगाचा समूह यासारख्या असंख्य घटकांचा शोध घ्यावा लागतो. वरील सर्व नमुद बाबी नवीन उद्योजकाच्या विकासासाठी आवष्यक असतात.

अर्थसहाय्य मिळविण्याची योजना

बरेचवेळा उद्योजक त्यांच्या मुळ कल्पनेवरच विसंबून अर्थसहाय्याचा शोध सुरु करतात. आपल्या मुळ संकल्पनेचा सर्व बाजूनी विचार करता जर ग्राहक एखाद्या स्टार्टअपला अर्थसहाय्य करीत असेल तर ती उत्तम व्यक्ति किंवा उत्तम संघटना असते. जर का कुणी तुमच्या कल्पनेसाठी अर्थसहाय्य पुरवू इच्छितो, तेव्हा ती खूप मोठी पावती असते आणि दुसरे म्हणजे या ग्राहकाला समभाग नको असतो, ते स्वतःकडच्या चांगल्या स्रोताची माहितीही पुरवितात. यावरून असे वाटते की, उपभोक्त्याकडून अर्थसहाय्य मिळविण्यास प्राधान्य द्यायला पाहिजे. या संदर्भातील अनेक उदाहरणे आहेत. स्टार्टअपला उपभोक्त्याकडून आर्थिक पाठबळ मिळवितांना अनेकदा बरेच स्टार्टअप हे अगदी शीशु अवस्थेत असतील. अशा प्रसंगी कमीत कमी कष्ट घेऊन कल्पना विकसीत करणे आणि ग्राहकाकडून मान्यता मिळविण्याचा कल असतो. अर्थसहाय्य उभारणीचे दुसरे माध्यम म्हणजे स्वतःची बचत आणि गुंतवणूक किंवा मित्र, नातेवाईक, कुटुंबाकडून घेतलेली आर्थिक मदत होय. स्टार्टअपची कल्पना आपल्या सभोवतालच्या जनमाणसांना सांगून त्यांच्याकडून भांडवल मिळविण्याची चांगली संधी असते. समजा तुम्ही ओळखीच्या व्यक्तीला तुमची संकल्पना पटवून देवू शकला नाही, तर बाहेरच्या माणसांना पटवून देण्याची षक्यता फारच कमी असते. साधारणपणे लोक ज्यांच्यावर विष्वास ठेवतात, अश्याच लोकांसाठी अर्थसहाय्य करतात, त्यामुळे आपल्या व्यावसायिक कल्पनेच्या संदर्भात मित्र व कुटुंबाचा विश्वास संपादन करणे ही अर्थसहाय्य मिळविण्यासाठी अतिष्य चांगली सुरुवात असते.



काशं

बहुतांश वेळा तुम्ही जेव्हा अर्थसहाय्य म्हणता, त्यावेळेस ते बिजनिधी किंवा एंजल निधी किंवा व्हॅचर भांडवलाचे विविध टप्पे या शब्दांना समानार्थी म्हणूनच वापरतो. बाहेरच्या व्यक्तीकडून अर्थसहाय्य मिळवायचा म्हणजे उद्योजकाला अंतर्गत रचनेची काळजी घेण्यासाठी अनेक पावले उचलावी लागतात. याचा अर्थ एकदा अर्थसहाय्य करणाऱ्या संस्थेकडून तुमच्या उद्योगाला अर्थसहाय्य मिळणे ही बाब उद्योगाची प्रवासातील मैलाचा दगड ठरतो. अशा स्वरूपातील अर्थसहाय्य मिळाल्याने दोन गोष्टी मिळतात. एक म्हणजे तुमच्या व्यावसायिक कल्पनेला मान्यता मिळते, दुसरे तुमच्या व्यावसायिक संकल्पनेची क्षमता चांगली असून निश्चितच चांगला परतावा मिळणार आहे अशी गुंतवणूक करणाऱ्यास खात्री वाटते. अशा प्रकारची खात्री नसल्यास कोणीही पैसा गुंतवणूक करणार नाही.

आपल्या उद्योगा विशयीची तयारी पूर्ण झाली आणि उद्योगाच्या पुर्ततेविषयी जे काही बोललो आहे, त्या पूर्ण झाल्यानंतरच बाह्य गुंतवणूकदाराकडे जायला पाहिजे. अर्थसहाय्य मिळविण्यासाठी अधिक परिश्रम घ्यावे लागते, त्याकरीता बराच वेळ, श्रम खर्च करावे लागतात. त्याच वेळात तुम्हाला ग्राहक मिळवायचे असते, त्यांच्याशी संपर्क ठेवणे, उत्पादनासोबतच उपउत्पादनाच निर्मिती ह्याही गोष्टी अधिक महत्त्वाच्या असतात. स्टार्टअप उद्योगास वेळेची मर्यादा असते, असा विचार करताना कोणत्या वेळेस कोणत्या गोष्टीला अग्रक्रम द्यायचा ही बाब महत्त्वाची असते. समजा जर एकच संस्थापक असेल तर सर्व निर्णय त्यालाच घ्यावे लागतात. एकापेक्षा जास्त संस्थापक असतील तर सुरुवातीलाच अर्थसहाय्य मिळविण्यासाठी वेळेची गुंतवणूक केली तर कदाचित व्यवसाय उभारणीच्या इतर पैलूवर त्याचा विपरीत परिणाम होण्याची शक्यता असते. दोन पेक्षा जास्त संस्थापक असताना कामाच्या स्वरूपाचे आणि जबाबदारीचे वितरण करू शकतो. अथवा वेळी एकाने अर्थसहाय्य मिळविण्यासाठी तर दुसऱ्याने व्यवसायाच्या विस्ताराकरीता प्रयत्न केले पाहिजे. अशा सर्व प्रक्रियांचे व्यवस्थापन करूनही सर्व प्रक्रिया अतिशय सुरळीतपणे पार पाडल्या तरच स्टार्टअप यशस्वी होवू शकतो. सोबतच स्टार्टअपच्या विकास व विस्तारासाठी व्यावसायिक प्रारूप, आराखडे, बाजारातील स्पर्धा, मान्यता, अशा अनेक बाबींवरही चर्चा व विचार करून निर्णय घ्यावे लागतात.

टीआयईची भूमिका

स्टार्टअप आणि नवउद्योजकाचे संगोपन करण्याचे काम टी.आय.ई., पूणे करीत असते. बरेचसे उपक्रम टी.आय.ई., पूणे राबविते. ही संस्था स्टार्टअपच्या अगदी पहिल्या वर्षातील कंपन्यांना पाचारण करते आणि त्यांच्या क्षेत्रातील वरिष्ठ उद्योजकांशी गाठीभेटी घडवून आणते. त्यातून स्टार्टअप कंपनीच्या मुख्य टिममध्ये वरिष्ठ उद्योजक सहभागी होतात. हे अनुभवी उद्योजक स्टार्टअपला मदत व मार्गदर्शन करतात. जे जे स्टार्टअप या सर्व बाबींची काळजी घेतात त्यांना भविष्यात चांगले यश मिळण्याची शक्यता जास्त असते. अशी अनेक उदाहरणे आहेत, ज्यांना चांगल्या रितीने सरकारकडून व इतर गुंतवणूकदाराकडून अर्थसहाय्य देखील मिळाले आहे. स्टार्टअपला मिळत असलेला प्रतिसाद व फायदे सोबतच त्यांच्या अनेक यशोगाथा पाहून अनेक स्टार्टअप करणाऱ्यांचा उत्साह वाढतो आहे.

स्टार्टअप परिसंस्था

'परिसंस्था' ही संकल्पना खरं तर जिवशास्त्रातील आहे. उद्योगविश्वातही परिसंस्था हा शब्द बहुतांश वेळा आन्वप्रिनेअरशीपशी निगडित संपूर्ण घटकासाठी वापरला जातो. साधारणपणे सजीव संरचनेतील विविध भाग किंवा विविध सदस्य किंवा विविध घटक मिळून एकमेकांना मदत करतात, एकमेकांना पुरक ठरत जी यंत्रणा उभी करतात आणि जगवतात-तगवतात, त्याला परिसंस्था असे म्हटले जाते. उद्यमशिलतेच्या परिभाषेत गुंतवणूकदार, वकील, ग्राहक, तंत्रसहाय्यक, इन्क्युबेटर्स, व्हॅचर भांडवलदार, सल्लागार तसेच सर्व सेवा पुरवठादार, मॅटोर, नियामक मंडळ, व्यवस्थापक मंडळ, इत्यादी सर्वांनी मिळून 'परिसंस्था' बनते असे म्हणावे लागते.

एखादा उद्योजक यशस्वी ठरला तर ते त्यांच्या परिसंस्थेतील प्रत्येक घटकासाठी महत्त्वाचे ठरते. अशा वेळी परिसंस्थेतील प्रत्येक घटक संबंधित उद्योजकाच्या बाजूने अधिक कार्यक्षमता दाखविण्यास सज्ज होतात. पण तसे घडले नाही तर आर्थिक गुंतवणूकीचे प्रमाण आणि वेळ यांचा मेळ अपयशाची तिव्रता कमी करण्यास मदत करते. मात्र पुढे या उद्योजकाची उद्योगविश्वात टिकण्याची क्षमता धोक्यात येते. परिसंस्थेतील सदस्यांनी जर त्यांची कर्तव्ये चोखपणे पार पाडले आणि आधारभूत वातावरण तयार केले, तर त्याचा निश्चितच फायदा परिसंस्थेला होतो. कारण एका घटकाचे यश हे संपूर्ण परिसंस्थेचे यश अधोरेखित करणारे असते.



काशं

अर्थसहाय्य मिळविण्याचे मार्ग

नविन उद्योजक स्टार्टअपच्या विश्वात आपला नवा व्यवसाय थाटतांना, नवा उद्योग उभारताना आर्थिक पाठबळ मिळविणे हे किती आव्हानात्मक आहे, त्याकरीता उद्योजक वेगवेगळ्या योजना राबवितात. प्रत्येक व्यक्तीची आर्थिक घडी बसविण्याची कल्पना एकमेकापेक्षा वेगळी, अनोखी आणि काही बाबतीत तर अगदी विलक्षण आहे. तरी देखील प्रत्येक उद्योजक आपल्या प्रयत्नाने आपले यश साधतो. अर्थसहाय्य मिळविण्याकरीता प्रत्येकाचे मार्ग वेगवेगळे होते, पण प्रत्येकाची सुरुवात आणि शेवट ही सारखीच होती. प्रत्येक उद्योजकाने आपले स्वप्न किंवा कल्पनेवर विश्वास ठेवला आणि प्रत्येकाने त्या स्वप्नाला वास्तवात आणण्याच्या दिशेने प्रयत्न केले. ही सामायिकता प्रत्येकातच होती म्हणूनच वेगवेगळे मार्ग असूनही अनेक उद्योजक अर्थसहाय्य उभारण्यात यशस्वी होवू शकले. अनेकदा आपण ऐकतो की, नेहमी चौकटीत न बसणारी एखादी कल्पना गुंतवणूकदार नाकारतो आणि नंतर तीच कल्पना तुफान हिट ठरते, तेंव्हा पहिल्यांदा नाकारणाऱ्या गुंतवणूकदाराला किती यातना होत असतील, आपल्याला यासंबंधी तर फेसबुकचे उदाहरणही माहित आहे. फेसबुकने व्हॉट्सअपचे सहसंस्थापक ब्रायन ऑक्टॉनला नोकरी देण्यास नाकारले होते आणि त्यानंतर त्याने व्हॉट्सअप १९ मिलीयन डॉलरला विकत घेतली. त्याने सुरुवातीलाच जर नाकारले नसते तर कदाचित व्हॉट्सअप हे त्यांच्या कंपनीचे एक उत्पादन ठरले असते.

शेवटी स्टार्टअप सळसळत्या नवीन उद्योजकांस, उत्साही तरुणांना करूया रितीने स्टार्टअप शोधायचा, मिळवायचा आणि आपल्या कल्पनांना कसे बळकट पंख लावायचे, ह्याविषयी अत्यंत महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन करते आणि नियमित गुंतवणूक करणाऱ्या गुंतवणूकदारांनाही कुठे गुंतवणूक करणे फायद्याचे ठरेल याचे शहाणपणही देते, उद्योगाविषयी, त्यांच्या विकासाविषयी आपुलकी असणाऱ्या प्रत्येकालाच स्टार्टअप काही ना काही देते, हे निश्चित!

स्टार्टअप इंडियाचे फायदे

१) कामात सुलभता : भारत सरकारने 'स्टार्टअप इंडिया हब' ची स्थापना केले आहे, जिथे निगमन नोंदणी, तक्रारी, हाताळणी, इत्यादी सहज हाताळल्या जातात. या संदर्भातील ऑनलाईन पोर्टलवर सरकारने एक त्रासमुक्त नोंदणी प्रणाली तयार केली आहे. याचा फायदा कोणीही, केव्हाही नोंदणी करू शकतो.

82 - Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

२) अर्थसहाय्य : नविन स्टार्टअपची सुरुवात करण्याकरीता सरकार आर्थिक सहाय्य देते, ज्याकरीता १०,००० कोटींचे अर्थसहाय्य चार वर्षाकरीता, म्हणजेच प्रत्येक वर्षी २५०० कोटींची तरतूद सरकारने स्टार्टअपकरीता केली आहे. स्टार्टअपमध्ये गुंतवणूक करणाऱ्यास स्थापनेनंतर ३ वर्षाकरीता करात सुट उपलब्ध करून देण्यात येते.

३) सरकारी मदत : जेव्हा मोठ्या प्रकल्पाकरीता, मोठ्या पैशांची सरकारी निविदा हवी असते, तेव्हा सरकारी मदत सहज मिळत नाही. मात्र स्टार्टअप इंडिया योजने अंतर्गत स्टार्टअप सुरु करणाऱ्यास सरकारची मदत सहज मिळते. त्याकरीता त्यांना कोणत्याही पुर्वअनुभवाची आवश्यकता नाही. ही एक स्टार्टअप सुरु करणाऱ्याकरीता चांगली बाब आहे.

४) नेटवर्कींगच्या संधी : भागधारकांना स्टार्टअप करणाऱ्याकरीता नेटवर्किंगच्या संधी विशिष्ट ठिकाणी, वेळोवेळी उपलब्ध होतात. यासाठी सरकार दरवर्षी देशांतर्गत आणि आंतरराष्ट्रीय स्तरावर दोन स्टार्टअप चाचण्या घेते. याशिवाय स्टार्टअप इंडिया योजना बौद्धिक संपदा जागरूकता कार्यशाळा आणि जनजागृती देखील करते.

५) DPIIT कडून लाभ : स्टार्टअप इंडिया योजनेमध्ये DPIIT अंतर्गत नोंदणीकृत कंपन्यांना खालील लाभ प्राप्त होतात.

स्टार्टअपसाठी बरेच फायदे आहेत, जसे की, सोपे अनुपालन, अयशस्वी स्टार्टअपसाठी सुलभ बाहेर पडण्याची सुविधा, कायदेशीरल समर्थन आणि माहितीची विषमता कमी करण्यासाठी वेबसाईट निधी आणि प्रोत्साहन.

स्टार्टअप धारकांना आयकर सवलतीचे फायदे मिळतील आणि कॅपिटल गेन टॅक्स मिळेल. स्टार्टअप इकोसिस्टीममध्ये परिघ भांडवल पुरविण्यासाठी पुरेसा निधी मिळेल.

इन्क्युबेशन स्टार्टअपसाठी फायदेशीर आहे. कारण ते असंख्य इनक्युबेटर्स आणि इनोव्हेशन लॅब तयार करते. खऱ्या अर्थाने इनक्युबेटर स्टार्टअपांना त्यांचा व्यवसाय बाजार वाढविण्यास मदत करतात. हे अनुभवी संस्थांनी केले आहे.

कलम ८० एच अंतर्गत करात सुट - स्टार्टअपांना तीन वर्षाकरीता आयकरात सुट दिली जाते. त्याकरीता खालील निकश आहेत -



काशने

- १) कंपनी ही डी.पी.आय.आय.टी. व्दारे मान्यताप्राप्त असावी.
- २) खाजगी मर्यादित कंपनी आणि मर्यादित दायित्व भागीदारी कलम ८० पब अंतर्गत कर सवलतीकरीता प्राप्त आहे.
- ३) स्टार्टअप हा १ एप्रिल २०१६ नंतर स्थापन झालेला असावा.
- ४) कलम ५६ अंतर्गत कर सुट.
- ५) पात्र स्टार्टअपमधील गुंतवणूकसूह सूचीबद्ध. निव्वळ वर्थ रु. पेक्षा जास्त. १०० कोटी किंवा रुपयेपेक्षा जास्त उलाढाल अंतर्गत २५० कोटीची सुट दिली जाईल. कलम ५६ (२) आयकर कायदा मान्यता प्राप्त गुंतवणूकदार, AIF (श्रेणी 1) आणि रुपयाची निव्वळ संपत्ती असलेल्या सूचीबद्ध कंपन्यांव्दारे स्टार्टअपमधील गुंतवणूक १०० कोटी किंवा रु. पेक्षा जास्त प्राप्तीकर कायद्याच्या कलम ५६ (२) (VIII) अंतर्गत २५० कोटी रुपयांची सवलत दिली जाईल.

स्टार्टअप नोंदणीसाठी पात्रता

- १) कंपनीने खाजगी मर्यादित कंपनी किंवा मर्यादित दायित्व कंपनी स्थापन करावी.
- २) फर्मला औद्योगिक धोरण आणि प्रोत्साहन विभागाकडून मान्यता मिळावी.
- ३) संस्थेकडे उश्मायनाव्दारे षिफारस पत्र असणे आवश्यक आहे.
- ४) कंपनीकडे नाविण्यपूर्ण उत्पादने असावी.
- ५) कंपनी नविन असावी, परंतु पाच वशपेक्षा जुनी नसावी.
- ६) कंपनीची उलाढाल २५ कोटी रुपयांपेक्षा जास्त नसावी.

स्टार्टअप इंडिया योजनेसाठी ऑनलाईन अर्ज कसा करावा?

- १) startupindia.gov.in. ला भेट द्या.
- २) तुमच्या कंपनीचे नाव, स्थापना आणि नोंदणीची तारीख एंटर करा.
- ३) पॅनकार्ड तपशील, पत्ता, पीनकोड आणि राज्य प्रविश्ट करा.
- ४) अधिकृत प्रतिनिधी, संचालक आणि भागीदार यांचे तपशील जोडा.
- ५) आवश्यक कागदपत्रे आणि स्वप्रमाणपत्र अपलोड करा.
- ६) कंपनीची स्थापना आणि नोंदणी प्रमाणपत्र दाखल करा.

निष्कर्ष

- १) स्टार्टअप इंडियामुळे नविन उद्योजकांना गुंतवणूकीच्या संधी निर्माण झाल्या.
- २) स्टार्टअप इंडियामुळे आत्मनिर्भर भारताचे स्वप्न पूर्ण होण्यास हातभार लागला आहे.
- ३) गुंतवणूकदारास गुंतवणूक करण्याच्या नवनवीन संधी उपलब्ध होत आहे व परतावाही अधिक मिळत आहे.
- ४) स्टार्टअप इंडियामुळे महिला अधिक सक्षम होण्यास मदत होत आहे.
- ५) स्टार्टअप योजनेचा लाभ अनुसूचित जाती-जमातीच्या महिलांना व युवकांना मिळाला आहे.
- ६) अर्थसहाय्य मिळविणे सहज व स्वस्त दरात उद्योजकांस सरकारकडून मिळत आहे.
- ७) स्टार्टअपमुळे निर्यातीत वाढ व आयातीत घट होण्यास मदत मिळते.
- ८) स्टार्टअपमुळे उद्योग क्षेत्राचा विकास होवून रोजगाराच्या संधी निर्माण झाल्या.
- ९) देशातील तरुणांच्या कौशल्य विकासात वाढ होवून कृशी क्षेत्रावरील ताण कमी होण्यास मदत झाली आहे.

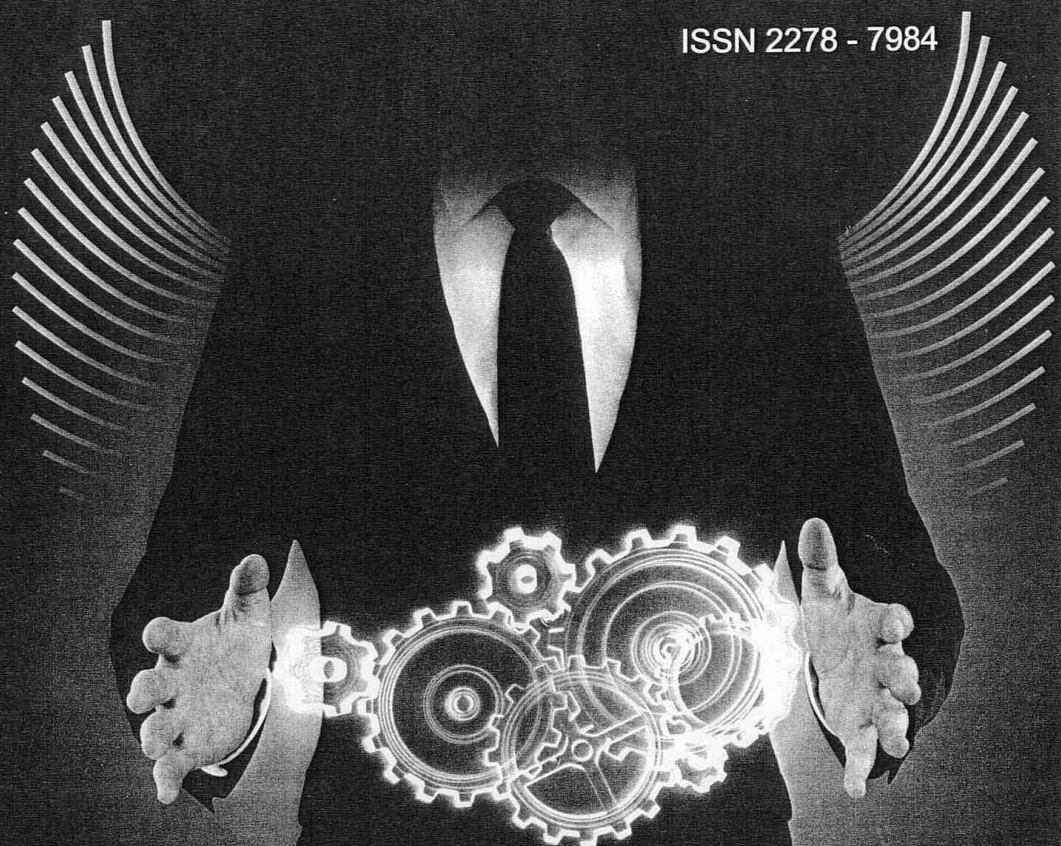
संदर्भ सूची

- १) द मॅजिक ऑफ बिग आयडिया - तरुण इंजीनियर - डायमंड बुक्स.
- २) अ बेटर इंडिया अ बेटर वर्ल्ड - एन. आर. नारायण मूर्ती - मेहता पब्लिकेशन हाऊस
- ३) स्टार्टअप पैसा उभारणीच्या यषोगाथा-मेहुल दारुका/ विकास कुमार, विष्वकर्मा पब्लिकेपन्स, पुणे - ४११ ००२.
- ४) ग्रामीण भारत की चुनौतियाँ - तपनकुमार पंडा - मार्क पब्लिषर्स, जयपुर - ३०२०२१.
- ५) smejoinup.com.
- ६) www.start-upindia.gov.in
- ७) लोकसत्ता, ५ फेब्रुवारी २०१६.
- ८) केंद्रीय अर्थसंकल्प २०१९-२०
- ९) महाराष्ट्र टाइम्स, ३१ मे २०१९.
- १०) इंडियन एक्सप्रेस, पुणे आवृत्ती.



काशं

ISSN 2278 - 7984



World Conference On
Startup In India And
Education With Placement
In Abroad

Abasaheb Parvekar College, Yavatmal

CONFERENCE PROCEEDING

VOLUME - VII

प्रा-दस्ता 3.11.3 CONF



Handwritten signature or name in Marathi script.

- I N D E X -

1.	Importance and Existence of Conventional and Technology Based Methods in Teaching - Learning English Language Prof. Ajay V. Rele	1
2.	Happy Teacher Creates Happy Classroom Anju Ankushrao Zade	4
3.	Psychology and Entrepreneurship Development Dr. Narendra Narayan Daware	7
4.	Concept of Nutrition Human Life in Abroad Prof. Dr. Seema B. Adhau	9
5.	Bibliometric to Altmetric : An Impact Factor of Knowledge Swati S. Kandalkar Dr. Sonal U. Utane Dr. Vaishali P. Gudadhe	11
6.	Analytical Study of Datasets Ms. Shilpa B. Manohar Dr. Vaishali P. Gudadhe (Chaukhande)	15
7.	Best and Innovative Practices in College Library Pravin Anantrao Joshi	20
8.	Understanding the Role of Education and Unemployment in India Ratndip Bhimrao Gangale	23
9.	The Depiction of New Women in Shobha De's Novel Smita Mohod	26
10.	Corollary of Digital Payment Schemes and ITS Applications Prof. Dr. Haridas Manikrao Dhurve	28
11.	Challenges and Opportunities in Commerce Education Dr. Wasudeo D. Golait	32
12.	The Thematic Study of Philip Larkin's " The Less Deceived" Ajay Vitthalrao Chandore	35
१३.	ग्रामीण छात्रों की यौनशिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अनुशीलन प्रा. डॉ. अंशु रा. साहु	३९
१४.	आधुनिक काळात संगीत क्षेत्रात उपलब्ध व्यवसायाच्या काही निवडक संधी प्रा. डॉ. अर्चना सं. देशपांडे	४३



काशने

आधुनिक काळात संगीत क्षेत्रात उपलब्ध व्यवसायाच्या काही निवडक संधी

प्रा. डॉ. अर्चना सं. देशपांडे

संगीत विभाग प्रमुख

लो. बा. अणे महिला महाविद्यालय

यवतमाळ

प्रस्तावना

जीवन जगण्याकरिता, आपला उदरनिर्वाह चालविण्याकरिता प्रत्येक व्यक्तीला कुठला तरी व्यवसाय किंवा नोकरी करावी लागते. वैदिक काळापासून संगीत कलेद्वारे व्यवसायाच्या संधी उपलब्ध होत आहेत, हे संगीताच्या ग्रंथात असलेल्या उल्लेखांवरून स्पष्ट होते. प्राचीन काळापासूनच संगीताचा व्यवसाय करणारा एक वर्ग समाजात होता. उदा. वैदिक काळात गाथी हे व्यवसायी गायक असत. रामायण काळात ऋकुशीलव हा संगीताचा व्यवसाय करणारा वर्ग होता. महाभारत काळ, बौद्ध काळ, जैन युग, मौर्यकाळ, गुप्तकाळात, मोगलकाळात देखील संगीताचा व्यवसाय करणारा एक विशिष्ट वर्ग होता. त्यांना राजा-महाराजांद्वारे योग्य मानधन दिले जाई.

इंग्रजांच्या आगमनानंतर संगीताची अनेक प्रचार-प्रसार माध्यमे आली ज्याद्वारे संगीत जनसामान्यांपर्यंत जाऊन पोहोचले. इंग्रजांच्या शैक्षणिक धोरणानुसार कलांच्या शिक्षण पद्धतीत पण परिवर्तन घडून आले. शाळा महाविद्यालयांद्वारे तसेच खाजगी शिक्षण संस्थांद्वारे कलांचे शिक्षण दिले जाऊ लागले. त्यात संगीत कलेचाही समावेश होता. आकाशवाणी, ग्रामोफोन, माइक्रोफोन, टेपरेकॉर्डर, दूरदर्शन, व्ही. सी. आर., व्ही. सी. पी. सी. डी. प्लेयर, संगणक, इंटरनेट, मोबाईल फोन, तसेच संगीताच्या संस्था, महाविद्यालय, मुद्रण व्यवस्था इ. अनेक माध्यमांद्वारे आज संगीताचा व्यापक प्रमाणात प्रचार-प्रसार झालेला आहे. त्यामुळे आज संगीत क्षेत्रात नोकरी व व्यवसायाच्या अनेक संधी उपलब्ध झाल्या आहेत.

आधुनिक काळात संगीत क्षेत्रात उपलब्ध काही निवडक व्यवसाय

१) संगीत शिक्षक : The lamp of learning is concealed under a cover, the teacher removes it and lets out the light.

असे एका विद्वानाने म्हटले आहे. कुठलीही कला किंवा कुठलीही गोष्ट शिकायची असल्यास त्यासाठी

शिक्षकाची किंवा मार्गदर्शकाची आवश्यकता असते. संगीतकलेच्या शिक्षणात तर शिक्षकाला फार महत्त्वाचे स्थान आहे. कारण संगीतात एखादा राग शिकतांनात्याची फक्त शास्त्रीय माहिती असून चालत नाही तर त्या रागात विशिष्ट स्वर कसे लावायचे, त्या रागाचे चलन कसे आहे. समप्राकृतिक रागांमधील फरक कसा दाखवायचा, शिष्याचे स्वर योग्य स्थानी लागले आहेत की नाही इ. अनेक गोष्टींसाठी शिक्षकांचे मार्गदर्शन अतिशय आवश्यक असते.

प्राचीन काळापासून मध्यकाळापर्यंत संगीत शिक्षण मोठ्या प्रमाणात गुरू शिष्यपद्धतीद्वारे गुरूमुखातून प्राप्त होत असे. परंतु आज संगीत शिक्षणासाठी अनेक सुखसुविधा उपलब्ध झालेल्या आहेत. त्यामुळे आज संगीत क्षेत्रात व्यवसाय करण्यासाठी शिक्षक म्हणून खालील संधी उपलब्ध आहेत.

अ) शालेय शिक्षक : शाळेत संगीत शिक्षक म्हणून नोकरी करण्यासाठी संगीत विशारद किंवा समकक्ष पदवी आवश्यक असते. आज संपूर्ण देशात अनुदानित व विनाअनुदानित शाळांची संख्या भरपूर वाढली आहे. संगीत शिक्षकाबरोबरच शाळांमध्ये तबला वादकाचीही आवश्यकता असते. त्यामुळे शाळेतील विद्यार्थी संख्येनुसार एका शाळेत एक किंवा दोन व्यक्तींना संगीत शिक्षक व तबला वादक म्हणून व्यवसायाच्या संधी उपलब्ध होतात.

ब) महाविद्यालयीन शिक्षक : आज भारतामध्ये अनेक विद्यापीठांमध्ये इतर ऐच्छिक विषयांप्रमाणेच ऋसंगीत हा ऐच्छिक विषय म्हणून समाविष्ट करण्यात आलेला आहे. इतकेच नव्हे तर फक्त संगीत विषयाचे विद्यापीठही भारतात आहेत. उदा. खैरगडचे इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, भातखंडे संगीत विद्यापीठ इ.

अशा महाविद्यालयांमध्ये कनिष्ठ महाविद्यालय वरिष्ठ महाविद्यालय, पदव्युत्तर वर्ग इ., तसेच विद्यापीठांमध्ये अनेक शिक्षकांना गायन, वादन शिकविण्याची संधी उपलब्ध आहे.



काशं

साथ संगत असेल तर कार्यक्रम विशेष रंगतो. त्यामुळे अशा साथसंगत कलाकारांची मागणीही वाढते. उत्कृष्ट साथसंगत करणारे काही कलाकार उदा. स्व.पं. व्ही. जी. जोग (व्हायलिन), उ. झाकिर हुसैन (तबला), पं. पुरुषोत्तम वालावलकर (हार्मोनियम).

४) वाद्यनिर्मित व विक्रेते : आज भारतीय आणि पाश्चात्य वाद्यांची मागणी सर्वत्र वाढली आहे. त्यामुळे अनेक छोट्या मोठ्या शहरांमध्ये वाद्यविक्रेते आज आहेत. काही ठिकाणी वाद्य तयार करून विकले जातात तर काही ठिकाणी मोठ्या शहरांमधील वाद्यांच्या कंपन्यांकडून वाद्य घेऊन त्यांची विक्री केली जाते. वाद्यनिर्मिती करणार्यांकडे व विक्रेत्यांकडे प्रत्येक वाद्यासाठी कारागीर असतात. त्यांना व्यवसायाची संधी उपलब्ध होते. महाराष्ट्रात मिरज येथे मोठ्या प्रमाणात तानपूरा, सतार या वाद्यांची निर्मिती केली जाते. तेथे अनेक कारागीर कार्यरत आहेत. नागपूर सारख्या ठिकाणी वाद्यविक्रेत्यांना वार्षिक २० ते २५ लाख रूपयांचे उत्पन्न होते.

५) संगीत संस्था : आज सर्वत्र असलेल्या संगीताच्या प्रचार-प्रसारामुळे संगीताच्या लहान मोठ्या संस्था, विद्यालय असतात. या संस्थांमुळे अनेकांना व्यवसाय उपलब्ध होतो. या संस्थांमध्ये शिकविण्यासाठी अनेक शिक्षकांना आणि साथसंगत कलाकारांना व्यवसाय तर मिळतोच पण शिक्षकांचे वेतन व इतर खर्च वगळता उरलेला लाभ विद्यालयांना मिळतो. संगीत संस्थेचे उदा. १) भातखंडे संगीत महाविद्यालय, नागपूर २) कीर्तनकेसरी भाऊसाहेब संगीत विद्यालय (बुटी संगीत विद्यालय) नागपूर

६) सुगम संगीत कलाकार : शास्त्रीय किंवा उपशास्त्रीय संगीताच्या तुलनेत सर्वसामान्य श्रोत्यांच्या कक्षेत सुगम संगीत येत असल्यामुळे ते लोकप्रिय संगीत आहे. सुगम संगीतात शब्द सुरांच्या कोंदणात बसविले जातात. त्याद्वारे भावभिव्यक्ती अधिक उत्कटतेने होते. त्यामुळे सुगम संगीताच्या क्षेत्रात गायक कलाकार म्हणून भरपूर प्रमाणात संधी उपलब्ध होऊ लागली. सुरुवातीच्या काळातील जी. एन. जोशी, गजानन वाटवेपासून तर लता मंगेशकर, आशा भोसले, सुमन कल्याणपूर, माणिक वर्मा, सुधीर फडके, उषा मंगेशकर, अरूण दाते, महेंद्र कपूर, अनुराधा पौडवाल, रवींद्र साठे, सुरेश वाडकर, श्रीधर फडके, पद्मजा फेगाणी आणि आधुनिक काळातील सावनी शेंडे, बेला शेंडे, सुवर्णा माटेगावकर, केतकी माटेगावकर, आर्या आंबेकर इ. कलाकार व्यावसायिक दृष्ट्या

सफल सुगम संगीत कलाकार आहेत. प्रत्येक शहरामध्ये सुगम संगीत कलाकारांसाठी संधी उपलब्ध असतात. उदा. अनेक संस्थांमधून गाण्याच्या कार्यक्रमांमध्ये त्यांना गाण्याची संधी मिळते. यादृष्टीने ऋतुसंस्कार भारतीफया संस्थेचे कार्य उल्लेखनीय आहे. आकाशवाणी, दूरदर्शनचे विविध चॅनल्स यावर सुगम संगीताचे अनेक कार्यक्रम होत असतात, यात अनेक नवोदित कलाकारांना संधी दिली जाते.

७) चित्रपट संगीत : चित्रपट गीतांना स्वर देऊन अनेक गायक-गायिका व्यावसायिक दृष्ट्या सफल झालेले आहेत. अगदी के. एल. सहगल, पंकज मलिक यापासून तर आजच्या नवोदित कलाकारांपर्यंतचे अनेक उदाहरण देता येतील. यामध्ये भारतरत्न लता मंगेशकर, आशा भोसले, मुकेश, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, हेमंत कुमार, तलत महमूद इ. अनेक कलाकारांचे फार मोठे योगदान आहे. आज अनेक नवोदित कलाकारांनाही चित्रपट क्षेत्रात गायनाच्या भरपूर संधी उपलब्ध आहेत.

८) संगीत दिग्दर्शक : कोणतेही गाणे लोकप्रिय होण्यासाठी गीताचे शब्द, त्याला दिलेली चाल आणि संगीत व ते कसं गायल्या गेलं आहे यागोष्टी महत्त्वाच्या ठरतात. यामध्ये संगीत दिग्दर्शकाची भूमिका महत्त्वाची ठरते. आज संगीताच्या क्षेत्राचा भरपूर प्रमाणात विस्तार झाल्यामुळे संगीत दिग्दर्शक म्हणून अनेक संधी उपलब्ध आहेत. सुगम संगीत, चित्रपट संगीत, नाट्यसंगीत, गाण्याचे प्रायव्हेट अल्बम, दूरदर्शन मालिकांचे शीर्षक गीत, वृंदगान, वृंदवादन इ. साठी संगीत दिग्दर्शक म्हणून कामगिरी करता येऊ शकते. विस्तार भयास्तव उदाहरण देणे टाळले आहे.

९) पार्श्ववाद्यसंगीत : गायक गायिकांना साथ करण्याच्या हेतूने किंवा चित्रपटातील भावपूर्ण प्रसंगांना, गीतातील भावनांना पोषक असे वातावरण तयार करण्याच्या हेतूने जे वाद्यसंगीत वाजविले जाते ते ऋतुपार्श्ववाद्यसंगीतफ होय गीत, गझल, भावगीत, चित्रपटगीत, दूरदर्शन मालिका, शीर्षक गीत, जाहिराती इ. साठी पार्श्ववाद्य संगीताचा उपयोग केला जातो, चित्रपट, नाटकात, दृश्य प्रसंग अधिक परिणामकारक होण्यासाठी उपयोग होतो.

पार्श्व संगीताचा उपयोग जसजसा वाढू लागला तसतशी वाद्य वादकांची संख्याही वाढू लागली अनेक वादकांना अर्थार्जनाचे साधन यामुळे मिळाले. वेगवेगळ्या प्रकारचे वाद्य वाजवायला शिकणार्यांची संख्या यामुळे वाढू लागली. अशा प्रकारे पार्श्वसंगीतामुळे अनेक जणांना व्यवसाय मिळू लागला.



काशिके